भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 विक्रमसंवत् २०५९
☎ ०१२६२-७७७२२ दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३० अंक १ २१ नवम्बर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

गोहत्या या राष्ट्रहत्या अथवा हरयाणा हत्या ?

सुखदेव शास्त्री "महोपदेशक", दयानन्दमठ, रोहतक

गतांक से आगे–

इस प्रकार किसी भी राज्य के राजाओ एव किसी भी वैदिक ऋषि-मुनियो के वेदसम्बन्धी प्रवचनो मे किसी भी काल मे यज्ञो मे मास से हवन करना कहीं पर भी नहीं लिखा है। अथर्ववेद के काण्ड ११ सूक्त ७ मे भी यज्ञो की गणना की गई है, उनके नाम इस प्रकार बताए गए हैं–

राजसूय वाजपेयमग्निष्टोमस्तदध्वर ।७।
अकश्विमेधावुच्छिष्टे जीवबर्हिमदिन्तम ।१७।
अग्नाधेयमथो दीक्षा कामप्रश्छन्दसह ।१८।
अग्निहोत्र च श्रद्धा च वषट्कारो व्रतं तप ।९।
चतुर्होतार आप्रिश्चातुर्मास्यानि नीविद ।१९।

इनमे राजसूय, वाजपेय अग्निष्टोम, अश्वमेध, अग्निहोत्र, अग्न्याधान तथा चातुर्मास्य यज्ञो का उल्लेख आया है, जिसमे कहीं पर भी मास यज्ञ का विधान नहीं है, इसी अथर्ववेद के गोपथ ब्राह्मण १-५-७ मे **'अथातो यज्ञक्रमा'** नाम से इन यज्ञो का बडा वर्णन आया है–अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास मातुर्मस्यि, आग्रहायण, अग्निष्टोम, पुत्रेष्टियज्ञ, पचमहायज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ आदि, राजसूय-राजगद्दी पर बैठते समय का यज्ञ, अश्वमेधयज्ञ–सब दिशो को जीतने के लिए किया जाता था, क्योकि शतपथब्राह्मण मे कहा है–**'राष्टं वै अश्वमेध'** गोमेध-धरती को उर्वरा बनाना, इन्द्रियविजय आदि वर्षेष्टियज्ञ, इन यज्ञो में कहीं पर भी कभी भी गोमास व चर्बी नहीं डाली जाती थी। इन यज्ञो की सामग्री मे घी, शक्कर, किशमिश, मुनक्का आदि गिलोय, गूगल आदि अनेक औषधिया वैज्ञानिक दृष्टि से यज्ञो की विधिविधान के अनुसार होम के अन्दर महर्षि दयानन्द की सस्कारविधि के अनुसार चार प्रकार की सामग्री होती है–(१) सुगन्धित–कस्तूरी, केशर, तगर, श्वेतचन्दन, इलायची, जायफल, जावित्री आदि। (२) पुष्टिकारक सामग्री–घी, दूध, फल, कन्द, अन्न, चावल, गेहू, उडद आदि। (३) सामग्री–मिष्ट-शक्कर, शहद, छुआरे, दाख आदि। चौथी सामग्री–सोमलता, गिलोय आदि। इन सामग्रियो मे वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शहद्, हेमन्त, शिशिर आदि छ ऋतुओ के अनुसार भी सामग्री होती है। इन यज्ञो मे यज्ञ के लिए समिधाए भी निर्धारित की गई हैं, जैसे–पीपल, बड, देवदारु, गूलर, आम, ढाक, चन्दन आदि यज्ञो के लिए विहित की गई है। यज्ञ के लिए घी भी गाय का ही श्रेष्ठतम लाभकारी माना गया है। तपेदिक मे भी गाय के घी की आहुतिया देना, वृष्टियज्ञ के लिए गोघृत ही सर्वोत्तम माना गया है। उसके प्राप्त न होने पर भैंस का ही लिया जाता है। यज्ञो मे गाय का दूध भी प्रयोग किया जाता है। अत एव यज्ञ के समय गाय यज्ञशाला के समीप बाधी जाती थी। ताजा-ताजा दूध की यज्ञ मे आहुति दी जाती थी।

इन बृहद्यज्ञों मे कहीं पर भी कभी भी गोमास, गाय की चर्बी, प्रयोग मे कभी भी आर्यराज्य मे भूलकर भी प्रयोग नहीं किया गया।

ऋग्वेद का ब्राह्मणग्रन्थ ऐतरेय है–उसमे यज्ञो का लाभ लिखते हुए १-१ मे लिखा है–**'यज्ञोऽपि तस्य जनतायै कल्याणाय कल्पते यत्र एव विद्वान् होता भवति'**–"यज्ञ भी जनता के कल्याण के लिए ही किया जाता है। जिसमे विद्वान् 'होता' है। इस यज्ञ का अर्थवाद यह है कि यज्ञ अनेक अनर्थो को जगत् से हटाकर आनन्द को बढाता है। इसलिए वेद ने कहा है–**'अयज्ञियो हतवर्चा भवति'** यज्ञ न करनेवाला अपने तेज को नष्ट करता है। इसीलिए तैत्तिरीय ब्राह्मण ३-२-१-४ मे कहा है–**'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म'** यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है। यही वाक्य शतपथब्राह्मण मे भी आया है। ऐतरेय, शतपथ, साम गोपथ सभी इस यज्ञ से सहमत हैं। अत एव यह यज्ञकर्म परमधर्म माना गया है।

यजुर्वेद मे एक प्रश्न किया गया है–**'पृच्छामि त्वा विश्वस्य भुवनस्य नाभिम्'** इस विश्व को बान्धने वाला केन्द्र क्या है ? इसी मन्त्र मे उत्तर दिया गया–**'अय यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभि'** यह यज्ञ ही विश्व के सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का नाभि केन्द्र है, यज्ञ के द्वारा ही सारे विश्व को प्रभावित किया जा सकता है। सारे वातावरण को शुद्ध एव स्वस्थ एव सकल प्राणि व अप्राणि-जगत् का कल्याण किया जा सकता है।

हम देखते हैं कि परमात्मा द्वारा तो सर्वप्रकार से ससार मे यज्ञ का विस्तार कर रखा है। वह तो इस सासारिक यज्ञ का 'ब्रह्मा' है। देखो ! उसने कैसे यज्ञ तैयार किया है–यजुर्वेद ३१.१४ का मन्त्र देखिये–

ओ३म्– यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ अतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्य ग्रीष्म इध्म शरद् हवि।।

विद्वान् लोग जिस पुरुष परमेश्वर के साथ उसकी आज्ञानुसार मिलकर यज्ञीय हवि से यज्ञ करते है, उस यज्ञ मे परमात्मा द्वारा प्रदत्त सामग्री वसन्तऋतु घृत है, ग्रीष्मऋतु समिधा है तथा शरद् ऋतु हवि है। इस प्रकार सारे विश्व मे सूर्य, चन्द्र, वायु आदि देव ऋतुओ का निर्माण करके सृष्टिनिर्माता परमात्मा के 'ब्रह्मा' के रूप मे नित्य यज्ञो को सृष्टिपर्यन्त विश्व कल्याण के लिए यज्ञो का सचालन होता रहेगा। अत एव परमात्मा के उस अपने द्वारा रचित यज्ञ मे बैठने के लिए आज्ञा देते हुए वेद मे कहा है–**'देवा यजमानश्च सीदत'** विद्वानो, आप लोग बैठकर यज्ञ करो।

यज्ञो के महत्त्व को दर्शाते हुए निरुक्तकार ने यज्ञ शब्द के लिए अनेक शब्दो को पर्याय रूप मे माना है। जैसे–यज्ञ, वेन, अध्वर, मेघ विदथ नार्य सवनम्, सत्रम्, होत्रा, इष्टि, देवताता, मख, विष्णु, इन्द्र, प्रजापति धर्म महर्षि पाणिनि भी यज्ञ का अर्थ लिखते हुए कहते हैं–**'यज देवपूजासगतिकरण-दानेषु'** देवपूजा, सगति, दान यज्ञ है।

यज्ञो मे गाय के मास को डालने की तो बात ही भूल जाइये। यहा तो वेदो मे सभी प्रकार के पशुओ की हत्या का निषेध किया है। जैसे–**'अजा मा हिसी-अवि मा हिसी-गा मा हिसी'** यजु० १३-४३। **'एकशफ मा हिसे'** यजु० १३-४८। बकरी को, भेड को मत मार, गौ को मत मार, एक खुरवाले पशु को मत मार। (क्रमश)

वैदिक-स्वाध्याय

तुम्हारी शरण में

उरुं नो लोकं अनुनेषि विद्वान्, स्वर्वत् ज्योतिरभयं स्वस्ति।
ऋष्वा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू, उपस्थेयाम शरणा बृहन्ता।।

ऋ० ६.४७.८।। अथर्व० १९.१५.४।।

शब्दार्थ–(इन्द्र) हे इन्द्र ! (त्वं विद्वान्) तू सर्वज्ञ (नः उरुं लोकं अनुनेषि) हमे उस महान् विस्तृत लोक में पहुचा देता है जहां (स्वर्वत्) आनन्द (ज्योतिः) प्रकाश (अभय) अभय और (स्वस्ति) कल्याण ही है। हे परमेश्वर ! (ति स्थविरस्य बाहू) तुझ महान् देव के बाहू (ऋष्वा) सब विघ्न बाधाओं को नाश करने वाले हैं (बृहन्ता शरणा) हम उस तुम्हारी (बाहुओं की) अपार शरण मे (उप्स्थेयाम) बैठ जाये।

विनय–हे परम ईश्वर ! हे सब कुछ जानने वाले ! तुम हमे ज्ञान देकर कभी अपने विस्तीर्ण, खुले, अपार लोक मे पहुचा देते हो–उस लोक मे जहा कि आनन्द ही आनन्द है और ऐसा आनन्द है कि उसकी प्रतिक्रिया मे दु.ख, सताप का जन्म नहीं हो सकता, उस ज्योतिर्मय लोक में, जहा प्रकाश का साम्राज्य है और जहां विस्तीर्ण शुभ्र प्रकाश-सागर मे अज्ञान व अंधकार की छाया तक नहीं पड सकती, उस लोक मे जहा परिपूर्ण अखण्ड अभयता है, इन भय के भूतो का जिनसे कि हम यहा हरदम सताये रहते हैं, जहा नामोनिशान नहीं है और उस लोक मे जहा कि कल्याण ही कल्याण बरसता है, अकल्याण की जहा कल्पना तक नहीं हो सकती है। हे इन्द्र ! तुम ऐसे लोक के वासी हो, हम मनुष्यो को-जीवो को-वहा ले जा सकते हो ! हे मेरे स्वामी ! अपनी बाहुओं को फैला दो और अपनी महान् शरण मे हमे ले लो। हे महान् देव ! तुम्हारे ये बाहू सब पाप ताप का ध्वस करने वाले हैं, क्लेश कष्ट का नाश करने वाले हैं, विघ्न बाधाओ को हटाने वाले हैं। इनकी महान् शरण का आश्रय पाये हुए को दु.ख, अज्ञान, भय व अकल्याण का स्पर्श भी कैसे हो सकता है ? अपने बाहू फैलाओ, करुणामय ! हमे उठाने के लिये अपने ये वात्सल्यमय बाहू बढाओ जिससे कि हम तुम्हारी परम शरण मे आ बैठे, वह गोद जिस मे बैठकर कोई क्लेश नहीं, भ्रम नही, भय नहीं, आमय नहीं। **(साभार–वैदिक विनय ३ ज्येष्ठ)**

व्यसनों की विभीषिका

आधुनिक युग के सभी विनाशकारी उपकरण करोडो प्राणियो, मानवो को नष्ट कर सकते है और करते रहे हैं किन्तु शेष बचे लोगो के माध्यम से पुन सृष्टि रची जाती रही है और मानवता का चक्र चलता रहा है।

अब तो भारत की कुछ सरकारे ऐसे विनाशकारी व्यसनो का प्रचलन करने लगी हैं जिनमे फसने के बाद तीसरी नहीं तो चौथी पीढी कैसिनो मे, लाटरियो मे, जो कुछ आपने उनके भविष्य के लिए बनाया है, सभी को दाव पर लगा देगे या रहडियो पर बिक्ने वाली शराब को पी-पीकर मानवता का सर्वनाश निश्चित रूप से हो जाएगा। यदि आप जिम्मेदार उत्तराधिकारी पीढी चाहते हैं और मानवता के भविष्य को उज्ज्वल देखना है तो कुछ रिवैन्यू बटोरने मात्र के लिए उठाए जा रहे ऐसे विध्वसक व्यसनो को तत्काल बद कराना होगा। ऐसा न हो कि हमारी मा-बहिनो को भी महाभारत काल की तरह दाव पर लगाया जाने लगे।

सावधान ! रामराज्य लाते-लाते दुर्योधन राज्य स्थापित होता जा रहा है। अत विदुर बनकर इन्हे सन्मार्ग दिखाइये अन्यथा न हम रहेगे और न ही मानवता।

आशा है भारत का प्रत्येक नागरिक इस विभीषिका की गम्भीरता को समझते हुए इस प्रकार के व्यसनानुमुख कार्यक्रमो को रोकने मे अपनी-अपनी सक्रिय रचनात्मक भूमिका निभाएगा। व्यथित हृदय

–**डॉ० सत्यदेव,** प्रधान आर्यसमाज न० ३, ३A/१२४ N.I.T., फरीदाबाद।

जिला स्तरीय उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रतियोगिता

दिनाक २३ नवम्बर २००२ को सैनी व०मा० विद्यालय रोहतक में आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान मे कक्षा पांचवीं, आठवीं, दसवीं की शैक्षणिक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है जिसमें कक्षा पाचवीं में गणित तथा हिन्दी व्याकरण और कक्षा आठवीं, दसवीं के लिए अंग्रेजी ग्रामर व गणित विषय होंगे। अधिक जानकारी के लिए ९५१६८१-२५४१८५ दूरभाष पर सम्पर्क कर सकते हैं। जिलाध्यक्ष–**कृष्ण आर्य,** जीन्द

योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ़ में ५६वां वैदिक सत्संग

दिनांक २७-१०-२००२ को योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ़ में हर माह की भाति मासिक बृहद्यज्ञ एव वैदिक सत्संग स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

यज्ञ का कार्य महन्त आनन्दस्वरूपदास सन्त कबीरमठ सोहला ने तथा मास्टर वेदप्रकाश आर्य ने करवाया। यजमान का स्थान स्व० सेठ श्री श्योनारायण की धर्मपत्नी राममूर्ति जी ने ग्रहण किया।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, प्रधान यतिमंडल दक्षिणी हरयाणा ने अपने प्रवचनों मे बताया कि समाज मे बुराइयों ने घर कर लिया है और ये बुराइया हम सबकी कमजोरियो के कारण ही उत्पन्न हुई हैं, क्योंकि हमने वेदमार्ग को भुला दिया है, मातायें जिनको शास्त्र मे '**माता निर्माता भवति**' कहा गया है, उन्होने दहेजप्रथा के कारण लडकियों को गर्भ मे ही गिरवाने अर्थात् भ्रूणहत्या का कार्य अपनाकर जघन्य अपराध का रास्ता अपना लिया, इसलिए मैं सभी माता-बहनो का आह्वान करता हू कि वो इन कार्यो से दूर रहे तथा अन्य महिलाओ को भी इस अपराध से रोके।

आर्यसमाज की बात महान्, लडका-लड़की एक समान। की बात को भुला दिया। दूसरी बुराई समाज मे नशे अर्थात् शराब से उत्पन्न हुई है, जिससे हमारे नवयुवकों मे भ्रष्टाचार, दुष्चरित्र, दुर्व्यवहार आदि बातें उत्पन्न हो गई हैं। इन बुराइयो से दूर करने के लिए, योगस्थली आश्रम ने आयुर्वेद के ग्रन्थों का गहन स्वाध्याय करके शराब छुडाने के लिए एक विचित्र औषधि का निर्माण किया है, जिसके सेवन करने से नशे से मुक्ति मिल जाती है। सभा की समाप्ति पर सभी को शुद्ध घी से निर्मित प्रसाद वितरण किया गया।

–**मा० बेगराज आर्य, सेवानिवृत्त**

शोक समाचार

(१) मेरे चाचा अमरसिह त्यागी जी सुलतानपुर (नौएडा) जिला गौतम बुद्धनगर (उत्तरप्रदेश) निवासी का पिच्चानवे वर्ष की आयु मे २०-१०-२००२ को स्वर्गवास हो गया। वे प्रभु कृपा से कभी बीमार नहीं हुए। उनके चरित्र पर कोई धब्बा नहीं लगा। वे परोपकार के कार्य में अपने आराम को भी ठोकर मार देते थे। झूठ-कपट, छल, द्वेष, दम्भ से उनका हृदय दूर था। दिन के लगभग तीन बजे होगे मरने से दस मिनट पहले और रोज की भाति चलना-फिरना, खाना-पीना, लोगो से बातें करना, सब प्रकार से ठीक थे। इसी बीच उन्होने थोडी-सी सर्दी महसूस की। थोडी देर मे बिना किसी को कष्ट दिए परलोक सिधार गये। मेरे लिए पश्चात्ताप का विषय रहा कि मैं उनके अन्तिम समय दर्शन तथा दाह-सस्कार में शामिल न हो सका कारण यह था कि सभा के कार्यक्रम वेगा जिला सोनीपत के उत्सव पर वेदप्रचारार्थ अपनी भजन मण्डली सहित गया हुआ था। २३ तारीख को गाव जाने पर ज्ञात हुआ। मेरे बाल्यकाल से अब तक जो मुझे उनका प्यार मिलता रहा वह सारा मेरी आखो मे उमड आया। मैं उनकी आत्मिक शान्ति के लिए अपने परिजनों से प्रात साय दैनिक यज्ञ के उपरान्त एक सौ एक गायत्री महामत्र की आहुतिया दिलाता रहा। इसमे हमारे परिवार वाले भी सम्मिलित रहे। ९-११-२००२ को परिवार की ओर से बडे भाई सूरजभान त्यागी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक को ५०१/- रु० की राशि वेदप्रचारार्थ दान दी।

–**स्वामी देवानन्द,** सभा भजनोपदेशक, रोहतक

(२) आर्यसमाज जाण्डवाला बांगड जिला सिरसा के उपप्रधान श्री हरिदेव आर्य का लम्बी बिमारी के बाद १-११-२००२ को निधन हो गया। श्री हरिदेव आर्य ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, दानवीर व स्वाध्यायशील सच्चे आर्य थे। वे अपने पीछे ४ बेटे तथा ३ बेटियां छोडकर गए हैं। उनकी आयु ७२ साल की थी। वेदप्रचार मण्डल हिसार के प्रधान श्री बदलूराम आर्य के कार्य में वे विशेष सहयोग देते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, प्रबन्ध समिति दयानन्दमठ रोहतक तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरयाणा की ओर से शोक प्रकट किया जाता है तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की जाती है।

–**सन्तराम आर्य,** दयानन्दमठ, रोहतक

महर्षि दयानन्द का मन्तव्य

वेदों की उत्पत्ति

❑ डा. सुदर्शनदेव आचार्य, अध्यक्ष संस्कृत सेवा संस्थान, हरिसिंह कालोनी, रोहतक

(गतांक से आगे)

ईश्वर द्वारा वेदार्थ ज्ञान

जिज्ञासु-ईश्वर ने वेद संस्कृतभाषा में प्रकाशित किये। वे अग्नि आदि ऋषि संस्कृतभाषा को नहीं जानते थे फिर उन्होंने वेदों का अर्थ कैसे जाना ?

सिद्धान्ती-(१) उन अग्नि आदि ऋषियों को वेदों का अर्थ ईश्वर ने जनाया।

(२) धर्मात्मा, योगी, महर्षि लोग जब-जब जिस-जिस मन्त्र के अर्थ के ज्ञान की इच्छा से ध्यानावस्थित होकर ईश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुये तब-तब ईश्वर ने अभीष्ट मन्त्रों के अर्थ उन्हें जनाये।

(३) जब बहुत ऋषियों के आत्माओं में वेदार्थ का प्रकाश हुआ। तब ऋषि-मुनियो ने उन अर्थों का तथा ऋषि-मुनियों के इतिहासपूर्वक ग्रन्थ बनाये। उन ग्रन्थो का ब्रह्म अर्थात् वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ होने से 'ब्राह्मण' नाम हुआ।

(४) **'ऋषयो मन्त्रदृष्टयो मन्त्रान् सम्प्रादु.'** यह निरुक्त शास्त्र का वचन है। जिस-जिस मन्त्र का दर्शन जिस-जिस ऋषि को हुआ और पहले उस मन्त्र का अर्थ किसी ने प्रकाशित नहीं किया था, किया और पढाया भी इसलिये आज तक उस मन्त्र के साथ उस-उस ऋषि का नाम स्मरण के लिये लिखा जाता है।

(५) जो कोई ऋषियों को मन्त्रकर्त्ता बतलावे उसको मिथ्यावादी समझें क्योंकि ऋषि तो मन्त्रों के अर्थ-प्रकाशक हैं।

वेदोत्पत्ति में ईश्वर का प्रयोजन

जिज्ञासु-वेदों के उत्पन्न करने मे ईश्वर का क्या प्रयोजन है ?

सिद्धान्ती-ईश्वर के द्वारा वेदों की उत्पत्ति में निम्नलिखित हेतु हैं-

(१) ईश्वर परोपकारी है। विद्या जो वह स्वार्थ और परोपकार के लिये होती है क्योंकि विद्या का यही गुण है कि स्वार्थ और परार्थ दोनों को सिद्ध करना। यदि ईश्वर अपनी विद्या का हम लोगों के लिए उपदेश न करे तो विद्या से परोपकार करना जो उसका गुण है वह न रहे। इससे ईश्वर ने हम लोगों के लिये वेदविद्या का उपदेश करके अपने विद्या गुण की सफलता सिद्ध की है।

(२) ईश्वर हम लोगों का माता-पिता के समान है। हम लोग जो उसकी प्रजा (सन्तान) हैं वह उन पर नित्य कृपादृष्टि रखता है। जैसे अपने सन्तानों पर उनके माता-पिता सदैव करुणा को धारण करते हैं कि सब प्रकार से हमारे पुत्र सुख पावें, वैसे ही ईश्वर भी सब मनुष्य आदि सृष्टि पर कृपादृष्टि सदैव रखता है। इससे उसने हम लोगों के लिये वेदों का उपदेश किया है।

(३) यदि ईश्वर अपनी वेदविद्या का उपदेश मनुष्या के लिये नहीं करता तो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि किसी को यथावत् प्राप्त नहीं होती। उसके बिना परमानन्द भी किसी को नहीं होता।

(४) जैसे परमकृपालु ईश्वर ने अपनी प्रजा के सुख के लिये कन्द, मूल, फल और घास आदि छोटे-छोटे भी पदार्थ रचे हैं वही ईश्वर सब सुखों के प्रकाश करनेवाली और सब सत्य विद्याओं से युक्त वेदविद्या का उपदेश भी अपनी प्रजा के सुख के लिये क्यो नहीं करता ?

(५) जितने ब्रह्माण्ड मे उत्तम पदार्थ हैं उनकी प्राप्ति से जितना सुख होता है वह सुख विद्याप्राप्ति से होनेवाले सुख से हजारवें अंश के भी तुल्य नहीं हो सकता। ऐसा सर्वोत्तम विद्या पदार्थ जो वेद है, उसका उपदेश ईश्वर क्यो नहीं करता ?

इससे निश्चय करके जानना कि वेद ईश्वर के ही बनाये हुये हैं।

वेदों की नित्यता

जिज्ञासु-वेद नित्य है वा अनित्य ?

सिद्धान्ती-(१) वेद नित्य है क्योंकि ईश्वर के नित्य होने से उसके ज्ञान आदि गुण भी नित्य हैं। जो नित्य पदार्थ हैं उनके गुण, कर्म और स्वभाव भी नित्य होते हैं और अनित्य द्रव्य के अनित्य होते हैं।

(२) वेद का पुस्तक नित्य नहीं है क्योंकि वह तो पन्ने और स्याही का बना है, वह नित्य कैसे हो सकता है किन्तु जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध हैं, वे नित्य हैं।

वेदों की शाखाएं

जिज्ञासु-वेदों की कितनी शाखाए हैं ?

सिद्धान्ती-(१) वेदों की ११२७ एक हजार एक सौ सत्ताईस शाखाएं हैं। जैसाकि महर्षि पतञ्जलि लिखते हैं-**'एकशतमध्वर्युशाखा, सहस्रवर्त्मा सामवेदः, एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्, नवधाथर्वणो वेदः,** (महाभाष्य १।१।१)। अर्थात्-यजुर्वेद की १०१, सामवेद की १०००, ऋग्वेद की २१ और अथर्ववेद की ९ शाखायें हैं। १०१+१०००+२१+०९=११३१। इनमे चार मूल संहितायें भी शामिल हैं। ११३१-४=११२७।

(२) शाखा शब्द का अर्थ व्याख्यान है। कई विद्वान् वेद के अवयव रूप भागों को भी शाखा कहते हैं। इस विषय में विचार करना चाहिये कि जितने शाखा ग्रन्थ हैं वे आश्वलायन आदि ऋषियों के नाम से प्रसिद्ध हैं और मन्त्र संहिता ईश्वर के नाम से प्रसिद्ध हैं। जैसे चारों वेदों को ईश्वरकृत, मानते है वैसे आश्वलायनी आदि शाखाओं को उस-उस ऋषिकृत मानते हैं।

(३) सब शाखाओ मे मन्त्रो की प्रतीक धरकर व्याख्या करते हैं। जैसे तैत्तिरीय शाखा मे **'इषे त्वोर्जे त्वा'** (यजु० ११) इत्यादि प्रतीक धर कर व्याख्यान किये हैं और वेद संहिताओ में किसी की प्रतीक नहीं धरी है।

इसलिये ईश्वरकृत चारो वेद मूल वृक्ष हैं और आश्वलायन आदि सब शाखा ऋषि-मुनिकृत है, ईश्वरकृत नही।

वेद और ब्राह्मणग्रन्थ

जिज्ञासु-ऋक्, यजु, साम, अथर्व इन चार मन्त्र संहिताओं का नाम वेद है तो **'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्'** इत्यादि कात्यायन आदि मुनिकृत प्रतिज्ञा सूत्र आदि का क्या अर्थ करोगे ?

सिद्धान्ती-ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हैं इसमे निम्नलिखित हेतु है-

(१) देखो ! संहिता-पुस्तक के आरम्भ मे और अध्याय की समाप्ति मे 'वेद' शब्द सनातन से लिखा आता है और ब्राह्मण पुस्तक के आरम्भ मे वा अध्याय की समाप्ति मे कहीं नहीं लिखा।

(२) यास्कमुनिकृत निरुक्त शास्त्र में भी **'इत्यपि निगमो भवति'** कहकर वेद मन्त्र और 'इति ब्राह्मण' कहकर ब्राह्मण ग्रन्थ का प्रमाण दिया जाता है। इससे वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ की भिन्नता स्पष्ट है।

(३) पाणिनि मुनि भी लिखते हैं- **'छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि'** इस सूत्र में छन्द और ब्राह्मण ग्रन्थो का पृथक्-पृथक् निर्देश किया है। यदि वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ एक हैं तो उनके पृथक्-पृथक् लेख की क्या आवश्यकता है।

(४) **'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्'** यह कात्यायन मुनि का वचन नहीं हो सकता (स०प्र० ६)

(५) कात्यायन के नाम से जो दोनो की वेद संज्ञा होने में उक्त वचन है सहचार उपाधि लक्षण से किया हो तो भी नहीं बन सकता क्योंकि जैसे किसी ने किसी से कहा-उस लकडी को भोजन करादो और दूसरे ने इतना ही कहने से तुरन्त जान लिया कि लकडी जड पदार्थ होने से भोजन नहीं कर सकता किन्तु जिस पुरुष के हाथ मे लकडी है उसको भोजन कराना चाहिये। इस प्रकार से कहा हो तो भी मानने के योग्य नहीं है, क्योंकि इसमे अन्य ऋषियो की एक भी साक्षी नही है (ऋ०भा०भू० वेदसंज्ञाविचार)।

(६) यदि ब्राह्मण ग्रन्थो को वेद मानें तो वेद सनातन कभी नहीं हो सकते क्योंकि ब्राह्मण ग्रन्थ नामक पुस्तको मे ऋषि, महर्षि और राजा आदि के इतिहास लिखे हैं और इतिहास जिसका हो वह उसके जन्म के पश्चात् लिखा जाता है। वह ग्रन्थ भी उसके जन्म के पश्चात् होता है।

(७) वेदो मे किसी का इतिहास नहीं किन्तु जिस-जिस शब्द से विद्या का विशेष बोध होवे उस-उस शब्द का प्रयोग किया है। किसी मनुष्य की संज्ञा वा विशेष कथा का प्रसग वेदो मे नहीं है।

इसलिये वेद और ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थ भिन्न-भिन्न ग्रन्थ है, एक नहीं। (क्रमश)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१ आर्यसमाज मन्दिर जनकपुरी बी ब्लाक, नई दिल्ली — २०-२४ नवम्बर ०२
२. आर्यसमाज बिडला लाइन्स् कमलानगर दिल्ली — २२-२४ नवम्बर ०२
३ आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल कैंप, जिला फरीदाबाद — २२-२४ नवम्बर ०२
४. आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका जिला गुड़गाव — २३-२४ नवम्बर ०२
५ आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड जीन्द — २७ नव० से १ दिस० ०२
६ आर्यसमाज अशोक विहार फेज-१, दिल्ली — २५ नव० से १ दिस० ०२
७ महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, दयानन्द नगर जरोडा जिला हिंगोली (महाराष्ट्र) — २७ नव० से १ दिस० ०२
८. आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत — २९ नव० से २९ दिस० ०२
९ आर्यसमाज बसई जिला गुडगांव — ६ से ८ दिसम्बर ०२
१० आर्यसमाज गोहानामण्डी जिला सोनीपत — १३ से १५ दिसम्बर ०२

—रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

विद्यार्थी जीवन

—कल्याणी कुण्डु, एम ए, बी एड
प्राचार्या, कन्या गुरुकुल बचगाव गामडी (कुरुक्षेत्र)

विद्यार्थी का सामान्य अर्थ है-विद्या चाहने वाला अथवा इसका अध्ययन करने वाला। यू तो विद्याध्ययन आजीवन चलने वाली एक प्रक्रिया है और मानव आजीवन एक विद्यार्थी ही रहता है। वस्तुत विद्यार्थी जीवन वह समयावधि है जब वह घरेलू बातों व रिश्तो को भुलाकर विषय बोध हेतु एक नये जीवन मे पदार्पण करता है। अन्य विषयो के समान इस विषय की भी तात्त्विक प्रासगिकता वैदिक काल मे ही देखी जा सकती है। उस समय बालक स्वगृह को त्याग विद्याध्ययनार्थ गुरुकुल मे प्रवेश करता था और विद्या समाप्ति तक उसे ही अपना घर समझ वहा रहता था। उसका एक नया जीवन प्रारम्भ होता था और पिछले जीवन की मृत्यु हो जाती थी। अत उपनिषत्कार ने गुरु की एक सज्ञा 'यम' भी दी है। उपनिषद् का 'यम और नचिकेता' संवाद इसी तथ्य का द्योतक है कि नाचिकेता ईश्वर-जीव-प्रकृति का रहस्य जानने के लिये ही 'यम' अर्थात् मृत्युरूपी गुरु के पास गया। यज्ञ पर आधारित दो रिश्तो मे से एक रिश्ता 'गुरु-शिष्य' का ही है। शिष्य के सब रिश्ते गुरु में ही निहित थे। उस वातावरण मे सामाजिक राग-द्वेष-व्यसन-प्रमाद विद्यार्थी को छू न पाते थे तथा वह निर्लेप रहकर आलस्य व बुराई से दूर रहता था।

पाश्चात्य परम्पराओं के भौंडे अन्धानुकरण ने आज विद्यार्थी जीवन को उक्त परिदृश्य से खो दिया है जिसका दुष्परिणाम सामने है, लाखों विद्यार्थी लम्पट, व्यसनी, व्यभिचारी, उच्छृखल बन जाते हैं। आधुनिक शिक्षा ने नि सदेह लाखो क्लर्क, डाक्टर, इजीनियर, तकनिशियन आदि तो अवश्य पैदा किये पर मनुष्य को ऋग्वेदोक्त 'मनुर्भव' वाली शिक्षा कदाचित् नहीं दी। महान् नीतिकार चाणक्य ने विद्यार्थी के जो ५ लक्षण बताये हैं, ससार के किसी देश के साहित्य मे ऐसी बात नहीं मिलती। उनके अनुसार–

काकचेष्टा बक-ध्यान श्वान-निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पञ्च-लक्षणम्।।

इनके अतिरिक्त विद्यार्थी निम्न बातो पर भी ध्यान देवे।

किसी भी कार्य की सिद्धि के लिये श्रद्धा का होना परमावश्यक है। अत जरूरी है कि विद्यार्थी उपयुक्त परिवेश मे पले-पढे तथा उसे ऐसी शिक्षा-दीक्षा मिले कि वह विद्या को ही जीवन का सच्चा अलकार माने। आज भी अनेक अभिभावक विद्या की यह कहकर निन्दा करते हैं कि पढने से क्या लाभ, बच्चो को नौकरी तो मिलती नहीं। वे विद्या जैसी अमूल्य निधि का सम्बन्ध रोजगार से जोडते हैं। समझ नहीं आता विद्या से युक्त व्यक्ति बेकार कैसे है ? इसमे दोष आधुनिक शिक्षाप्रणाली का भी है, क्योकि इसमे जीवन के नैतिक मूल्यों का सर्वथा अभाव है। आज लगभग हर माता-पिता बच्चे को इसलिये पढा रहा है कि यह सरकारी नौकर बने। उनको यह पता ही नहीं कि मानव जन्म का उद्देश्य पुरुषार्थ-चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) की प्राप्ति करना है, जिसका आधुनिक शिक्षा मे कहीं नामों-निशां नहीं है।

विद्यार्थी मे दूसरा गुण 'तप' का होना चाहिए। तप उस मानसिक व शारीरिक श्रम का नाम है जिसे करने में आनन्द का अनुभव हो। अरुचिपूर्ण किये गये परिश्रम से तो अल्पावधि में ही मन ऊब जाता है। अत तप की सिद्धि भी श्रद्धा से सम्भव है। विद्याप्राप्ति हेतु श्रद्धा से किये जाने वाले तप मे जो आनन्द आने लगता है, उसके आगे अन्य सुख गौण हो जाते हैं। विद्याप्राप्ति की एक ऐसी आलौकिक बुभुक्षा जाग जाती है जो सहज ही तृप्त नहीं होती। जितनी भूख बढती जाती है, उतना ही अधिक आनन्द आने लगता है। आत्मिक शान्ति मिलने लगती है।

विद्यार्थी में तीसरा गुण ब्रह्मचर्यव्रत के पालन का होवे। ब्रह्मचर्य की महत्ता विद्यार्थी जीवन से है तथा विद्यार्थी जीवन की सिद्धि ब्रह्मचर्य से है। विद्यार्थी जीवन का आरम्भ ही ब्रह्मचर्य से होता है तथा यही आधार बनता है शेष जीवन का। ब्रह्मचर्य ही तेज-ओज-बल-बुद्धि का प्रदाता है जिसके बल पर विद्यार्थी विद्या के क्षेत्र में बहुआयामी ऊंचाइयो को छूता है। ब्रह्मचर्य का एक अर्थ ब्रह्म के अनुकूल आचरण करना भी है जिससे विद्यार्थी अपने मन को पवित्र कर इन्द्रियों को वश में रखकर विद्या की सिद्धि प्राप्त करता है, जो परिणाम में सुखकर होती है। ब्रह्म के स्वरूप का उल्लेख वेद-उपनिषद्-षड्दर्शनो में मिलता है जिसे पढकर अज्ञानतारूपी तिमिर नष्ट हो जाता है और विद्यार्थी अन्धविश्वासो व आडम्बरों से सर्वथा दूर रहकर परम सत्ता के सन्निकट रहने लगता है। इससे ज्ञान का प्रवाह व स्रोत कभी अवरुद्ध नहीं होता। ऐसी शिक्षा केवल गुरुकुल मे रहकर आर्ष शिक्षापद्धति के अनुसार पठन-पाठन से सम्भव है, अन्य कोई उपाय है ही नहीं। दुनिया को यह मार्ग दिखलाने का श्रेय कलियुग के एकमात्र महर्षि देव दयानन्द को जाता है। इत्योम्।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

आपके प्रिय साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी का वीर संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द के ७६वें बलिदान दिवस पर एक विशेषाक का प्रकाशन २१ दिसम्बर २००२ को किया जारहा है। पत्र के लेखक महानुभाव निम्नलिखित विषय में अपने लेख/कविता आदि दिनाक १० दिसम्बर ०२ तक कार्यालय मे भेज देवें। लेख सक्षिप्त, सारगर्भित और कागज के एक ओर सुलेख में लिखे होने चाहिये। (१) महर्षि के शिष्य-स्वा० श्रद्धानन्द। (२) गुरुकुल शिक्षाप्रणाली। (३) गुरुकुलो की स्थापना। (४) दलितों का उद्धार। (५) स्वामी श्रद्धानन्द का आदर्श व्यक्तित्व। (६) एक वीर संन्यासी। (७) प्रतिनिधि सभाओ का गठन। (८) स्वामी श्रद्धानन्द के आदर्श शिष्य। (९) हरयाणा और स्वामी श्रद्धानन्द।

—सम्पादक

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम **आत्मकल्याण का मार्ग।**
लेखक **स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती,**
आर्ष गुरुकुल कालवा, पिल्लूखेडा, जींद
मूल्य : १० रुपये।

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती छोटी-छोटी पुस्तके छपवाकर वेदप्रचार करते हैं। इनकी ३० पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में १ मानव जीवन का उद्देश्य, २-शान्ति का मार्ग, ३-दुर्गुणो का परित्याग, ४-योग के आठ अग, ५-धर्म और अधर्म का ज्ञान, ६-सुख-दुःख और जन्म-मरण चक्र, ७-ईश्वर प्राप्ति के साधन आदि ११ विषयो पर विचार किया गया है। अन्त मे ईश्वरभक्ति के २५ भजन भी दिए हैं।

स्वाध्यायशील सज्जनों के लिए पुस्तक उत्तम है। —**वेदव्रत शास्त्री**

आर्य वेदप्रचार मण्डल जिला यमुनानगर का चुनाव

प्रधान-श्री बीरसिंह आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान-श्रीमती कुसुम आर्या, उपप्रधान-श्री भानुराम आर्य, श्री रामशरणदास, श्री सत्यकाम आर्य, श्री सोमनाथ आर्य, मत्री-श्री महिन्द्रपाल आर्य, उपमत्री-श्री केवलकुमार कोहली, सयुक्तमत्री- डा० भगतराम आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री बाबूराम आर्य, सहकोषाध्यक्ष-श्री रामसरूप शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष श्री राजवीर आर्य, प्रचारमत्री-सिहराम आर्य, उपप्रचार मत्री-श्री गेंदाराम आर्य, वेदप्रचार अधिष्ठाता-श्री राजकिशोर आचार्य।

अमृत प्या के पी लिया जहर दयानन्द ने

टेक–सत्योपदेश असत्य का खडन, करा आठों पहर दयानन्द ने।
चारों वेद इकट्ठे करके, छोडी ज्ञान की नहर दयानन्द ने।

१. पोप पुजारी श्योडे श्याने, कहा करें थे भेंट चढा।
आंख के अधे गांठ के पूरे, जेब आपनी रहे कटा।
किसी सफर मे जाना हो तो ग्रह चाल का योग हटा।
एक तो घर से मानस मरग्या, दूजे धन भी रहे लुटा।
सारे साके दिए छुटा फिर के कस्बे शहर दयानन्द ने।

२ जादू मन्त्र चाले थे, किते चाले झपटा झाडा था।
भूत प्रेत निकालन खातर, किते रह रात न खाडा था।
किते बांध नै राख चटाके, मोडा करे पुआडा था।
किते नकली साधु चेली करके, कर्तब कर रहा माडा था।
सब को चढग्या जाडा था, जब फेरी लहर दयानन्द ने।

३ पुराण पुथंगड मिथ्या पोथे, सारे गेर दिए छडके।
प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाने खातर, बांधे वेद सदा कडके।
पोपो के जडे किले बने थे, उपदेश करे थे बेधडके।
मुल्ला काजी पोप पादरी, ज्यान बचावें थे पडके।
चौदह बोर के पिस्टल धडके, कर दिए फैर दयानन्द ने।

४. काशी, मथुरा, दिल्ली, जयपुर, सत्य व्याख्यान किया जाके।
ऋषि तो दे गया खोज खजाना, हमने खो दिया सै पाके।
ओमदत्त तो महल बनावे, कोई राची बना हुआ ठाके।
सकल जगत् को अमृत प्याके, पी लिया जहर दयानन्द ने।

—ओमदत्त आर्य, कतरा कालोनी, पानीपत

आंखें खोलने वाली रपट

हाल ही में अमेरिका के राजदूत राबर्ट ब्लैकविल ने भारतीय अमेरिकी व्यापारिक रिश्तों पर एक रिपोर्ट तैयार की है और उसे भाषण के रूप में फिक्की के फोरम से पढ़ा। यदि इस रपट पर भारत सरकार ने गंभीरता से ध्यान नहीं दिया तो हमारी आर्थिक तरक्की सभव नहीं है। यद्यपि ब्लैकविल का यह भाषण काफी विस्तार से है तथा इसमे तमाम तथ्यों को उजागर किया है, लेकिन अगर इसके लब्बो-लुआब पर जाएं तो एक तरह से भारत को चेताया गया है कि अब वक्त बाकी नहीं है। अगर आपको आर्थिक तरक्की में शामिल होना है तो पूरी सोच बदलनी होगी, जल्द से जल्द फैसले लेने होंगे और कडे फैसले लेने होंगे, काम करने की शैली बदलनी होगी, वक्त की बरबादी रोकनी होगी। तथा सख्त कदम उठाने होगे। ब्लैकविल के लिहाज से विश्व अर्थव्यवस्था एक सुपर फास्ट ट्रेन की तरह है जो एक मिनट भी लेट नहीं होने वाली है। अगर आप इस पर चढने में चूक गये तो समझो आप पिछड़ गए और आप को फिर कहने का मौका भी नहीं रहेगा कि हम चढने में चूक गये, लेकिन यह हमारे पडोसी देश से होकर क्यो गुजरी और वह कैसे चढ़ गया? मुझे तो ब्लैकविल की पूरी रपट आख खोलने वाली लगती है और उन्होंने इसे भारत के एक हितैषी के रूप में तैयार किया है।

चूंकि मैं भारत-अमेरिकी संसदीय फोरम का प्रमुख हूं इसलिए मुझे पता है कि अमेरिका के साथ व्यापार में हम किस तरह से पिछडते जारहे हैं और इसमें ज्यादा दोष हमारा है, अमेरिका का कम। हमारी नीतियों में खामियां हैं। हमारी अफसरशाही पैसा कमाने के जुगाड़ में फाइलों पर बैठी रहती हैं। एक्सपोर्टर को कस्टम वाले तंग करते हैं। हमारा माल इतना महंगा बनता है कि प्रतियोगिता से बाहर हो जाता है। जहां हमारे उद्योगपतियों को बिजली महंगी मिलती है, वहीं बैंक के कर्ज पर ब्याज दर बहुत ज्यादा है। इसके अलावा तमाम सरकारी विभाग के अफसर पैसा कमाने के चक्र में उद्योगपति का खून चूसते रहते हैं। नतीजतन या तो वह फैक्ट्री बन्द कर देता है अथवा उसका माल महंगा तैयार होता है, जो विश्व के अन्य देशों के मुकाबले कीमत में ठहर नहीं पाता है। हमारे उद्योगपति और निर्यातक की सोच भी बहुत खराब है। वह भी विदेशी को उल्लू बनाने के चक्कर में रहता है। रोज एक अण्डा खाने के बजाय एक बार में मुर्गी ही मार देना चाहता है। उसके बनाये सामान की क्वालिटी खराब होती है और वही खराब क्वालिटी वह विदेशी कम्पनी को ठेल देना चाहता है। कुल मिलाकर यह पूरा माहौल ऐसा है कि इसमें भारत का विदेश व्यापार दिनोंदिन बिगड़ता जारहा है। नतीजतन देश में उद्योग बन्द हो रहे हैं और बेरोजगारी हर रोज बढती चली जारही है। इसका सीधा असर यह होगा के कुछ सालों में अपराध इस कदर बढ़ जायेंगे कि उन पर काबू पाना मुश्किल हो जायेगा। राबर्ट ब्लैकविल ने हमें चेताया कि तुम तो चीन के मुकाबले कहीं नहीं हो और चीन तुमसे कितना आगे बढ गया है। चीन और भारत में जमीन-आसमान का फर्क है। चीन की पिछले बीस साल से आर्थिक विकास दर दस प्रतिशत है, जबकि भारत की छह प्रतिशत है। एक दशक पहले भारत और चीन की प्रति व्यक्ति आय समान थी, आज चीन की दो गुनी हो चुकी है। बिजली उत्पादन में भारत जबरदस्त पीछे है।

चीन ११४ ट्रिलीयन किलोवाट बिजली बनाता है जबकि भारत सिर्फ ४५० बिलियन किलोवाट। १९९१ मे दोनों की बिजली उत्पादन क्षमता मे ज्यादा फर्क नहीं था, लेकिन अब जमीन आसमान का फर्क हो चुका है। दस साल पहले चीन की पर्यटन से आमदनी तीन बिलियन डॉलर थी जो अब बढ़कर १४ बिलियन डॉलर हो गई है। भारत की अभी तक सिर्फ तीन बिलीयन डॉलर है। १९९० में चीन की कुल अर्थव्यवस्था का ३७ प्रतिशत उद्योग धन्धे थे। दस साल मे यह बढ़कर ४५ प्रतिशत होगया है। जबकि भारत में पिछले दस साल में उद्योग घटकर तीस प्रतिशत से २४ प्रतिशत रह गए हैं। कहने का मतलब हमसे २१ प्रतिशत ज्यादा कल-कारखाने चीन में हैं। आज चीन विश्व की कुल खपत के पचास प्रतिशत कैमरे बनाता है, तीस प्रतिशत एयर कंडीशन और टेलीविजन। इसी तरह वह पच्चीस प्रतिशत वाशिंग मशीन और बीस प्रतिशत रेफ्रीजरेटर बनाता है, जबकि भारत उसके मुकाबले कहीं नहीं है।

चीन की नीतियों के कारण वहा जमकर विदेशी कम्पनिया आरही हैं और उन्होंने वहां पर तीन सौ छत्तीस बिलियन डॉलर का पूंजी निवेश किया है। जबकि भारत में सिर्फ अठारह बिलियन डॉलर का है, क्योंकि यहां विदेशी कम्पनियों को गालियां दी जाती हैं, उनसे पैसे ऐंठने की कोशिश होती है और उन्हें तरह-तरह से तंग किया जाता है। आम भारतीय के दिमाग में यह रहता है कि विदेशी कम्पनिया सिर्फ पैसा लगाने यहां आएं, मुनाफा कमाने नहीं। यह कैसे सम्भव हो सकता है? पिछले साल ही चीन में ४७ बिलियन डॉलर का सीधे विदेशी पूंजी निवेश हुआ जबकि भारत में सिर्फ ४ बिलियन डॉलर। हमारे यहां लोगों को यह गलतफहमी रहती है कि अगर विदेशी कम्पनी को ज्यादा शेयर दे दिये तो वह कहीं ईस्ट इडिया कम्पनी की तरह देश को गुलाम न बना ले। अब वे दिन लद गए। ऐसा कोई कुछ कर ही नहीं सकता है। चीन का दस साल पहले निर्यात सिर्फ ६२ बिलियन डॉलर का था जो अब बढकर २६६ बिलियन डॉलर हो चुका है, जो कि भारत से साढे पाच गुणा ज्यादा है। इसके अलावा चीन मे अच्छी सडकें हैं, अच्छे एयरपोर्ट हैं, अच्छे बदरगाह हैं, अच्छी संचार सुविधाए हैं जो भारत में नहीं हैं। जो चीन बारह साल पहले बिल्कुल हमारे जैसा था उसने इतनी तरक्की कर ली है कि अमेरिका उसके कदम चूमने लगा है।

अपनी कडी मेहनत, नीतियों और सख्त शासन की वजह से चीन इतनी बडी जनसंख्या को नियंत्रित करके, उद्योग धन्धे बढाकर हर आदमी से कम से कम रोज १२ घण्टे काम करवाकर, हडतालो और तालाबन्दी पर डण्डा लगाकर, भ्रष्ट सरकारी कर्मचारियो को गोली मारकर, चीन आज विश्व का बहुत धनी राष्ट्र बन गया है। वहां न बेरोजगारी की समस्या रह गई और न भूख की। वहा खुशहाली की खुशहाली छाई हुई है। जबकि हम कहां से कहा आगए। हमारे देश के कम्युनिस्ट विदेशी कम्पनियों को गालिया देते हैं। चीन मे एक लाख अट्ठासी हजार विदेशी कम्पनिया काम कर रही हैं और ऐसा कोई सरकारी क्षेत्र का कारखाना नहीं है जिसमें विदेशी कम्पनी की भागीदारी न हो।

चीन के प्रमुख शहरो में घुसते ही चप्पे-चप्पे पर मैकडोनल्ड, कैंटुकी चिकन, पिज्जा हट आदि विदेशी कम्पनियो के रेस्टोरेट नजर आते हैं। माओ की तस्वीरें गायब हैं और आज हजारो की सख्या मे नाइट क्लब खुल गये हैं। अकेले सेन्जन मे जो पन्द्रह साल पुराना शहर है और चीन का टैक्स-फ्री स्पेशल आर्थिक जोन है, एक हजार नाइट क्लब हैं। यहा विदेशी कम्पनियों से साझेदारी में जो कारखाने लगे हैं उनसे सत्तर बिलियन डॉलर हर साल (तीन हजार अरब रुपये) की कमाई सिर्फ इस एक शहर से हो रही है। चीन के ज्यादातर शहरो मे अमेरीका और यूरोप की तरह नई चमकदार बहुमंजिली इमारतों का निर्माण हो रहा है। चीन में इस कदर निर्माण कार्य चल रहा है कि विश्व की सत्तर प्रतिशत क्रेनें वहां काम कर रही हैं। चीनी माल का उत्पादन इसलिए सस्ता हो रहा है, क्योंकि वे सस्ती दर पर मजदूरी करवाते हैं, बिजली की कीमते बहुत कम हैं तथा वहां के बैंक ज्यादातर उद्योगो को बिना ब्याज का कर्ज देते हैं। यदि ब्याज लेते भी हैं तो मुश्किल से चार प्रतिशत। चूकि चीन का कर्मचारी बहुत मेहनती, समय पर ड्यूटी करने वाला तथा ड्यूटी से ज्यादा काम करने वाला होता है। इसलिए उनका माल इतना सस्ता होता है कि आज पूरे विश्व में इसे उन्होंने भर दिया है। चोरी और भ्रष्टाचार वहा कोई कर ही नहीं सकता। यदि कोई व्यक्ति चोरी और भ्रष्टाचार या अपराध मे लिप्त पाया जाता है तो उसे सरेआम मैदान मे ले जाकर जनता के सामने गोली मार दी जाती है। चाहे कितना भी बडा अफसर हो या कितना भी बडा आदमी। चीन तो चीन मलेशिया तक में आप अवैध हथियार नहीं रख सकते। यदि किसी के यहां गैर लाइसेसी बन्दूक या पिस्तौल मिल गई तो उसे तुरत फासी दे दी जाती है।

अभी चीन के एक सचिव स्तर के अधिकारी और एक उपमंत्री व इजीनियर ने एक विदेशी कम्पनी से उसका कुछ काम करने के लिए घूस की माग की थी। इन तीनो को सरेआम गोली मारकर फासी दे दी गयी। इससे सरकार और शासन की इतनी दहशत रहती है कि पूछो मत। कोई भी व्यक्ति यदि किसी के साथ लूट, चोरी, हत्या या अन्य कोई अपराध करने की कोशिश करता है तो तुरत उसे फासी देने का प्रावधान है। इससे कानून और व्यवस्था बहुत मजबूत रहती है। यदि भारत को अपना सुधार करना है तो हर आदमी को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी, हर आदमी को सही ढग से काम करना पडेगा और कुछ नया सोचना पडेगा, केवल सरकार की तरफ मुह ताकने से काम नहीं चलेगा। हम गलत काम करे और सरकार देश सुधार देगी तो यह सम्भव नही है। सरकारी कर्मचारियो और अधिकारियों को अपने अन्दर सबसे ज्यादा बदलाव लाना पडेगा। अपनी नियत ठीक करनी पडेगी। अब अपने लिए नहीं कुछ देश के लिए भी सोचना पडेगा। वरना बच्चे भी बडे होकर ऐसा भारत पायेगे कि बुजुर्गो को कासेंगे। हमें ब्लैकविल की बात को गभीरता से लेना होगा।

—राजीव शुक्ल

साभार-दैनिक जागरण, १ नवम्बर, २००२

वेदाध्ययन की आवश्यकता

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

वेदो के अध्ययन एव प्रचार की आज अत्यन्त आवश्यकता है। वेदो के साचार अध्ययन मे ही मानव की सुख-शान्ति एवं उज्ज्वल भविष्य निहित है। परन्तु यह हो कैसे ? हम वेद को दिव्य काव्य मानते हैं। हम वेद को सत्यविद्याओ की पुस्तक स्वीकारते हैं कि वैदिकधर्म ही सार्वभौम धर्म है। किन्तु इस मान्यता इस स्वीकारोक्ति तथा इस दावे का मूल्य क्या है ? जब तक कि हम वेदों को सर्वगम्य बनाकर उन्हे मनुष्यमात्र तक नहीं पहुंचाते ? भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब तक वेद की विचारधारायें मानवों में प्रचलित रहीं, तभी तक इस देश की संस्कृति एवं सभ्यता संसार में सर्वोपरि रही। जबसे वेदों का संकोच प्रारम्भ हुआ है, तभी से वेदानुयायियों के दैन्य-भावनायुक्त जीवन के प्रकरण का प्रारम्भ हुआ है। यही नहीं, शनैः-शनैः वेद से हम इतने दूर होते गये कि कालान्तर में वेदो के लुप्त हो जाने तक की कल्पना कर ली गई। वर्तमान युग में वेदों का तात्पर्य इतना दुर्गम हो गया है कि उनके वास्तविक अभिप्राय की अटकले-मात्र लगाई जारही हैं।

वेद एक है और उसके चार काण्ड हैं। प्रथम ज्ञानकाण्ड का नाम ऋग्वेद है। दूसरे कर्मकाण्ड का नाम यजुर्वेद है। तीसरे उपासना काण्ड का नाम सामवेद है। चौथे विज्ञान काण्ड का नाम अथर्ववेद है। ज्ञानकाण्ड ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त मे कर्म के यथावत् पालन का संकेत करके कार्मकाण्ड यजुर्वेद मे श्रेष्ठतम कर्म की शिक्षा दी गई है। कर्मकाण्ड यजुर्वेद का उपसंहार जिस अध्याय में हुआ है उसके अन्तिम मंत्रो में उपासना का सकेत किया गया है और उपासना काण्ड सामवेद में उपासना की प्रतिष्ठा की गई है। सामवेद के अन्तिम मन्त्र मे स्वस्तिपाठ है। स्वस्ति का अर्थ है सु-अस्ति, सु-अस्तित्व, विज्ञानमयपूर्ण जीवन। शरीर, बुद्धि, मेधा, चित्त और आत्मा की पूर्णता से मानव का स्वस्तिमय अथवा विज्ञानमय जीवन बनता है। स्वस्तिमय अथवा विज्ञानमय जीवन से युक्त पूर्ण पुरुष को ही विज्ञान की प्राप्ति होती है। सृष्टि, आत्मा और परमात्मा के इन्द्रियजन्य बोध का नाम ज्ञान है। आत्म-अवस्थिति द्वारा ब्रह्मस्थ होकर तीनो के साक्षात्कृत ज्ञान का नाम विज्ञान है। स्वस्ति का सम्पादन करके विज्ञान की प्राप्ति वेद के विज्ञानकाण्ड अथर्ववेद का प्रतिपाद्य है। स्वस्ति का सम्पादन और विज्ञान की उपलब्धि अभ्यास का विषय है। इसके लिये विज्ञानवेत्ता गुरु की आवश्यकता होती है। विज्ञानवान् गुरु के बिना इस मार्ग पर गति नहीं होती।

मानव की प्रत्येक सम्पत्ति, उसकी प्रत्येक उपलब्धि, उसकी बुद्धि, हृदय, चित्त, मन, ज्ञान-कर्मन्द्रियां उसके विचार व भावनायें, उसके सस्कार व प्रवृत्तियां उसकी भौतिक प्राप्तिया-सब कुछ 'भूताय' भूतमात्र, प्राणिमात्र के लिये हैं। मानव ने जब-जब इस चेतावनी की उपेक्षा की है, तब-तब ही ठोकरें खानी पडी हैं। न केवल भौतिक उपलब्धिया, अपितु मानसिक व बौद्धिक विचारधारायें भी इसी विशाल लक्ष्य को लिये हैं। जिस प्रकार भौतिक शक्तियो के संग्रह एव सकुचित प्रयोग से मानवजाति पर संकट आये हैं तथैव विचारों एव विद्याओं के सकोच से भी भयंकर आपदायें आई हैं। भौतिक संकुचन से वैचारिक एवं विद्यासबधी सकुचन कहीं अधिक भयानक होता है। इस दूसरे प्रकार के संकोच का परिणाम अनन्तकाल तक मानवों को भोगना पडता है। यही नहीं, स्वय विचारों और विद्याओ के स्वस्थ अस्तित्व एवं अभिवर्धन के लिये भी यह नितान्त आवश्यक है कि सकोच के स्थान में 'विश्व जनहिताय' का लक्ष्य अभिमुख रहे। अन्तत किसी भी वस्तु के अस्तित्व का अभिप्राय परार्थ ही तो है। यदि परार्थ के स्थान में उसका लघु स्वार्थों के लिये उपयोग होने लगे, तो न केवल उपयोक्ता, परन्तु वस्तु भी, दोनों ही भ्रष्ट एवं नियति-नियत कर्त्तव्य से च्युत होने के दोषभागी बनते हैं।

हमारे देश मे इसी कारण विद्या का लक्ष्य रखा गया था 'विमुक्ति'। विद्या वह है जो स्वय मुक्त हो, उदार हो, विशाल हो और अपने व्यसनी को भी उदार, मुक्त और विशाल बना दे। इसी कसौटी पर हम यदि वेद और वैदिक विद्याओ को परखें, तो हम मानवों के मस्तक लज्जा एवं ग्लानि से झुक जाते हैं। हमने वेदो को संकुचित कर दिया। उनके पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन, श्रवण-मनन सब पर कठिन अंकुश लगा दिये। इतना डराया और घबराया गया अबोध जनता को कि अशुद्ध पाठ के भय से सर्वनाश की आशंका की गई और फलत: समाज का एक अत्यन्त विशाल भाग वेदों से वंचित होगया। मानवता की जड़ों पर कुठाराघात करने वाली, वेद के तथाकथित ठेकेदारों की निकृष्ट एवं संकुचित मनोवृत्ति का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि समाज के श्रमिक शूद्रवर्ग तथा उस नारी वर्ग को जिसकी पूजा को स्वर्गोपलब्धि का साधन कहा गया था, एकबारगी ही वेद के अध्ययन से अधिकारच्युत कर दिया गया। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उद्घोषक महामानव किस प्रकार अपने हृदय को इतना कठोर बना सके कि 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्' के वचन उनके मुख से निकल पाये। यह कैसी विडम्बना है ?

वेद के संकोच के भयंकर अपराध का फल आज तक हम ही नहीं समस्त मानवजाति भोग रही है। कहां वेदों के उदात्त, महतो महान्, हिमालय के सर्वोच्च शिखर के समान उज्ज्वल, प्राणपोषक एवं उदारतम विचार व भावनायें और कहां इस युग में प्रचलित भय, आशंका, निराशा, मृत्यु एवं स्वार्थ की चरमसीमा को भी पार करनेवाली महाविनाशकारी, जघन्य, कुत्सितातीत अमानवीय भावनाये। वेद जीवन मे विश्वास करना सिखाता है मृत्यु में नहीं। वेद 'उद्यानं ते पुरुष' का उद्घोष करता है तो वर्तमान विचारधारायें दु:खमय जीवन, अनास्था, अनुत्साह, नीरसता, अकर्मण्यता, भीरुता, अविश्वास एवं अत्यंत काले भविष्य की ओर संकेत करने वाली हैं। मानवजाति का भविष्य तभी समुज्ज्वल होगा, जब वेद की उदात्त शिक्षाओं का मनन एवं आचरण होने लगेगा। आइये, वेद में श्रद्धा रखने वाले हम सब मानव इस यज्ञ की सफलता के लिए कटिबद्ध होजायें।

आर्य-संसार

महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज कासण्डी (सोनीपत) में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष २९ अक्तूबर से ४ नवम्बर २००२ तक दीपावली एवं महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में यजुर्वेद (आशिक) यज्ञ तथा वैदिकधर्म का प्रचार हुआ। साप्ताहिक यज्ञ स्वामी वेदरक्षानन्द जी आर्ष गुरुकुल कालवा (जीन्द) के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन नये यजमानों ने तथा अनेक नवयुवको ने यज्ञोपवीत धारण किये और शराब, बीडी आदि छोडने का सकल्प लिया। इस शुभावसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री विश्वमित्र जी ने १-२ नवम्बर को यज्ञ व रात्रि में ८ से १२ बजे तक वेदप्रचार, महर्षि दयानन्द गुणगान और ऐतिहासिक कथा बहुत रोचक ढग से प्रस्तुत की। ३-४ नवम्बर को श्री प० रामनिवास जी आर्य (पानीपत) की भजनमण्डली ने यज्ञ व रात्रि मे नारी-शिक्षा, महर्षि दयानन्द गुणगान तथा ऐतिहासिक कथा सुनाई जिसका बहुत अच्छा प्रभाव पडा। उत्सव मे श्री महाशय टेकचन्द जी आर्य श्री महाशय गुणपाल जी आर्य आदि महानुभावो ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

—**स्वामी महानन्द,** आर्यसमाज कासण्डी (सोनीपत)

आर्यवीर सम्मेलन की तैयारियां जोरों पर

आर्यवीर दल हरयाणा का आगामी आर्यवीर महासम्मेलन आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार के वार्षिकोत्सव के साथ ३० नवम्बर से ३ दिसम्बर तक हिसार मे आयोजित किया जारहा है। सम्मेलन मे भाग लेने के लिए हरयाणाभर मे तैयारिया जोरो पर चल रहा है। हरयाण के अतिरिक्त देहली से भी बडी सख्या मे श्री विनय आर्य सचालक के नेतृत्व मे आर्यवीर भाग लेगे। इसके अतिरिक्त गुडगाव, रोहतक, करनाल, पानीपत, भिवानी, कैथल, फरीदाबाद, हासी, नरवाना जीन्द, सोनीपत आदि से भी भारी सख्या मे आर्यवीर पधारेगे।

सम्मेलन मे डा० देवव्रत आचार्य प्रधान सेनापति आर्यवीर दल, डा० राजेन्द्र विद्यालकार महामन्त्री सार्वदेशिक आर्यवीर दल, आचार्य आर्यनरेश, स्वामी सुमेधानन्द, आचार्य देवव्रत, डा० रामप्रकाश तथा अन्य वैदिक विद्वानो, सन्यासियो एव भजनोपदेशको को आमन्त्रित किया गया है। आप भी इस कार्यक्रम मे भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनाए।

३० नवम्बर को १२ बजे विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी और ३ दिसम्बर को आर्यसमाज नागोरी गेट के विशाल भवन का उद्घाटन मुख्यमत्री हरयाणा चौ० ओ३म्प्रकाश चौटाला करेगे। कृपया अपने मोटो बैनर साथ लाए। —**वेदप्रकाश आर्य,** मन्त्री आर्यवीर दल हरयाणा

ऋषि-निर्वाण दिवस समारोह

महर्षि दयानन्द के पथ पर चलने से ही विश्व का कल्याण हो सकता है।
—श्री कृपाशंकरसिह (गृहराज्यमन्त्री)

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई के भवन मे स्थानीय समस्त आर्यसमाजो की ओर से **"ऋषि-निर्वाण दिवस समारोह"** रविवार दिनाक ३ नवम्बर, २००२ को मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान माननीय मिठाईलालसिह जी आर्य की अध्यक्षता मे महर्षि दिवस समारोह आरम्भ हुआ।

ऋषि निर्वाण दिवस समारोह के मुख्य अतिथि श्री कृपाशकरसिह (गृहराज्यमन्त्री, महाराष्ट्र सरकार) ने अपने भाषण मे कहा कि–ससार मे यदि कोई समाज विद्या, शिक्षा, सस्कार व सात्विकता दे सकता है तो आर्यसमाज ही दे सकता है। महर्षि दयानन्द के पथ पर चलने से ही विश्व का कल्याण हो सकता है। ज्ञान के आलोक मे ही वैभव का व्यापार होना चाहिए।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान डा० सोमदेव शास्त्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ससार की बुराइयो का डटकर मुकाबला किया तथा संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डितो से कई बार शास्त्रार्थ हुये। उन्होने वेदों के प्रमाण रखते हुए बताया, **'स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्'** इस वाक्य को गलत सिद्ध कर वेदों के स्वाध्याय करने की परम्परा को सम्पूर्ण मानव जाति के लिये खोल दिया।

विशिष्ट वक्ता के पद से बोलते हुए डॉ० सत्यपालसिंह जी (आई जी मुम्बई) ने अपने ओजस्वी भाषण में मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की कला को उजागर करते हुए देवदयानन्द के दिव्य जीवन की अनेक घटनाओं को प्रस्तुत करते हुए कहा कि सत्य रूप से धारण करने वाला व्यक्ति मृत्यु से नहीं घबराता, वह निडर व निर्भय हो जाता है। आस्तिकता ही शान्ति का एकमात्र मार्ग है। नास्तिक गुरुदत्त ऋषि के जीवन से प्रेरणा लेकर आस्तिक बने।

समारोह के विशेष अतिथि माननीय कैप्टन देवरत्न आर्य (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली) ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने जीवन पर्यन्त पाखण्ड को दूर करने का प्रयत्न किया। **'जन्मना जायते शूद्र'** अर्थात् जन्म से सभी शूद्र हैं। **'सस्कारात् द्विज उच्यते'** अर्थात् संस्कार से सभी द्विज कहलाते हैं। पं० मदनमोहन मालवीय के उक्ति को दोहराते हुए कहा कि "आर्य दौडता है तो हिन्दू चलता है और आर्य चलता है तो हिन्दू बैठता है।"

अन्त मे श्री संगीत आर्य (महामन्त्री, आर्यसमाज सान्ताक्रुज) ने समस्त आमन्त्रित विद्वानो, श्रोताओ, सहयोगियो एव कार्यकर्ताओ का धन्यवाद ज्ञापन किया। शान्तिपाठ, जयघोष हुआ। प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पुस्तक-समीक्षा

पुस्तक का नाम **ऋषि दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य।**
लेखक **डा० भवानीलाल भारतीय,** ४/४२३ नन्दनवन, जोधपुर।
प्रकाशक **आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल,**
४२ शकरघोष लेन, कोलकाता-७०000६
मूल्य १० रुपये।

इस पुस्तक मे ऋषि दयानन्द-विषयक दो निबन्धो का सग्रह है। प्रथम निबन्ध **'ऋषि दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य'** मे धर्माचार्यो का तुलनात्मक अध्ययन है जो कि भवानीलाल जी की सर्वप्रथम रचना है जिसे नगर आर्यसमाज जोधपुर ने १९४९ ई० मे प्रकाशित किया था। मूल्य था केवल दो आने।

इसमे शंकराचार्य, राजा राममोहनराय, रामकृष्ण परमहस और उनके प्रमुख शिष्य स्वामी विवेकानन्द के विचार कार्य और सिद्धान्तो की ऋषि दयानन्द के कार्य और वैदिक सिद्धान्तो से तुलना की गई है।

इस द्वितीय सस्करण मे दूसरा निबन्ध **'दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्त समय की कसौटी पर'** और जोड दिया गया है। समयानुकूल पुस्तक का कागज छपाई आदि भी उत्तम है।

भारतीय जी ने विगत अर्धशताब्दी मे ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज विषय पर ६० पुस्तके लिखी हैं और समय-समय समाचारपत्रो में भी लेख लिखते रहते हैं। भारतीय जी के लेखानुसार दयानन्द और आर्यसमाज-विषयक ग्रन्थो का इनका पुस्तकालय इस धरती पर अद्वितीय है। ऋषि विष-पान-स्थली और ऐतिहासिक नगरी जोधपुर जाने के अवसर पर भारतीय जी का पुस्तकालय भी अवश्य देखना चाहिए। —**वेदव्रत शास्त्री**

अपील

हमारा समूचा राष्ट्र एक शरीर की तरह है जिस तरह किसी भी अग पर चोट लगते ही सारा शरीर तडफ उठता है। उसी तरह अपने देश मे गुजरात से आसाम, कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरे राष्ट्र मे किसी भी भारतीय से छेडछाड होने पर पूरे समाज को झकझोड देता है, हमारे गरीब भाई जो लोभ व सेवा की आड मे हमसे बिछडे हुए है उनको अपने साथ मिलाने के लिए हर वर्ष शुद्धि सभा मध्यप्रदेश मे ५-१० हजार नगे लोगो (औरतो, बच्चो, पुरुषो) को वस्त्र धारण करवाती है। यह कपडा दानदाता अपनी भावना स्वरूप दान देते हैं। मध्यप्रदेश मे जिला सरगुजा के अन्दर राजपुर तथा शकरगढ शुद्धि का प्रचार हिंदू शुद्धि सरक्षणी सभा द्वारा चल रहा है। उनके बच्चों को गुरुकुल में नि शुल्क शिक्षा दी जाती है। जिन बन्धुओ को शुद्धि यज्ञ पर बैठाया जाता है उनको नए वस्त्र धारण करवाए जाते हैं।

नोट—जो व्यक्ति शुद्ध किए जाते हैं नए वस्त्र धारण करवाने के लिए दान देना उनके लिए जो व्यक्ति का अर्थ एक परिवार का पुन अपने धर्म में प्रवेश करवाने का पुण्य लाभ। एक परिवार के लिए वस्त्र प्राप्त करना धोती-कुर्ता, एक साडी, ब्लाउज की कीमत ५२१ रु० है।

अध्यक्ष
स्वामी सर्वानन्द सरस्वती
दयानन्दमठ, दीनानगर
जिला गुरदासपुर (पजाब)

प्रधान
स्वामी सेवानन्द सरस्वती
भारतीय हिन्दू शुद्धि सरक्षिणी सभा
आर्यसमाज मन्दिर, समालखा,
जिला पानीपत (हरयाणा)

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज पिंजौर (पचकूला) का वार्षिकोत्सव दिनाक २४-१०-२००२ को देवयज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ। देवयज्ञ श्री शैलेषकुमार विद्यावाचस्पति द्वारा सपन्न करवाया गया। तत्पश्चात् ध्वजारोहण आदरणीय एम के सिसौदिया, अध्यक्ष व्यापार मण्डल, पिंजौर के करकमलों द्वारा किया गया। श्री चन्द्रपाल शास्त्री भजनोपदेशक, श्री राजेन्द्रसिह मंत्री आर्यसमाज सैक्टर-९, चण्डीगढ द्वारा महर्षि देव दयानन्द जी महाराज की छत्रछाया मे वेद आधारित भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

दिनाक २५-१७-२००२ को गत दिन की भाति इस दिन भी भजनों का कार्यक्रम हुआ और आचार्य आर्यनरेश, प्रख्यात वैदिक वक्ता द्वारा प्रवचन किया गया।

दिनाक २६-१०-२००२ को आचार्य आर्यनरेश जी द्वारा मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी महाराज द्वारा स्थापित मर्यादाओ का बहुत ही मार्मिक व सारगर्भित वर्णन प्रस्तुत किया गया। विभिन्न स्कूलो से आये विद्यार्थियों को मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी द्वारा स्थापित मूल्यों को अपने जीवन मे अपनाने पर जोर दिया गया। रामायणकाल तथा वर्तमान काल में राजनैतिक व्यवस्था का तुलनात्मक अन्तर विद्यार्थियो को समझाया गया और समाज मे फैली विभिन्न कुरीतियो को त्यागने व स्वच्छ सामाजिक परिवेश पैदा करने मे सहयोग देने का सभी उपस्थित जनसमूह को आह्वान किया गया। इस अवसर पर मोरिण्डा (पजाब) से लगभग १८० विद्यार्थियों ने कार्यक्रम मे भाग लिया।

दिनाक २७-१०-२००२ को प्रात:कालीन सभा मे आसपास के आर्यसमाजो के प्रतिनिधि शामिल हुए। रामायण के साथ-साथ महाभारत काल मे अवतरित हुए योगिराज श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज के कर्मयोग पर प्रकाश डाला गया।

इस अवसर पर गत वर्ष की भाति स्थानीय विद्यालयो मे बोर्ड की वार्षिक परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियो को सम्मानित किया गया। इसमे निम्न विद्यालयो ने भाग लिया-(१) आर्य सिटी पब्लिक स्कूल, आर्यसमाज पिंजौर, (२) जे०पी० गुरुकुल स्कूल, पिंजौर, (३) आजाद पब्लिक सी०सै० स्कूल, पिंजौर, (४) ऐंजल पब्लिक स्कूल, पिंजौर।

इसके अतिरिक्त इस अवसर पर आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री आत्मप्रकाश आर्य द्वारा वर्ष के दौरान किये गये कार्यों के प्रति उनकी लगन, निष्ठा व मेहनत की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए उन्हे सम्मानित किया गया। श्री राजेशसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज पिंजौर ने बताया कि श्री आत्मप्रकाश आर्य जैसा लगनशील, मेहनती व निष्ठावान् कार्यकर्ता यदि देशभर की आर्यसमाजों के पास हो तो महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित विचारों को बहुत अच्छी तरह आगे बढाया जा सकता है।

आज के समापन समारोह की अध्यक्षता श्री विजयकुमार, प्रधानाचार्य डी०ए०वी०सी०सै० स्कूल, सूरजपुर (पचकूला) द्वारा की गई। उन द्वारा अपने भाषण मे वर्तमान शिक्षापद्धति व प्राचीन गुरुकुल शिक्षापद्धति की अनिवार्यता पर बल दिया गया। उन्होंने कहा कि शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिए जिससे नवयुवको व नवयुवतियों को आगे बढने के पर्याप्त अवसर प्राप्त हों। इस अवसर पर उन द्वारा ५१००/- रुपये की राशि दानस्वरूप आर्यसमाज को देने की घोषणा की। प्रधानाचार्य महोदय को शाल भेट कर कृतज्ञता प्रकट की गई। अन्त में श्री धर्मपाल सिह, प्रधान आर्यसमाज पिंजौर द्वारा इस वार्षिक उत्सव मे शामिल हुए विद्यार्थियों, शिक्षको, माताओं, बहनों व सभी गणमान्य अतिथियो तथा विभिन्न आर्यसमाजो से शामिल हुए उनके प्रतिनिधियों को इस उत्सव को सफल बनाने मे दिये गए योगदान, सहयोग के लिए तहेदिल से धन्यवाद और आभार प्रकट किया।

आर्यसमाज पिंजौर जिला पंचकूला का वार्षिक चुनाव

प्रधान-चौ० धर्मपालसिंह, उपप्रधान-श्री हेमचन्द दहिया, उपप्रधान-श्री प्रवीन गर्ग, मत्री-श्री राजेशसिह आर्य, उपमत्री-श्री रोहतास दहिया, कोषाध्यक्ष-आत्मप्रकाश आर्य, ऑडिटर-वेदप्रकाश तिवारी, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री सुरेशकुमार आर्य, प्रचार सचिव-श्री सुशीलकुमार।

—**धर्मपालसिंह,** प्रधान आर्यसमाज पिजौर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ | सृष्टिसवत् १, ९६[illegible]
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 | विक्रमसंवत् २०५९
☎ ०१२६२-२७७७२२ | दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री | सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष ३० अंक ४ १४ दिसम्बर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

सूंडल गणेश का कुर्सीनामा

धन्य हो, देवदयानन्द तूने सोतों को जगाया, ऊंघतों को चेताया, पथभ्रष्टों को मार्ग दिखाया। अविद्यान्धकार में डूबे अवैदिक मतमतान्तरों को सत्यार्थप्रकाश में उजागर किया। गत हजारों वर्षों से धर्म के नाम पर पाखंडों की रचना होती रही, धर्मपिपासु उनके प्रवाह में बहते रहे। वैदिक शिक्षा के बिना वैचारिक बुद्धि कुंठित रही। स्वाध्याय और संस्कार के अभाव में सत्यासत्य शोधन का गुण हीन होता चला गया, परिणामत: पशु-पक्षियों की भांति मनुष्य भी रूढ़िवादी अवैदिक परम्पराओं में उलझता रहा।

योरुप तथा मध्यपूर्व के देश जहां यहूद, ईसाई तथा मुसलमानों की बाइबली व कुरानी संस्कृतियों ने कुंवारी कन्याओं के गर्भ से पापों से निजात दिलानेवाले प्रभु पुत्र को जनवाया, कुरानियों ने स्वर्ग की हूरों, शहद और शराब की बहती नहरों का लालच देकर मंदबुद्धियों को धर्म की राह से भटकाया। जन्नत की चाबी अपने पीर-पैगम्बरों को सौंप दी। सर्वव्यापक जगदीश्वर को बैतुलहरम तथा काबा व मक्का मदीना में मुकीम कर दिया, वहीं भारत के पौराणिकों, जैन ग्रन्थियों, वाममार्गियों तथा उनके समकक्ष नाथपंथियों, तांत्रिकों द्वारा अनाचारी साहित्य तथा संस्कार खुले में परोसे गए। ईश्वर प्रार्थना उपासन के नाम पर भगतों के मस्तिष्क पत्थरों से टकराता रहे, कोई समझानेवाला नहीं था।

मिथ्या धर्मप्रचारकों की सदा से एक जुगत रही है। वे अपने इष्टदेव में भगतों की आस्था की गहरी पैठ जमाने के लिए, पापों से छुटकारा दिलाने, क्षेम, कुशल, धन वैभव, शुभ लाभ, निपूतियों को पुत्र, कोढ़ियों को निरोगकाया. मनोवांछित वरदान के साथ अगली योनि में स्वर्ग का साक्षात्कार कराया करते हैं। अनेक देवी देवताओं के अतिरिक्त सूंडल गणेश के रूप में एक ऐसा देवता है जो सारे कारज अकेला ही सिद्ध करने के लिए प्रसिद्ध है। यही कारण है कि स्वार्थी समाज में सूंडल गणेश की छाप का बोलबाला है। विवाह शादी, उद्योग-व्यवसाय, शुभ कार्यों के निमन्त्रण-पत्रों, अनुष्ठान के कर्मकाण्डों में सब जगह सूंडल गणेश छाया हुआ है पता तो करें, "यह गणेश है कौन। इसका कुर्सीनामा क्या है?"

पौराणिक व्याख्या के अनुसार-शिवजी महाराज अपनी पत्नी पार्वती जी के साथ घर में रहते थे। एक दिन किसी आवश्यक कार्य से बाहर गए हुए थे, पार्वती घर में अकेली थी। स्नान का समय हुआ, नहाने की तैयारी करली, किन्तु घर में अकेली थी, शंका हुई कोई ऐरा गैरा न आजाए और स्नान में विघ्न डालदे। पार्वती को एक युक्ति सूझी क्यों न द्वार पर कोई पहरेदार खड़ा कर दिया जाए। पार्वती ने अपनी जांघ पर हथेली का रगड़ा लगाया, मैल की एक बाती उसके हाथ में आई। उसने अपने तप बल से बाती को आशीर्वाद दिया। बाती का बालक गणेश बनकर उपस्थित होगया। हे माता, मैं तेरा पुत्र हूं, आज्ञा दो क्या सेवा है? गणेश जी का जन्म कैसे हुआ, यह आपने जान लिया। वह सूंडल कैसे बना यह भी जान लीजिए।

पार्वती जी ने आज्ञा दी, "पुत्र मैं स्नान करने लगी हूं। तुम द्वार पर खड़े हो जाओ. कोई अन्दर घर में न आने पाये।" तथास्तु बोलकर गणेश जी द्वार पर पहरा देने लगे, पार्वती जी स्नान करने लगी। इतने में शिवजी महाराज बम-बम बोलते आगए और अपने घर में प्रवेश करना चाहा। किन्तु द्वारपाल बने गणेश ने उन्हें घर में प्रवेश करने से रोक दिया। वाक्युद्ध के पश्चात् हाथापाई हुई। शिवजी महाराज ने क्रोध में आकर कर्त्तव्यपरायण गणेश का शिर धड़ से अलग कर दिया। आखेट सुनकर पार्वती बाहर आगई। देखा उनके लाड़ले पुत्र की गर्दन धड़ से कटी तड़प रही है। दृश्य देखकर वह विलाप करने लगी और शिवजी को बाध्य किया कि वे उनके पुत्र को जीवनदान दें। शिवजी महाराज सर्वशक्ति पुंज थे। वन में गए और एक हाथी का शिर काट लाए, गणेश के धड़ पर जचा दिया। गणेश जी अपने वर्तमान रूप में जी उठे। आज तक जीवंतमान हैं।

शिवजी को पार्वती मिल गई। पार्वती को लाडला आज्ञाकारी पुत्र मिल गया। मन्दिर के पुजारी को धन्धा मिल गया-ज्योति के आलोक में, टल्ली की खनखनाहल में, सूंडल गणेश की पत्थर मूर्ति के सामने कीर्तिगान का।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता तेरी पार्वती पिता महादेवा।
फूल चढ़े पान चढ़े और चढ़े मेवा।
मूषक की सवारी करे, देव करें सेवा॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा॥
विघ्नहरण मंगलकरण, लम्बोदर गजराज।
रिद्धि सिद्धि सहित पधारियो पूर्ण करज्यो काज॥

सूंडल गणेश का कुर्सीनामा आपके सामने है। परमपिता परमात्मा ने आपको तर्कशील बुद्धि दी है। विचारिये-

1. मैल की बाती से निर्मित गणेश जी ने जीवधारण कैसे किया? पराक्रमहीन गणेश जी को 'देव' संज्ञा पुजारी ने क्यों दी? क्या मैल की बाती का मनुष्य बन सकता है? यदि हां तो गणेश का सिर काटने पर निर्दोष हाथी का शिर काटकर गणेश के धड़ पर क्यों और कैसे जोड़ा गया? पार्वती जी ने अपनी दूसरी जांघ पर हाथ रगड़ कर मैल की एक और बाती बनाकर नया गणेश क्यों नहीं बना लिया? यह तो उनका पूर्व परीक्षित व्यक्तिगत उद्योग था, माता तो वह होती है जिसके गर्भ में पिता के वीर्य से बालक पलता है। गणेश न तो शिवजी के वीर्य से बना था और ना ही पार्वती जी के गर्भ में पला था, फिर 'माता तेरी पार्वती, पिता महादेवा' (शिव) कैसे हुआ?

सब झूठ है तो फिर मिथ्या सूंडल गणेश से रिद्धि, सिद्धि, विघ्नहरण, मंगलकरण की कामना क्या करनी? कलियुगी भगवानों और उनके आश्रयदाता मतान्ध नेताओं की यह कपट छाया अब नवआर्यों पर भी पड़ने लगी है। सत्यमेव जयते के आलोक में, सहिष्णुता के नाम पर, मिथ्याचारों के बोझ से, आत्मा पर बोझ मत लादिए। आर्यसमाज के दस नियमों के साथ दिव्य दयानन्द के उपदेश स्मरण रखिये।

-**हरिराम आर्य**, पो० कारोली (नाहड़) जिला रेवाड़ी-१२३३०३

वैदिक-स्वाध्याय

घर्म पुकार रहा है!

उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां, सुहस्तो गोधुक् उत दोहदेनाम्।
श्रेष्ठ सवं सविता साविषन्नः, अभीद्धो घर्मस्तदु षु प्रवोचम्॥

ऋ० १.१६४.२६॥ अथर्व० ७ ७३ ७॥

शब्दार्थ-(**एतां सुदुघां धेनुं**) इस अच्छी दुही जानेवाली धेनु को मैं (**उपह्वये**) बुलाता हूं (**उत एनां सुहस्तः गोधुक् दोहत्**) और अच्छा कुशल दोहनेवाला इस धेनु को दुहे। (**सविता नः श्रेष्ठं सवं साविषत्**) प्रेरक परमात्मा इस श्रेष्ठ रस को हमारे लिये प्रेरित करे। (**घर्मः अभीद्धः तत् उ सु प्रवोचम्**) घर्म खूब तप रहा है इसीलिये यह उचित विनती कर रहा हूं।

विनय-ग्रीष्मकाल प्रचण्डता से तप रहा है, वर्षा के बिना सब वृक्ष वनस्पतियां भी सूखी जारही हैं, इसलिये मैं इस मेघरूपी धेनु (माध्यमिक वाणी) को पुकार रहा हूं। यह आकाश में फिरती हुई खूब उदक दे सकनेवाली मेघ-धेनु (माध्यमिक वाणी) आये और अन्तरिक्षनिवासी मध्यमदेव (इंद्र) एक कुशल दोहनेवाले की तरह, इसे दुह लेवे। ओह! यह सब परमात्मा की इच्छा के बिना कैसे हो सकता है? भगवान् की प्रेरणा के बिना तो संसार में एक भी हरकत नहीं हो सकती है। अतः मैं उनकी करुणा का भिक्षुक हूं। उनकी करुणामय प्रेरणा से यह धेनु हमारे लिये सर्वश्रेष्ठ रस को देवे, वर्षारूपी दूध पिलाकर इस झुलसी हुई भूमि को तृप्त करदे। अरे! यह पृथिवीरूपी घर्म[1] तप रहा है, जला जारहा है, इसीलिये मैं तुम्हें पुकार रहा हूं। परितप्त व्याकुल संसार वर्षा की मांग मचा रहा है।

मैं बहुत तप तप चुका हूं, बड़े-बड़े क्लेश उठा चुका हूं, अब ज्ञान-पिपासा ने मुझे बिल्कुल व्याकुल कर दिया है। इसलिये, हे खूब ज्ञानदुग्धामृत दे सकनेवाली सरस्वती देवीरूपी धेनु! तुम आओ, हृदयान्तरिक्ष में रहनेवाला देव-जो कुशल दोहनेवाला मनोदेव है-वह तुम्हें दुह देवे। उस सर्वान्तर्यामी प्रभु की ऐसी दया होए कि मेरे लिये यह सरस्वती-धेनु अब तो उस ज्ञान-दुग्ध को दुह देवे जो कि संसार में सर्वोत्तम रस है। मुझे तप करते हुए बहुत काल होगया है, गर्मी के बाद वर्षा आया ही करती है, तो अब तो मेरे लिये ज्ञानामृतपान करने का समय आगया होगा। मैं इसलिये पुकार रहा हूं, क्योंकि मुझमें ज्ञान-पिपासा की अग्नि प्रचण्डता से धधक रही है इस समय ज्ञानामृत न मिला तो मैं जल जाऊंगा, ज्ञानामृत मिल गया तो मैं इस सबको इस समय हजम कर सकता हूं। मेरी ज्ञान-पिपासा का घर्म तुम्हें पुकार रहा है। (वैदिक विनय से)

१ घर्म=यज्ञ का चूल्हा

दुःखी हृदय की पुकार

प्यारे गोभक्तो!

गोमाता की जय बोलते-बोलते वर्षों बीत गये। गोमाता की जय बोलनी तो आसान है परन्तु क्या गोमाता की जय हो रही है? अब समय आ गया है कि हम इस नारे को ही बदल दें। गोमाता के स्थान पर **गोपालन हो-गोरक्षा हो** कहें और जैसी कथनी वैसी करनी हो। जो लोग गाय को घर में नहीं पाल सकते वे समर्थ लोग एक-एक गाय किसी गोशाला में पालें अर्थात् मासिक ५००-७०० रुपये किसी गोशाला में दें और एक गाय का पालन करें। जो समर्थ नहीं वे नित्य-प्रतिदिन रुपया-दो रुपया गोग्रास के रूप में निकालें और महीना पूरा होने पर किसी गोशाला में जाकर दें या स्वयं आटा, खल, चूरी, हरा चारा खरीदकर डाल आवें। साथ में बच्चों को भी ले जावें ताकि उनमें भी गोभक्ति के संस्कार आयें। गोरक्षा करना कोई सरल कार्य नहीं। केवल पार्लियामेंट पर धरना देने और जमकर नारे लगाने से गोरक्षा नहीं होनी। आप स्वयं हलवा मांडे खाते रहें और गाय पुराली को भी तरसे। ये कहां की गोभक्ति है। कुछ लोगों ने तो गाय को भी मोहरा बनाकर एक पाखण्ड-सा रच रखा है। मैं आह्वान करता हूं उन सभी गोभक्तों का जो गोरक्षा के सच्चे हामी हैं वे कुछ सोचें, कुछ करें।

मैंने गुरुकुल आटा डिकाडला (पानीपत) को १९८० में संभाला। १९८५ में पहली गोशाला वहीं पर बनाई। आज २०० से ऊपर गाय हैं। इसके पश्चात् गोशाला पहरावर का शिलान्यास किया। तत्पश्चात् गोशाला मतलोडा मंडी (पानीपत) बनाई। मेवात की स्थिति को देखकर निश्चय किया कि पुलिस जिस गोवंश की रक्षा करती है उसके लिये मेवात में एक विशाल गोशाला बनाई जावे। पिछले तीन-चार वर्षों में सैकड़ों गोवंश मेवात से ट्रकों में भरकर गोशाला पानीपत और गोशाला धड़ौली में लाया गया। हरयाणा राज्य गोशाला संघ की बैठक में भी निर्णय किया कि मेवात में कोई गोशाला बने तो सब गोशालायें सहयोग करेंगी। उसी बैठक में श्री हरि ओम् तायल प्रबन्धक गोशाला पानीपत ने एक लाख रुपये के सहयोग की घोषणा भी कर डाली। मैंने इस उत्साह को देखकर मेवात में नूह तहसील में संगेल गांववासियों के सहयोग से गोशाला का शिलान्यास कर डाला। गांव ने लगभग ३५ एकड़ भूमि इस गोशाला को दी। अब तक ७-८ लाख रुपये का भवन-निर्माण हो चुका। २५ अगस्त, २००२ को गोप्रवेश हुआ। आज सैकड़ों गाय संगेल गोशाला में हैं जो सभी कसाइयों से पुलिस द्वारा बचाई हुई हैं। पुलिस तत्परता से अवैध गोहत्या को रोकने का प्रयास कर रही है परन्तु हम मुसीबत में फंस गए। सूखे के कारण चारे की व्यवस्था नहीं हो रही। गोशाला पानीपत और गोशाला धड़ौली के अतिरिक्त शेष हरयाणा सोया पड़ा है। हरयाणा में लगभग छोटी-बड़ी १८० गोशालाएं हैं। कई गोशालाओं में तो ५०-५० लाख रुपये की एफ डी. हैं। एक तरफ तो हजारों गोवंश मेवात में कट रहा है दूसरी तरफ गोशालाओं का करोड़ों रुपया बैंकों में जंमा है। जब तक हम सब मिलकर कार्य नहीं करेंगे हरयाणा के माथे पर गोहत्या का कलंक लगा रहेगा। धनाढ्य लोगों का यह हाल है कि शादियों में तो पांच-पांच, दस-दस लाख रुपये खर्चा कर देते हैं परन्तु जब गोदान का समय होता है तो एक सौ एक या दो सौ एक रुपया दिखाते हैं। आज हिन्दू समाज के पास इतना धन है कि यदि ईमानदारी से विश्व हिन्दू परिषद्, आर्यसमाज, जैन समाज और सिक्ख समाज ध्यान दें तो एक भी गाय नहीं कट सकती। हरयाणा की समस्त गोशालाओं से मेरा विशेषकर निवेदन है कि जो समर्थ हैं वे मेवात की गोशालाओं का सहयोग करें अथवा अपने खर्चे पर वहां से गोवंश मंगवायें। जागो! आज तो गाय कट रही है यदि यही हाल रहा तो कसाई आपको भी नहीं छोड़ेंगे।

-**ब्रह्मचारी ओमस्वरूपार्य,** अध्यक्ष गोरक्षा समिति हरयाणा गुरुकुल डिकाडला

आर्यसमाज मन्दिर बालन्द का शिलान्यास सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर बालन्द (रोहतक) के शिलान्यास के शुभ अवसर पर दिनांक ४ दिसम्बर ०२ को रात्रि में ग्राम परस बासरान में वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती वैदिक आश्रम पिपराली (राज०) बहन पुष्पा शास्त्री रेवाड़ी, पं० सुदर्शनदेव आचार्य रोहतक के प्रवचन हुए तथा पं० आशाराम गाजियाबाद के शिक्षाप्रद भजन हुये। दिनांक ५ दिसम्बर ०२ को प्रातः राजकीय कन्या विद्यालय में यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री राममेहर हुड्डा तथा बहिन पुष्पा शास्त्री के भाषण हुये। उपदेशकों को शाल-अर्पण से सम्मानित किया गया। कन्या विद्यालय आर्यसमाज मन्दिर की भूमि तक एक शोभायात्रा निकाली गई। श्री नन्दराम आर्य ओ३म् ध्वजा लेकर सबसे आगे चल रहे थे। चौ० मित्रसेन सिन्धु ने मन्दिर की आधारशिला रखी और ५१००० रुपये दान दिये। यह समारोह अति उत्तम एवं प्रभावशाली रहा।

-सोमदेव शास्त्री, मन्त्री आर्यसमाज बालन्द

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज शान्तिनगर (चार मरला) सोनीपत	२० से २२ दिस० २००२
२	आर्यसमाज नरवाना (जीन्द)	२३ दिस० २००२
३	गुरुकुल मधुबन जिला करनाल (योगप्रशिक्षण शिविर व स्थापनोत्सव)	२५ से ३१ दिस० २००२ व १ जनवरी २००३
४	आर्यसमाज भीमनगर गुडगाव (स्वर्णजयन्ती समारोह)	२७-२८-२९ दिस० ०२
५	आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ जिला झज्जर (ध्यान योग शिविर, गायत्री-यज्ञानुष्ठान योग सम्मेलन)	२२ से २९ दिस० ०२
६	आर्यसमाज वीर योग आश्रम मिर्जापुर जिला फरीदाबाद	११ जन से १४ जन ०३
७	गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद	७ से ९ मार्च, ०३
८	आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	२१ से २३ मार्च, ०३

-रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

लक्ष्मण जी को स्वस्थ कर दिया। यहां स्पष्ट वर्णन है कि हनूमान पहाड़ उठाकर नहीं लाये थे। उन्हें बूटियों की पहचान न थी अत: काफी सारी उठा लाये। यहां पर लक्षणावृत्ति का प्रयोग किया गया है कि तुम तो पूरा पहाड़ ही उठा लाये हो। वे पहाड़ नहीं अपितु ओषधिसमूह उठाकर लाये थे। पहाड़ को उठाकर लाना कोरी गप्प है।

९. क्या राम ने विजयदशमी (दशहरे) के दिन रावण को मारा था :-प्रचलित धारणा के अनुसार लोग विजयदशमी अर्थात् दशहरेवाले दिन रावण का मारा जाना मानते हैं और जगह-जगह पर इस अवसर पर रामलीलायें करके कागज के रावण, मेघनाद और कुंभकर्ण के पुतले बनाकर उन्हें आग लगाते हैं। यह धारणा भी बिल्कुल निराधार है। आइये रामायण के ही प्रमाणों से जानते हैं। जब रावण सीता को उठाकर ले गया तो बाली वध के पश्चात् सुग्रीव का राज्याभिषेक किया गया तो उसने श्रीराम से कहा कि थोड़े ही दिनों में वर्षाऋतु शुरु होनेवाली है अत: तब तक आप थोड़ी प्रतीक्षा कीजिये। वर्षा के बाद सीता की खोज प्रारम्भ की जायेगी। जब वर्षाऋतु बीत गई और सुग्रीव ने सीता को खोजने का कोई कार्य न किया तो राम ने लक्ष्मण को किष्किन्धा में भेजा।

सूर्यातपाक्रमणनष्टपंका भूमिः समुत्पादितसान्द्ररेणुः।
अन्योन्यवैरामर्षायुतानामुद्योगकालोऽद्य नराधिपानाम्॥
(२४।८)

राम ने लक्ष्मण से कहा कि-सूर्य की प्रचण्ड गर्मी से कीचड़ सूखकर नष्ट होगई है भूमि ने घनी धूल उत्पन्न करदी है। परस्पर वैर रखनेवाले राजाओं का उद्योग का समय आगया। लक्ष्मण ने किष्किन्धा में जाकर सुग्रीव से कहा कि-

अनार्यस्त्वं रामस्य न तत्प्रतिकरोषि तत्॥ (१०)

हे वानर तुम अनार्य, नीच, कृतघ्न और झूठे हो, क्योंकि श्रीराम द्वारा अपना कार्य करवाकर तुम उनका कार्य नहीं कर रहे हो।

ननु रामकृतार्थेन त्वया रामस्य वानर।
सीताया मार्गणे यत्नः कृर्त्तव्यः कृतिमिच्छता॥
(११)

हे वानर जब श्रीराम ने तुम्हारा कार्य किया है तब सफल मनोरथ तुम्हें राम का कार्य भी उनके उपकार का स्मरण रखते हुए करना चाहिये। अर्थात सीता की खोज प्रारम्भ करो। लक्ष्मण द्वारा मार दिये जाने की धमकी दिये जाने पर सुग्रीव ने इस कार्य को अर्थात् सीता की खोज के कार्य को हाथ में लिया। सारी वानर सेना के मुखियों को बुलाकर प्रत्येक दिशा में योग्य व्यक्तियों को भेजा। वस्तुत: विजयदशमी का त्योहार आर्यो का बहुत पुराना त्योहार है, इस दिन तो सीता की खोज प्रारम्भ हुई थी। सीता को खोजने में वानरों को पर्याप्त समय लगा और राम रावण का युद्ध तो-

उत्तरफाल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन योज्यते।
अभिप्रयाय सुग्रीवः सर्वानीकसमावृतः॥ (४।५)

'आज उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र है। कल चन्द्रमा हस्त नक्षत्र से योग करेगा अत: हे सुग्रीव हम समस्त सेना को लेकर आज ही प्रस्थान करें।' गोस्वामी तुलसीदास ने भी रावण का वध चैत्र मास की चतुर्दशी को स्वीकार किया है।

चैत्र मास चौदस जब आई,
मर्यो दशानन जग दुखदाई॥

रावण जब इन्द्रजित् के वध से दुखी होकर सीता को मारने के लिये गया तो उसके मन्त्री सुपार्श्व ने उसे रोका और कहा कि आज चैत्र मास, कृष्णपक्ष की चतुर्दशी है। कल अमावस्या को सेना सहित युद्ध के लिये जाइये।

तनिक विचारिये! रामायण की अन्त:साक्षी दशहरे के दिन रावण के मरने का खण्डन कर रही है।

रावण वीर था, बलशाली और बुद्धिमान् भी था, परन्तु आचारहीनता के कारण वह राक्षस बन गया। आज दशहरे के दिन रावण के पुतले को आग लगाने के क्या वास्तव में इस कार्य के अधिकारी हैं? यह एक गलत परम्परा है इसे छोड़ देना चाहिये।

१०. क्या राम दिवाली को अयोध्या आये थे :-दूसरा त्यौहार दीपावली भी इसी भावना से मनाया जाता है कि जब रावण का वध करके सीता को लेकर श्रीराम वापस अयोध्या लौटे थे तो अयोध्यावासियों ने दीपमाला करके उनका स्वागत किया था यह बात सत्य से नितान्त परे है। राम को वनवास चैत्र मास में हुआ था। मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी जान सकता है कि चौदह वर्ष चैत्र मास में ही पूरे होंगे। राज्याभिषेक की तैयारी चैत्र मास में की गई थी :-

चैत्र श्रीमानयं मासः पुण्यपुष्पितकाननः।
यौवराज्याय रामस्य सर्वत्रैवोपकल्प्यहताम्॥
(अयो०का० ३।४)

'इस श्रेष्ठ पवित्र चैत्र मास में जिसमें वन पुष्पों से सुशोभित होरहे हैं श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी कीजिये' ये वाक्य वशिष्ठ आदि ब्राह्मणों से दशरथ ने कहे थे। श्रीराम को चैत्र में वनवास हुआ और चौदह वर्ष बाद चैत्र में ही रावण वध हुआ तो क्या राम दीपावली अर्थात् कार्तिक मास तक वहीं बैठे रहे? एक और बात है कि उधर भरत की भी प्रतिज्ञा थी कि यदि चौदह वर्ष से एक दिन भी अधिक हुआ तो मैं अग्नि में कूदकर अपने प्राण देदूंगा। अत: चैत्र से लेकर कार्तिक तक राम का वन में रहना संभव ही नहीं था। अत: दीपावली को राम का अयोध्या आना कोरी गप्प है।

दीपावली का महत्त्व तो कुछ और ही है। इसे नवसस्येष्टि या नवान्नेष्टि (नवीन+सस्य=फसल की इष्टि अर्थात् यज्ञ) अर्थात् नवीन फसल के लिये अन्न वा यज्ञ की परम्परा है। यह पर्व कार्तिक मास बदि अमावस्या को मनाया जाता है। जैसे शारदीय आश्विन पूर्णिमा की चांदनी वर्षभर की १२ पौर्णमासियों में सर्वोत्कृष्ट होती है वैसे ही कार्तिक मास की अमावस्या का अन्धकार भी वर्ष की अमावस्याओं में सबसे अधिक होता है। अत: इन अवसरों पर विशेष यज्ञों द्वारा रोगों का नाश करने हेतु यह विधान प्राचीन ऋषियों का है।

११. उत्तरकाण्ड :-अब एक मुख्य बात का विचार करके हम अपने लेख को विराम देना चाहेंगे। वह उत्तर रामायण-जिसमें सीता को वनवास, राम तथा लव-कुश का युद्ध, सीता का धरनी में समाना, पूरी अयोध्या नगरी का राम समेत सरयू में डूब मरना आदि आदि ये सभी घटनायें उत्तर रामायण की हैं। रामायण का यह भाग प्रक्षिप्त है। इसका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं है। रामायण का अर्थ है-राम+अयन। अयन कहते हैं वृत्ताकार गति को। तो देख लीजिये। रामायण अयोध्या से प्रारम्भ होती है और सारा घटनाचक्र पूरा करने के पश्चात् राम के वापस अयोध्या में आने पर समाप्त। अर्थात् जहां से शुरु हुई वहीं समाप्त होगई।

उपरोक्त शंकाओं के अतिरिक्त और भी बहुतसारे ऐसे स्थल हैं जिन पर पूर्ण विचार की आवश्यकता है। लेकिन अपनी अल्पबुद्धि द्वारा केवल उन्हीं विषयो का स्पर्श किया है जो जन-साधारण में अधिक प्रचलित हैं।

उपरोक्त लेख को पढ़कर तथा सोचकर लोगो में सच्चाई का प्रचार करके अपने इतिहास को सुरक्षित तथा शुद्ध रखने का प्रयास सभी को करना चाहिये। आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान्, मनीषी, गवेषक पूज्यपाद स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज ने इस विषय में जो श्लाघनीय, श्रेष्ठ व पवित्र कार्य किया है उसके लिये पूरी आर्यजाति सदैव उनकी ऋणी रहेगी। रामायण व महाभारत पर श्री स्वामीजी महाराज का पूरा-पूरा अधिकार है। वास्तविकता जानने के लिये उनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थ घर-घर में संग्रहणीय है। ●

वेदप्रचार

पं० रामकुमार जी आर्य भजनोपदेशक की भजन मण्डली द्वारा नवम्बर मास में जिला पानीपत, जीन्द, करनाल इत्यादि जिलों के ग्रामों में वैदिक प्रचार किया गया विवरण निम्न प्रकार है-

(१) आर्यसमाज गोली जिला करनाल में वैदिक प्रचार हुआ स्त्री पुरुषों व नवयुवको की हाजिरी रोजाना बढ़ती रही। श्री सुभाष जी आर्य सुपुत्र वैद्य मंगलदेव जी आर्य के प्रांगण में यज्ञ हुआ। आर्यसमाज गोली के सभी अधिकारियों ने यज्ञ में भाग लिया। कन्या गुरुकुल मोर माजरा की छात्राओं द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ हर साल नवम्बर में प्रचार करवाने की मांग की गई प्रचार का अच्छा प्रभाव रहा। सभा के लिये १९०० रु० की राशि दी गई।

(२) ग्राम मोर माजरा करनाल में प्रचार हुआ। श्री मेवासिंह जी व डा० कलीराम जी आर्य का विशेष योगदान रहा। सभा के लिए २८१ रु० की धनराशि दी गई।

(३) ग्राम खातला जिला जीन्द में श्री रामफल जी भू.पू. सरपंच, श्री सूरजमल जी व अन्य दानियों ने सभा के लिए ८७१ रु० की राशि प्राप्त हुई।

(४) नवीन आर्यसमाज साहनपुर जिला जीन्द में वैदिक प्रचार हुआ। प्रधान श्री प्रेमचन्द जी आर्य व उमेदसिंह जी तथा अन्य आर्यवीरों का विशेष योगदान रहा। सभा के लिए ५५० रु० की राशि दी गई।

(५) ग्राम जैजैवन्ती जिला जीन्द में खूब चाव के साथ लोगों ने प्रचार सुना। श्री धर्मवीर जी सुपुत्र डाक्टर रतनसिंह जी के सहयोग से प्रचार सफल हुआ। श्री सरदारासिंह जी आर्य तथा बलवीरसिंह जी आर्य के भी मधुर भजन हुये। बलवीरसिंह जी आर्य के भजनों को बहुत ही पसन्द किया। प्रचार महिलाओं ने भी बड़ी रुचि से सुना। सभा के लिए १६४२ रु० की राशि दी गई।

(६) ग्राम गतौली जिला जीन्द में श्री जिलेसिंह आर्य प्रधान व श्री प्रेमसिंह जी आर्य के विशेष सहयोग से वैदिक प्रचार सफल हुआ। ग्राम के बुजुर्गों ने भी बहुत प्यार दर्शाते हुए प्रचार के लिये जल्दी-जल्दी मांग की प्रचार का बहुत ही अच्छा प्रभाव रहा। सभा के लिए १२०५ रु० की राशि दी गई।

रामायण के ११ विचारणीय प्रसंग

रामफलसिंह आर्य, ८७/एस-३, बी.एस.एल. कालोनी, सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि.प्र.)१७४४०२

(गतांक से आगे)

४. अहल्या उद्धार : गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या के साथ इन्द्र धोखे से (गौतम ऋषि का रूप बनाकर) व्यभिचार कर गया। तब गौतम ऋषि ने इन्द्र को शाप दिया कि तू नपुंसक हो जायेगा और अहल्या को प्रचलित कथा के अनुसार पत्थर बना दिया। लेकिन रामायण की साक्षी देखिये :-

तथा शप्तवान् स वै शक्रमहल्यामपि शप्तवान्।
वस वर्ष सहस्राणि तपयन्ती भस्मशायिनी॥
(२३।१३)

'इन्द्र को शाप देकर गौतम ने अहल्या को भी शाप दिया कि कठोर तप करती हुई और भूमि के ऊपर शयन करती हुई बहुत वर्षों तक यहां निवास कर।' यहां पर अहल्या को पत्थर बनाने का कोई वर्णन नहीं है। न श्रीराम का उनको पैर लगाकर उनका उद्धार करने का वर्णन है। देखिये प्रमाण :-

ददर्श च महाभागां तपसा द्योतितप्रभाम्।
लोकैरपि समागम्य दुर्निरीक्ष्यां सुरासुरैः॥
राघवौ तु ततस्तस्याः पादौ जगृहतुर्मुदा॥ (१६)

आश्रम में प्रवेश करके उन्होंने देखा कि अहल्या तप के तेज से देदीप्यमान होरही थी और सुर तथा असुर कोई भी उससे दृष्टि नहीं मिला सकता था। श्रीराम और लक्ष्मण ने प्रसन्न होकर उसके पैर छुए। विचारिये पाठकगण! अहल्या ऋषि की पत्नी थी। श्रीराम उसे पैर कैसे लगा सकते थे? उपरोक्त वर्णन कुछ और ही बतला रहा है। अहल्या को पैर लगाने की अपेक्षा वे दोनों तो स्वयं उसके पैर छूकर आशीर्वाद लेरहे हैं। इतना तो हो सकता है कि गौतम ऋषि के शाप के कारण अहल्या के आश्रम में कोई आता जाता न हो। राम लक्ष्मण तथा विश्वामित्र ने वहां प्रवेश करके इस बन्धन को तोड़ दिया हो। जैसाकि आजकल भी गांव की पंचायत किसी व्यक्ति को दण्डित करने के लिए उसे जातिबहिष्कृत करके उसके साथ बोलचाल बन्द करदे। ऐसी ही स्थिति उस समय भी रही होगी।

५. लक्ष्मण रेखा :- मृग बने राक्षस मारीच को पकड़ने के लिये राम गये और काफी भागदौड़ के बाद उन्होंने मारीच को बाण मारा तो मारीच मरते-मरते राम के स्वर में हा लक्ष्मण! हा सीते! बोला। राम को विपत्ति में जानकर सीता ने लक्ष्मण को उनकी सहायतार्थ भेजना चाहा। परन्तु लक्ष्मण सीता को अकेली छोड़कर जाना नहीं चाहता था। तब पति के प्रेम के कारण अपनी सोचने समझने की शक्ति को खोकर सीता ने लक्ष्मण को कुवचन कहे। हारकर लक्ष्मण जाने को तैयार हुआ। यहां लोगों में यह धारणा है कि उसने जाने से पहले सीता के चारों ओर एक रेखा खींचदी। वह रेखा ऐसी थी कि जो कोई बाहर से अन्दर जाने की कोशिश करेगा वह जल मरेगा परन्तु सीता अन्दर से बाहर आ सकती थी। वाल्मीकि रामायण में इसका कोई उल्लेख नहीं है, देखिये प्रसग .-

गमिष्ये यत्र काकुत्स्थः स्वस्ति ते अस्तु वरानने।
रक्षन्तु त्वां विशालाक्षि समग्रा वनदेवताः॥
(२७।३२)

निमित्तानि हि घोराणि यानि प्रादुर्भवन्ति मे।
अपि त्वां सह रामेण पश्येयं पुनरागतः॥ (३३)

ततस्तु सीतामभिवाद्य लक्ष्मणः।
कृताञ्जलिः किञ्चिदभिप्रणम्य च।
अन्वीक्षमाणो बहुशश्च मैथिलीं
जगाम रामस्य समीपमात्मवान्॥ (३२)

अर्थात् हे शुभानने! मेरी जाने की इच्छा नहीं है परन्तु तुम्हारे दुराग्रह के कारण मैं अब राम के पास जाता हूं। तुम्हारा कल्याण हो। हे विशालाक्षि! इस देवता तुम्हारी रक्षा करें। इस समय बन में भयंकर अपशकुन होरहे हैं। भाई राम के साथ वापस लौटकर मैं पुन: आपका दर्शन करूं, यही मेरी शुभकामना है। तदनन्तर जितेन्द्रिय लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर और झुककर सीता को प्रणाम किया और बार-बार पीछे मुड़कर जाते हुए सीता को देखते-देखते राम को लाने के लिये चल पड़े। अत: लक्ष्मण का कोई रेखा खींचकर जाना जिससे अन्दर वाला तो बाहर आ सके परन्तु बाहर वाला अन्दर न जा सके बेसिर-पैर की बात है। रामायण में इसका कोई उल्लेख नहीं।

६. हनुमान जी बन्दर थे? :- श्रेष्ठ, वीर और गुणवान् मनुष्यों के साथ कुछ अतिशयोक्तियों का जुड़ जाना तो समझ में आता है परन्तु महापुरुषों की दुर्गति करना तो कोई इन ढोंगी, मूर्ख और तथाकथित देवताओं के भक्तों से जाने। श्रीकृष्ण को गोपियों के संग रास रचानेवाला, चोर, जार शिखामणि आदि न जाने क्या-क्या उपाधियां दे डालीं। हनुमान आदि वीरों के साथ तो और भी बुरा किया गया। उन्हें तो मनुष्य ही न रहने दिया अपितु जानवर बना दिया। हनुमान, सुग्रीव, अंगद तथा बाली आदि को बन्दर का रूप दे डाला। सबके पूंछ भी लगादी। तरस आता है उन लोगों की बुद्धि पर जो अपने ऐतिहासिक महापुरुषों की ऐसी दुर्गति बनाते हैं। हनुमान से राम तथा लक्ष्मण की मुलाकात उस समय प्रथम बार हुई जब वे दोनों सीता की खोज करते हुए पम्पा सरोवर पर घूम रहे थे तो हनुमान सुग्रीव के कहने पर ऋष्यमूक पर्वत से उतरकर राम के पास आये और उनसे बात की। अनेक प्रकार से दोनों भाइयों की प्रशंसा करके हनुमान ने अपना परिचय पवनपुत्र तथा सुग्रीव के मन्त्री के रूप में दिया। फिर राम ने हनुमान की बड़ी प्रशंसा की और लक्ष्मण से कहा-

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेदविदुषः शक्यमेवं प्रभाषितुम्॥
(कि० काण्ड १।२८)

ये हनुमान उच्चकोटि के विद्वान् हैं क्योंकि ऋग्वेद के अध्ययन से अनभिज्ञ, यजुर्वेद के ज्ञान से हीन और सामवेद के ज्ञान के शून्य व्यक्ति ऐसी परिष्कृत बातें नहीं कर सकता।

नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्यावहरतानेन न किञ्चिदपशब्दितम्॥ (२९)

निश्चय ही इन्होंने सम्पूर्ण व्याकरण का अनेक बार अध्ययन किया है यही कारण है कि इनके बोलते समय इन्होंने कोई त्रुटि नहीं की।

पाठकगण तनिक विचारिये! श्रीराम हनुमान जी के बारे में क्या कह रहे हैं? क्या बन्दर वेद तथा व्याकरण के विद्वान् होते हैं? इतना ही नहीं श्रीराम ने हनुमान के शारीरिक अंगों की बड़ी प्रशंसा की है। हनुमान वानर जाति के थे जो प्राय: जंगलों में रहती थी, न कि बन्दर थे। उन्हें बन्दरवाला लाल मुख तथा पूंछ लगाकर दिखाना महामूर्ख लोगों का काम है। मजेदार बात तो यह है कि हनुमान, अंगद, सुग्रीव, बाली आदि को तो पूंछें लगादी हैं परन्तु सुग्रीव आदि की पत्नी को कोई पूंछ नहीं है। क्या बन्दरों का विवाह मानवियों से हुआ था! कैसा घोर अज्ञान है?

७. रावण के दश शिर :-जहां भी रावण का चित्र आता है उसे दश शिरोंवाला दिखाया जाता है। रावण को दशानन कहते हैं अर्थात् दस मुंहों वाला। अगर दशानन का अर्थ दश सिरोंवाला है तो दशरथ का क्या अर्थ है? दश रथों वाला? क्या दशरथ के पास दश ही रथ थे? दशानन का अर्थ यह है कि उसकी आज्ञा दसों दिशाओं में चलती थीं। रावण विश्रवा मुनि का पुत्र था और सभी व्यक्तियों की भांति उसके भी दो हाथ तथा एक सिर व एक मुह ही था। राम रावण युद्ध में तो रावण के सौ सिर काटे जाने की बात भी रामायण में लिखी है :-

एवमेकशतं छिन्नं शिरसां तुल्यवर्चसाम्।
न चैव रावणस्यान्तो दृश्यते जीवितक्षये॥
(५९।१७)

श्रीराम ने एक ही आकार प्रकार के रावणों के सौ सिर काट डाले किन्तु फिर भी न तो रावण मरा और न ही उसके सिरों का अन्त हुआ।

पाठकगण! रावण के ये सौ सिर नकली थे। वह बड़ा विद्वान् और मायावी व्यक्ति था। उसने राम का नकली सिर और बाण बनवाकर सीता को संशय में डाल दिया था। राम के साथ पच्चीस वर्ष तक रहनेवाली सीता भी असली और नकली न को पहचान पाई। अत: रावण का दस सिरोंवाला बताना कोरी गप्प है।

८. हनुमान का पहाड़ उठाकर लाना :-राम रावण युद्ध में दो ऐसे अवसर आये जबकि हनुमान द्वारा ओषधियां लाई गईं। एक बार जब कुम्भकर्ण के वध के पश्चात् इन्द्रजित् राम और लक्ष्मण से युद्ध करने आया तो उसने सारी सेना में अफरा-तफरी मचा दी। वह राम लक्ष्मण तथा अन्य यूथपतियों को युद्ध में परास्त कर घायल करके तथा कितनों को मारकर वापस चला गया। तब हनुमान को जाम्बवान् द्वारा ओषधियों का पता बताने पर वह हिमालय पर्वत से बूटियां लाने गया लेकिन अपने भुलक्कड़पन के कारण उन बूटियों की पहचान भूल बैठा। तब उसने काफी सारी ओषधियां उखाड़ली और ले आया। दूसरी बार जब रावण को शक्तिप्रहार से लक्ष्मण मरणासन्न अवस्था में पहुंच गया तो वैद्य सुषेण जो कि एक उच्चकोटि का वैद्य था, उसने हनुमान से कहा कि तुम हिमालय के उस स्थान पर जाओ जिसका पता जाम्बवान् ने तुम्हें बताया था और उसके शिखर पर उगनेवाली अमुक-अमुक बूटी को लेआओ। हनुमान वहां जाकर उनकी पहचान फिर भूल गया अत: उन्होंने पर्वत शिखर पर उगनेवाले ओषधिसमूह को ही उखाड़ लिया-

इति सञ्चिन्त्य हनूमान् गत्वा क्षिप्रं महाबलः।
फुल्लानातरुगणं समुत्पाट्य महाबलः।
आपपात गृहीत्वा तु लंका प्राप्तवान् वानरः॥
(५६।१२)

ऐसा निश्चय कर महाबलि हनुमान पर्वत शिखर पर पहुंचे और विविध प्रकार से पुष्पित वृक्षों को उखाड़ उन्हें लेकर आकाश मार्ग से उड़ चले और लंका में पहुंचे। जहां सुषेण ने उनका प्रयोग करके

॥ ओ३म् ॥

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा प्रवर्तित

विद्वत् सेवा निधि

(वैदिक जीवन को समर्पित महानुभावों की सेवार्थ)

यह सर्वविदित है कि आर्यजगत् के अनेक विद्वान् / उपदेशक / प्रचारक / भजनोपदेशक / कार्यकर्ता जीवन भर आर्यसमाज की सेवा का कार्य करने के उपरान्त कई बार असहाय स्थिति में विपन्नता व कष्टमय जीवन बिताते हैं। ऐसी अवस्था में उन्हें कुछ सहायता पहुंचा सकने के ध्येय से कार्यक्रम आरम्भ करने की महती आवश्यकता अनुभव की जाती रही है और जो संगठन के लिये आवश्यक है। इस दिशा में प्रयत्नशील होकर आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने उनके प्रति कृतज्ञतास्वरूप एक निधि स्थापित करने का निर्णय किया है जो आर्यसमाज सान्ताक्रुज के अगले वार्षिकोत्सव दिनांक २६ जनवरी, २००३ से प्रभावी होगी।

इन निधि का उद्देश्य आर्यजगत् के ऐसे विद्वान् / उपदेशक / प्रचारक / भजनोपदेशक / कार्यकर्ताओं के प्रति कृतज्ञतास्वरूप प्रतिमाह एक निश्चित धनराशि समर्पित करना है जो उनकी वृद्धावस्था, कायिक असमर्थता या रुग्णता आदि के कारण उत्पन्न असहायता की स्थिति को प्राप्त हुए हों। ऐसे महानुभावों के दिवंगत होने के बाद उनकी धर्मपत्नी भी इस सहयोग की पात्र हो सकेंगी।

इस सहयोग राशि का सदुपयोग आर्यसमाजों के पदाधिकारियों, विद्वानों, उपदेशकों एवं आर्य पत्र-पत्रिकाओं द्वारा पर्याप्त जानकारी एकत्र करके योग्यतम सत्पात्रों हेतु किया जाएगा।

इस निधि में दानदाताओं को निधि के सदस्य के रूप में मान्यता प्रदान की जाएगी। दान एक मुश्त, वार्षिक, अर्ध वार्षिक, त्रैमासिक या मासिक रूप में प्रदान किया जा सकता है जो आर्यसमाज सान्ताक्रुज में एक अलग कोष में जमा किया जायेगा। दान की कोई न्यूनतम अथवा अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं है। इस पुनीत कार्य हेतु प्रत्येक व्यक्ति का दान अपेक्षित है, जिससे कि संगठन हेतु इस कार्य को विहंगम स्वरूप प्रदान किया जा सके। पात्रता के नियम व सत्पात्र का निश्चय आर्यसमाज की अन्तरंग सभा या उसके द्वारा गठित नियमावली के अधीन किया जाएगा।

सान्ताक्रुज आर्यसमाज के अन्तरंग सभा के सदस्यों ने एक लाख रुपये का वचन देकर इस कार्य का शुभारम्भ कर दिया है। हर्ष का विषय है कि इस कार्यक्रम को योग्य प्रतिसाद मिल रहा है। सभी दान आयकर की धारा 80 जी के अंतर्गत छूट के पात्र होंगे। कृपया सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई के नाम पर ही भेजें।

हम सभी के लिये वैदिक जीवन को समर्पित महानुभावों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु यह एक पुनीत सुअवसर है।

विनीत

डा. सोमदेव शास्त्री (प्रधान)

संगीत आर्य (महामंत्री)

आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई

आर्यसमाज भवन, विट्ठलभाई पटेल (लिंकिंग) रोड, सान्ताक्रुज (प.) मुम्बई-400 054

दूरभाष : 266602075, दूरभाष व फैक्स : 2660 2800. E-mail : aryasamajsantacruz@hotmail.com

महर्षि दयानन्द का मन्तव्य

वेदों की उत्पत्ति

❑ डा सुदर्शनदेव आचार्य, अध्यक्ष संस्कृत सेवा संस्थान, हरिसिंह कालोनी, रोहतक

(गताक से आगे)

वेदविषयक सिद्धान्त

(१) ऋग्वेद आदि चार संहिता ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान होने से स्वत: प्रमाण है और शेष उनके ब्राह्मण ग्रन्थ आदि समस्त ग्रन्थ परत· प्रमाण हैं।

(२) ये ऋग्वेदादि चार संहिता ग्रन्थ सृष्टि के प्रारम्भ में अग्नि आदि चार पवित्रतम ऋषियों के हृदय मे ईश्वर ने प्रकाशित किये। इस विषय में वेदादिशास्त्रों के शब्द प्रमाण उपलब्ध है।

(३) ब्रह्माजी वेदों के कर्त्ता नहीं थे अपितु उन्होंने अग्नि आदि चार ऋषियों से ऋग्वेद आदि चार वेदों का अध्ययन किया तथा अन्य ऋषियों को पढ़ाया भी था।

(४) वेदज्ञान के प्रदान में ईश्वर ने कोई पक्षपात नहीं किया क्योंकि जो उस समय सर्वाधिक पवित्र आत्मा ऋषि थे उन्हीं के हृदय में वेदों का प्रकाश किया, अन्यों के हृदय में नहीं।

(५) वेदों की भाषा सस्कृत जो कि किसी देश-विदेश की भाषा नहीं है। इसके अध्ययन में सभी प्रकार का समान प्रयत्न करना पड़ता है। इससे भी ईश्वर में पक्षपात दोष नहीं आता है।

(६) निराकार ईश्वर से शब्दरूप वेद की उत्पत्ति हुई है। निराकार ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। वह प्राण आदि साधनों के बिना स्वसामर्थ्य से प्राण आदि के कार्य कर सकता है। मुख आदि अवयवों के बिना भी मन में अनेक प्रश्न-उत्तर होते रहते हैं। जब वह निराकार ईश्वर विराट् जगत् की रचना कर सकता है तो वेदों की रचना में क्या शंका है।

(७) वेदों के वेद और श्रुति दो नाम ज्ञान के विधान और श्रवण परम्परा के कारण से हुये हैं।

(८) मनुष्य अल्पज्ञ होने से सर्वज्ञान वेद की रचना नहीं कर सकते।

(९) मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान वेदरचना में स्वतन्त्र कारण नहीं हो सकता। वह निमित्त कारण में साधनमात्र है।

(१०) अग्नि आदि ऋषि भी वेदों के कर्त्ता नहीं हैं क्योंकि गायत्री आदि छन्द, षड्ज और उदात्त आदि से युक्त सम्पूर्ण ज्ञानमय वेद की रचना का सामर्थ्य केवल ईश्वर में है, ऋषियों में नहीं। वेदाध्ययन के पश्चात् ही ऋषियो ने व्याकरण शास्त्रों की रचना की है।

(११) संस्कृतभाषामय वेदों का अर्थ भी समाधिस्थ ऋषियों को ईश्वर ही जनाता है।

(१२) जैसे परमात्मा ने अपनी प्रजा रूप जगत् के कल्याण के लिये जगत् के पृथिवी आदि सुखकारक पदार्थ बनाये हैं वैसे उसके कल्याण के लिये सर्वोत्तम सुखकारक वेद का ज्ञान भी प्रदान किया है।

(१३) ईश्वर नित्य है अत: उसका ज्ञान वेद भी नित्य है। नित्य पदार्थ के गुण भी नित्य ही होते हैं।

(१५) ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हैं। वे वेद (ब्रह्म) के व्याख्यान ग्रन्थ होने से ब्राह्मण कहाते हैं। व्याख्यान मूल से भिन्न होता है।

(१६) वेदों और जगत् की उत्पत्ति में आज तक १९६०८५३०९९ वर्ष व्यतीत हुये हैं और यह १०० वर्ष चल रहा है।

(१७) मनु, कणाद, गोतम, पतञ्जलि कृष्णद्वैपायन (वेदव्यास) आदि ऋषियों ने वेदों का बहुत सम्मान किया है। वेदों को स्वत: प्रमाण और शेष ग्रन्थों को परत: प्रमाण मानते हैं।

(१८) फर्दून दादाचन (पारसी विद्वान्) आचार्य मुकुन्देन्दु (जैन मतावलम्बी) कविवर लोबा (अरबदेशीय विद्वान्) और दाराशिकोह (यवन मतवादी) आदि अर्वाचीन विद्वानों ने भी वेदों को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार किया है।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की तैयारियां जोरों पर

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव तथा आर्यसमाज सेक्टर ९-९ए के संयुक्त तत्त्वाधान में गुड़गांव की समस्त आर्यसमाजों द्वारा अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस २०, २१ व २२ दिसम्बर २००२, शुक्रवार, शनिवार व रविवार को बड़ी धूमधाम से समारोहपूर्वक आयोजित किया जारहा है। तीन दिन का यह कार्यक्रम सब्जी मण्डी सेक्टर-७ एक्स गुड़गांव में मनाया जायेगा जिसमें आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी जीवनानन्द सरस्वती, स्वामी शिवानन्द बुलन्दशहर, स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, डा० महावीर मीमांसक, डॉ० महेश विद्यालंकार, श्रीमती डॉ० सुधा यादव सांसद, श्री सत्यपाल आर्य, पं० योगेशदत्त आर्य सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पधार रहे हैं। २० दिसम्बर को विशाल जुलूस निकाला जायेगा।

आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब के प्रधान पं० हरवंशलाल शर्मा दिवंगत

आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब के प्रधान एवं गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति पं० हरवंशलाल शर्मा जी का निधन होगया। वे ८३ वर्ष के थे। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती राजकुमारी जी एवं तीन विवाहित सुपुत्र श्री सुदर्शनकुमार जी, श्री सुरेश जी तथा श्री नरेश जी, विवाहित सुपुत्री सरला शर्मा एवं पौत्र आदि सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे। उनका अन्तिम संस्कार जान्धर में पूर्ण वैदिकरीति के साथ किया गया। उनकी अन्तिम यात्रा में आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब तथा उससे सम्बद्ध विभिन्न आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा के मन्त्री तथा दिल्ली आर्यप्रतिनिधिसभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान एवं आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के मन्त्री आचार्य यशपाल जी अन्तिम संस्कार में भाग लेने के लिए जालन्धर पहुंचे। इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० स्वतन्त्रकुमार के अतिरिक्त परिद्रष्टा आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री, डॉ० जयदेव प्रस्तोता, डॉ० महावीर, डॉ० कश्मीरासिंह, डॉ० श्रवणकुमार, डॉ० जोशी, सम्पदा अधिकारी करतारसिंह, फार्मेसी से डॉ० राजकुमार रावत आदि उपस्थित थे।

चम्बा से स्वामी सुमेधानन्द जी दीनानगर से स्वामी सदानन्द जी तथा आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब की कार्यकारिणी तथा अन्तरंग सदस्य, सम्बद्ध शिक्षण संस्थाओं के अधिकारीगण एवं पंजाब प्रान्त के प्रमुख आर्यजन उपस्थित थे।

अन्तिम संस्कार के बाद आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब की एक आपात अन्तरंग बैठक बुलाई गई जिसमें शोक प्रस्ताव पारित किया गया तथा पंजाब सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुदर्शनकुमार शर्मा को आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब का प्रधान सर्वसम्मति से चुना गया।

श्री हरवंशलाल शर्मा जी की श्रद्धांजलि सभा ५ दिसम्बर २००२ को सम्पन्न हुई। जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टेन देवरत्न आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन एवं आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा की तरफ से स्वामी ओमानन्द जी सभाप्रधान का शोक सन्देश सभामन्त्री आचार्य यशपाल जी ने व्यक्त किया। प्रो० शेरसिंह जी बीमार होने के कारण नहीं जासके उन्होंने अपने प्रतिनिधि के रूप में श्री सूबेसिंह जी पूर्व सभामन्त्री तथा श्री वेदव्रत जी शास्त्री कार्यकारी सभाप्रधान को भेजा। स्वामी इन्द्रवेश जी पूर्व कार्यकारी सभाप्रधान ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

शिक्षा का नाश

अर्धनग्न कर लड़की को फैशन-शो कराते हैं।
लिहाज शर्म दी तार मंच पै नंगे नाच-नचाते हैं॥
मां को मम्मी पिता को डैडी हाय-हाय बतलाते हैं।
हाथ हिला के लड़का-लड़की बाय-बाय कर जाते हैं॥
कालेज का ले नाम सिनेमा-क्लबों में जाते हैं।
फिल्मी गाने शीन देख कै जीवन नरक बनाते हैं॥
चिकन-मीट अंडे खावैं गंदे गाने गाते हैं।
देर रात तक टीवी देखें जल्दी नहीं उठ पाते हैं॥
लड़का-लड़की बने मॉडर्न पॉप डांस पै मरते हैं।
आर्य सभ्यता छोड़ दई सब पश्चिमी नृत्य करते हैं॥
वैदिक संस्कृति बदल गई फूहड़ नाच नचाते हैं।
ताश चौपड़ जूआ खेलैं दारू पीवैं प्याले हैं॥
सदाचार का काम करैं ना अनाचार फैलाते हैं।
जो कोई उनने समझावै उल्टी धौंस जमाते हैं॥
शिक्षा का हुआ नाश देश में सत्यानाश कराते हैं।
आर्य वैदिक धर्म गया रुब भ्रष्टाचार फैलाते हैं॥

-रा... बंसल, चरखीदादरी (भिवानी)

वैचारिक क्रान्ति महासम्मेलन

हरयाणा आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में १५ दिसम्बर २००२ को पंचायत भवन पलवल में वैचारिक क्रान्ति महासम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। जिसमें धर्मांतरण, जातिवाद, आतंकवाद, गोहत्या, धार्मिक पाखण्ड आदि मुद्दों पर विचार किया जायेगा। इस अवसर पर स्वामी गोरक्षानन्द जी महाराज, श्री उदयभान जी विधायक हसनपुर क्षेत्र का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जायेगा। आर्यसमाज बहीन के प्रधान श्री भगवान सहाय जी रावत विधायक, सम्मेलन का ध्वजारोहण करके उद्‌घाटन करेंगे। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रधान श्री जगवीरसिंह एडवोकेट वैचारिक क्रान्ति महासम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे। श्री राजेन्द्रसिंह बीसला विधायक प्रधान वेद प्रचार मण्डल फरीदाबाद, डॉ० आर्यवीर भल्ला प्राचार्य डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल फरीदाबाद सम्मेलन में मुख्य अतिथि होंगे। वैचारिक क्रान्ति महासम्मेलन की पूर्व संध्या पर हरयाणा आर्य युवक परिषद् की आवश्यक बैठक १४ दिसम्बर शनिवार को रात्रि में ८ बजे आर्यसमाज मंदिर जवाहर नगर पलवल में होगी।

-शिवराम विद्यावाचस्पति, अध्यक्ष

योगस्थली आश्रम में ६०वां वैदिक सत्संग

दिनांक २४-११-२००२ को योगस्थली आश्रम, महेन्द्रगढ़ में प्रतिमास की भांति बृहद्‌यज्ञ एवं वैदिक सत्संग महन्त आनन्दस्वरूप दास संत कबीर मठ सोहला की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। यज्ञ का कार्य मास्टर वेदप्रकाश आर्य मण्डलपति आर्य वीर दल शाखा महेन्द्रगढ़ ने करवाया। यजमानों का स्थान श्रीमती गंगादेवी धर्मपत्नी कंवर राजेन्द्रसिंह तंवर एवं श्रीमती जसवन्ती देवी धर्मपत्नी श्री रामकंवार सिंह यादव ने ग्रहण किया।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने अपने प्रवचनों में बताया कि महर्षि दयानन्द के उपकारों को हमें नहीं भूलना चाहिए, अपने जीवन में अखण्ड ब्रह्मचारी रहे तथा पूर्ण योगाभ्यास कर अपने योग की दिव्य शक्ति से वेदों का भाष्य कर यथार्थ मार्गदर्शन कराया, तथा जितने भी मन्त-मतान्तर-पाखण्ड-अविद्या-अंधकार जड़पूजा एवं नाना प्रकार की कुरीतियों को ज्ञान रूपी झाडू लेकर एक ही साथ साफ करते चले गये। आज हमें महर्षि दयानन्द के आदर्शों को नहीं भूलकर अपने त्याग और तप से उनके सिद्धान्तों को सफल करने का प्रयत्न करना चाहिए।

सभा की समाप्ति के पश्चात् स्वामी जी ने ६३ रोगियों का उचित निदान करके नि:शुल्क दवाई वितरण की और शुद्ध घी से निर्मित प्रसाद वितरण किया। -हरद्वारीलाल नम्बरदार, प्रधान आर्यसमाज, नठेड़ा

आ०स० नं० ३ एन.आई.टी. फरीदाबाद का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज नं० ३ एन.आई टी. फरीदाबाद का वार्षिकोत्सव पर पूर्णाहुति अभूतपूर्व ढंग से सम्पन्न हुई। इस अवसर पर १७, १८ तथा १९ नवम्बर को नगर के विभिन्न स्थानों पर यज्ञ भजन एवं उपदेश होते रहे। पूरे कार्तिक मास में जगह-जगह प्रभातफेरियाँ निकाली जाती रहीं, यज्ञ तथा वेद कथा की जाती रहीं।

इस अवसर पर श्री कंचनकुमार की भजन मण्डली ने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया, ब्रह्मचारी सत्यप्रकाश ने भक्ति की भावना सबके हृदय में जागृत कर दी।

१९ नवम्बर को इसकी पूर्णाहुति पर ५१ कुण्डों पर हजारों श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ देकर स्वर्गिक वातावरण उपस्थित कर दिया। वैदिक पुस्तकालय एवं वाचनालय जो सांसद निधि से निर्मित हुआ है, का उद्‌घाटन श्री दयानन्द जी बैंदा के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज से सम्बन्धित सभी गुरुकुलों तथा शिक्षण संस्थाओं ने भाग लिया तथा विभिन्न आर्यसमाजों के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा सार्वदेशिक सभा के श्री विमल बधावन, श्री भगत मंगतूराम, डॉ० विमला मेहता, श्री जयदेव आर्य आदि ने विशेष विचार व्यक्त किये।

हजारों की उपस्थिति से सर्वसम्मति से हरयाणा में लाटरी तथा कैसिनों खेलने तथा दिल्ली सरकार द्वारा नशीले पदार्थों का सामान्य दुकानदारों पर भी बिक्री करने जैसे जनहित विरोधी कार्यक्रमों की पुरजोर भर्त्सना की गई तथा इसके विरुद्ध संघर्ष करने का ऐलान किया। इस समाज के प्रधान डॉ० सत्यदेव ने इस प्रकार की भविष्य का समूल नाश करने वाली योजनाओं के विरुद्ध जनजागरण करने की पुरजोर अपील की। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। -सुरेश गुलाटी, मन्त्री आर्यसमाज

व्यसनों की विभीषिका

आधुनिक युग के सभी विनाशकारी उपकरण करोड़ों प्राणियों, मानवों को नष्ट कर सकते हैं और करते रहे हैं किन्तु शेष बचे लोगों के माध्यम से पुन: सृष्टि रची जाती रही है और मानवता का चक्र चलता रहा।

अब तो भारत की कुछ सरकारें ऐसे विनाशकारी व्यसनों का प्रचलन करने लगी हैं जिनमें फंसने के बाद तीसरी नहीं तो चौथी पीढ़ी कैसिनों में, लाटरियों में जो कुछ आपने उनके भविष्य के लिए बनाया है, सभी को दांव पर लगा देंगे या रेहड़ियों पर बिकने वाली शराब को पी-पीकर मानवता का सर्वनाश निश्चित रूप से हो जाएगा। यदि आप जिम्मेदार उत्तराधिकारी पीढ़ी को चाहते हैं तो मानवता के भविष्य को उज्ज्वल देखना है तो कुछ रिवैन्यू बटोरने मात्र के लिए उठाए जा रहे ऐसे विध्वंसक व्यसनों को तत्काल बंद कराना होगा। ऐसा न हो कि हमारी मां-बहिनों को भी, महाभारत काल की तरह, दांव पर लगाया जाने लगे।

सावधान ! रामराज्य लाते-लाते दुर्योधन राज्य स्थापित होता जा रहा है। अत: विदुर बनकर इन्हें सन्मार्ग दिखाइये अन्यथा न हम रहेंगे और न ही मानवता। आशा है भारत का प्रत्येक नागरिक इस विभीषिका की गंभीरता को समझते हुए इस प्रकार के व्यसनानुमुख कार्यक्रमों को रोकने में अपनी-अपनी सक्रिय रचनात्मक भूमिका निभाएगा।

उक्त प्रस्ताव आर्यसमाज नं० ३ के वार्षिकोत्सव के अवसर पर हजारों में उपस्थित जन-समूह द्वारा सर्वसम्मति से पारित हुआ।

व्यथित हृदय, डॉ० सत्यदेव
प्रधान आर्यसमाज, एन.आई टी. नं० ३, फरीदाबाद

कब तक अंग्रेजी के दास बने रहेंगे ?

आज हम आजाद भारत के नागरिक हैं। हमें अपनी भारतीय संस्कृति पर गर्व होना चाहिये। परन्तु बड़ा आश्चर्य होता है जब हम देखते हैं कि भारत के लोग पश्चिम की संस्कृति का अनुसरण कर रहे हैं। अंग्रेज भारत को छोड़कर चले गये परन्तु अंग्रेजी के गुलाम (दास) अब तक बने हुए हैं। हमें बड़ा दु:ख होता है जब कोई परिचित व्यक्ति किसी उत्सव या विवाह आदि का निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी में छपा हुआ देता है। हमारी समझ में नहीं आता, अपनी मातृभाषा राष्ट्रभाषा की उपेक्षा करके विदेशी भाषा अंग्रेजी में पत्र छपवाना अपनी शान क्यो समझते हैं ? जब कि निमन्त्रण देने वाला स्वयं अंग्रेजी नहीं जानता। हमने एक भाई से पूछा जब आपको अंग्रेजी नहीं आती तो आपने अंग्रेजी में पत्र क्यो छपवाये हैं ? वह कहता है, क्या करें, बच्चे नहीं मानते, अपनी चलाते हैं। हमने कहा, सच बताओ ! तुमने कभी बच्चों को समझाने की कोशिश की, तुम खुद चाहते हो कि बच्चे अंग्रेजी न बोलें। आज आपके बच्चे आपका कहना नहीं मानते, कल ये ईसाई या मुसलमान बन जायेंगे तब क्या करोगे ?

मुझे अंग्रेजी में छपे हुये निमन्त्रण पत्र प्राप्त होते रहते हैं। मैं उन्हें रद्दी की टोकरी में फेंक देता हूँ और निमन्त्रण देने वाले को बता देता हूं कि मैं नहीं आऊंगा, क्योंकि तुम देशद्रोही हो। यदि आपको अपनी मातृभूमि और राष्ट्रभाषा से प्यार है तो प्रतिज्ञा करो कि हम अपने देश में अपनी भाषा को प्राथमिकता देकर उन्नत करेंगे। निमन्त्रण पत्र ही नहीं बल्कि हस्ताक्षर भी हिन्दी में करो। कवि के शब्दों में-

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा और मृतक समान है॥

-देवराज आर्य मित्र, आर्यसमाज कृष्णा नगर, दिल्ली-५१

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल जिला फरीदाबाद का वार्षिकोत्सव दिनांक २२, २३, २४ नवंबर २००२ को बड़े धूमधाम से मनाया गया जिसमें निम्न विद्वानों ने भाग लिया-१. बहन लक्ष्मी भारती जी आचार्या एम.ए. दिल्ली, श्री शिवराम जी विद्यावाचस्पति, श्री ओम्प्रकाश जी शास्त्री एम.ए., श्री देशराज शास्त्री, श्री मानकचन्द जी आर्य, श्री तेजवीरसिंह जी भजनोपदेशक, श्री रामप्रकाश जी आर्य तथा अन्य स्थानीय विद्वानों ने भी कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग किया। २४-११-२००२ को दोपहर २ बजे ऋषिलंगर के बाद सभा का समापन किया गया।

-ओम्प्रकाश शास्त्री, प्रचारमंत्री

हरयाणा की समस्त आर्यसमाजों को आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक से सम्बन्धित समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २ फरवरी २००३ रविवार को सभा कार्यालय रोहतक में होना निश्चित हुआ है। अत: सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्यसमाज का वर्ष २००१-२००२ का प्राप्तव्य वेदप्रचार दशांश तथा सर्वहितकारी शुल्क दिनांक २० जनवरी २००३ तक सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। इस शुल्क के साथ सभी आर्यसमाजें वर्ष २००१-२००२ में अपने आर्य सभासदों की सूची भी भेजें जिसमें आर्य सभासद का नाम, पिता का नाम, आयु, व्यवसाय तथा मासिक या वार्षिक चन्दे का विवरण भी लिखें। यदि आपने पूर्व राशि भेज रखी है तो प्राप्तकर्ता का नाम, राशि तथा रसीद क्रमांक दिनांक सहित सभा को लिखकर भेज देवें। प्रचार की आवश्यकता हो तो पत्र लिखकर सूचित करें जिससे उपदेशक/भजनमण्डली को आपके आर्यसमाज में प्रचारार्थ भेजा जावे। सभी आर्य सभासदों से वार्षिक शुल्क लेकर नियमानुसार आगामी वर्ष २००३ के लिए चुनाव करके सभा को लिखित रूप में भेज देवें।

-**यशपाल आचार्य**, सभामंत्री

दयानन्दमठ दीनानगर के कुशल वैद्य सांईदास जी चले गए
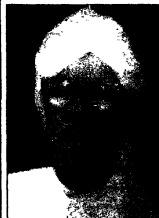
वैद्य श्री सांईदास जी दयानन्दमठ (फार्मेसी) दीनानगर के कुशल वैद्य व संरक्षक थे जिनका देहावसान ३० नवम्बर सन् २००२ को हुआ। इस समय वे ८६ वर्ष के थे। उन्होंने मठ में ६० वर्ष सेवा की। उनका जीवन मुख्यरूप से तीन भागों में बंटा हुआ था-रोगियों की सेवा, स्वाध्यायशील, फार्मेसी की सारी चीजें संभालना। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में रोगियों की सेवा की। मठ में १२ साधुओं और वानप्रस्थियों की मृत्यु हुई है उनकी सेवा वैद्य जी ने की। उनका मल-मूत्र इत्यादि हाथ से उठाना और सिर पर पात्र रखकर नहर में साफ करना। रोगियों की सेवा करना उनका प्रिय कार्य था।

वैद्य जी स्वाध्यायशील थे, उन्होंने चारों वेदों का भाष्यसहित पाठ किया तथा अन्य बहुत से ग्रन्थों का पाठ किया।

वैद्य जी फार्मेसी की सारी चीजें संभालते थे। फार्मेसी की अमूल्य औषधियां भी वे ही देते थे। वैद्य जी सांईदास जी त्यागी, तपस्वी, चरित्रवान्, सत्यवादी, सच्चे-शुचे, पवित्र इंसान थे। मैं उनको आदमी नहीं कहता मैं उन्हें मुनि देवता मानता हूं। वास्तव में वे मानव चोले में ही देवता का रूप थे। भगवान् से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

-**स्वामी सर्वानन्द सरस्वती**, दयानन्दमठ दीनानगर, जिला गुरदासपुर (पंजाब) पिन-१४३५३१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२

सृष्टिसवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
विक्रमसवत्
दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३० अंक ६ २८ दिसम्बर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

शिक्षा और समाज

आचार्य यशपाल, विद्या महासभा कन्या गुरुकुल खरखौदा (सोनीपत) हरि०

भारतीय संविधान में १४ वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का संकल्प लिय गया है और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनेक कार्यक्रम चलाकर जनमानस को शिक्षित करने का कदम हमारी सरकारों ने उठाया। जहां सरकारी विद्यालयों की संख्या में बढ़ोतरी की है वहां प्रशासन व स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से आंगनबाडी, बालवाड़ी प्रौढ़ शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा सम्पूर्ण साक्षरता कार्यक्रम आदि प्रोग्रामों को चलाकर अशिक्षितों की भागीदारी बढ़ाकर उन्हें शिक्षित कर समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयत्न किया जा रहा है। इतना करने पर भी परिणाम आशाजनक नहीं हैं इसके लिए जहां व्यवस्था गुणवत्ता व संकल्प तथा समर्पण का अभाव दिखाई देता है वहां बढ़ती आबादी और बढ़ती गरीबी भी इसका प्रमुख कारण है यदि हम १४ वर्ष तक के सभी बच्चों को शिक्षित करने में सफल हो जायें तो देश का हर नागरिक शीघ्र शिक्षित हो सकेगा। इसके लिए देश के प्रत्येक शिक्षित नागरिक को एक संकल्प लेकर अपने जीवन को साकार करना है। सरकार द्वारा चलाये गये सभी प्रोग्रामों कार्यक्रमों से अलग एक व्यक्ति एक अनपढ़ को साक्षर बनाये जितने भी सरकार द्वारा कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं उनका सुपरविजन बढ़ाये किसी भी कार्य की सफलता उसके निरीक्षण पर आधारित होती है। हम जितना निरीक्षण पर जोर देंगे उतनी ही कार्यक्रम में गुणवत्ता बढ़ेगी। यदि बच्चे कम से कम एक वर्ष तक शिक्षा जारी नहीं रख पाते तो नामांकन की महत्ता खत्म हो जाती है अत: एवं इस बात पर जोर दिया जाये कि बच्चे कम से कम पांच वर्षों की शिक्षा पूरी करें। इसके लिए सुव्यवस्थित सर्वेक्षण ग्रामीण समुदाय के सहयोग से किया जाये। अभिभावक को इस बात के लिए तैयार किया जाये कि वे अपने बच्चों की उन्नति व उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए अपने बच्चों को घरेलू काम में न लगाकर विद्यालयों में नियमित भेजें। शिक्षा का कार्यक्रम निरन्तर चलने वाला है। भारतवासियों को इस बात पर गर्व होना चाहिए कि प्राचीनकाल में इस देश का प्रत्येक नागरिक शिक्षित था। महर्षि मनु ने कहा है कि- **एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन: स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्वे मानवा:** अर्थात् विश्व के लोग शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत के मनिषियों के पास आते थे। एक बार राजा भोज के वाक्य अशुद्ध बोलने पर जंगल में लकडी काटने वाले लकड़हारा ने वाक्य शुद्ध करके बताया जिस पर राजा ने ईनाम दिया। महाराजा अश्वपति ने अपने राज्य में घोषणा ही कर दी थी कि '**न मेस्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यप:। नाना-हिताग्निर्ना विद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुत:**' अर्थात् मेरे राज्य में न कोई चोर है नहीं कोई शराबी, कोई दुराचारी भी नहीं हैं, कोई अशिक्षित नहीं है सभी सभ्य, शिक्षित हैं यज्ञ करने वाले परोपकारी है। इतना बड़ा आदर्श जिस देश का रहा हो आज वहां अशिक्षा, गरीबी, बेईमानी स्वार्थ लोलुपता ने डेरा डाल रखा है, यह हमारे लिए लज्जा की बात है।

आज हम सभी देशवासी एक संकल्प लेकर उठें कि अपने देश को महान् देश बनाने के लिए अशिक्षा अन्धकार को दूर भगाकर परोपकार की भावना से प्रत्येक मानव जीवन दीप को आलोकित करें। जहां भी गरीब मजदूर की झोपड़ियों में खान मजदूर भट्ठे मजदूर की बस्तियों में अज्ञान, अन्धकार हो वहां शिक्षा दीप को जला उनके जीवन को प्रमाशमय बनाये। ईश्वर के सभी पुत्र हैं। सभी भाई-भाई हैं। अत: एक दूसरे की उन्नति में अपनी उन्नति मानते हुए उनको भी ज्ञान का रास्ता दिखायें उनके जीवन को खुशहाल बनायें। यही मानव कल्याण का मार्ग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन को जहां तक संभव हो जिस तरीके से संभव हो अब उसे पूरा करना है ये ठीक है जो भी योजना में हैं। उन्हें सूत्रबद्ध करने तैयार करने मे समय लगता है इन्हें समझने और कार्यान्वित करने में और भी समय लगता है। चलाई गई योजनाओं को तत्परता से पालन करना चाहिये। प्रत्येक संस्था, प्रत्येक अध्यापक और समाज के प्रत्येक सदस्य को इस बात पर विचार करना चाहिये कि वह शिक्षा के विस्तार में क्या कर सकता है, कुछ सेवानिवृत अध्यापक अपने भाइयों को कुछ गृहणियां अपनी बहिनों को साक्षर बना सकती हैं। कुछ संस्थायें अपने पड़ोस की संस्थाओं को इसमें भागीदार बना सकती हैं। समाचार पत्र भी इसमे भूमिका निभायें। केन्द्र व राज्य सरकारों को जागरूकता से काम लेना चाहिये कि देश का कोई नागरिक अपनढ़ ना रहे इसको जन आन्दोलन का रूप देकर हमें काम करना है। यदि अब हम सक्रिय नहीं होते तो हम एक बार फिर शैक्षिक सुधारों के अवसर खोकर सकट में पड़ जायेंगे। वह न केवल हमारे देश के विकास के लिए बल्कि हमारे अपने जीवन के लिये भी खतरनाक साबित हो सकता है। जब तक जीवन में गरीबी रहेगी भरपेट खाना नहीं मिलेगा तब तक नैतिकता को स्वीकार नहीं किया जा सकता। शिक्षा प्राप्त करना और देना भी रोजगार से जुड़ा हुआ है। अत: अब सरकार को भी नीति में कुछ परिवर्तन करके कागजी कारवाई की जगह ठोस परिणाम प्राप्त करने पर व्यय करना चाहिये। यदि कार्य दफ्तरो में बैठकर नहीं हो सकता सेना की तरह एक सैनिक बनकर अन्धकार रूपी दुश्मन को समाप्त करना है। जहा कहीं भी जिस किसी भी कोने में अज्ञान अन्धकार रूपी दुश्मन छुपा हुआ है उसे समाप्त कर जीवन में प्रकाश और उत्साह का सचार पैदा हो जिससे प्रत्येक शिक्षित मानव सुखमय जीवन हो व्यतीत कर सके।

१. यह हमारा संकल्प होना चाहिये।

निर्वाचित प्रतिनिधियों पंचायती राज मे भागीदार व अन्य कार्यक्रमों को चलाने वालों के लिए भी आवश्यक निर्देश हो कि किसी भी प्रकार के रोजगार को प्राप्त करने के लिए आवेदन करने वालो के लिए एक नियम सख्ती से लागू होना चाहिये। प्रथम तो उनके परिवार में कोई अनपढ़ नहीं हो। उसके बाद दूसरे रिश्ते के परिवारों मे भी धीरे-धीरे समयानुसार लागू किया जाये इसमें मानवाधिकार हनन या भय पैदा करने की बात नहीं। हमें आगे बढ़ने के लिए अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिए कठोर निर्णय लेने होगे।

२. यह हमारा सिद्धान्त है।

भारत का प्रत्येक बच्चा विद्यालयों मे शिक्षा केन्द्रो मे शिक्षित होकर निकले। इसके लिये किसी भी प्रकार की मजदूरी रोजगार को शिक्षा के साथ पूरी तरह से जोड दिया जाये मैं तो यहा तक भी कहूंगा केन्द्र व राज्य सरकारों को किसी भी प्रकार की फैक्ट्री, खादानों, भट्ठे या खेतों में काम करने वाले मजदूरों की जो दैनिक मजदूरी तय की जाती है उसमें उन मजदूरों को जिनके बच्चे किसी भी केन्द्र या विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं या जो शिक्षित मजदूरी है उनको मजदूरी का भाग ज्यादा दिया जाये शिक्षा के प्रति रुचि रखने वाले मजदूरों को समूह में उत्साहित व सम्मानित किया जाये।

३. जिससे दूसरों को इससे प्रेरणा मिले और शिक्षा के प्रति आकर्षण बढ़े

इस सारे कार्यक्रम के योजनाबद्ध तरीके से लरू कर उसके पालन मे कठोरता, मूलयांकन मे सतर्कता, निरीक्षण में सावधानी, वाणी मे मधुरता वातावरण मे उत्साह परस्पर समानता, कार्य में कर्त्तव्यपरायणता का होना अति आवश्यक है। यह एक नारा सबके दिलों में उतरना चाहिये कि 'जो एक अनपढ पढ़ायेगा वहीं पढा लिखा कहलायेगा'-अब हमें यह भी देखना है कि उस अनपढ़ को साक्षरता के साथ शिक्षित

(शेष पृष्ठ २ पर)

वैदिक-स्वाध्याय

अमरत्व की घोषणा

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत, द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन, शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः॥

ऋ० १०.१८.२॥ अथर्व० १२.२.३०॥

शब्दार्थ-(**यदा**) जब तुम (**मृत्योः पदं योपयन्तः**) मृत्यु के पैर को ढकेलते हुए (**एत**) चलोगे, तो (**द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः**) तुम दीर्घ विस्तृत आयु को धारण करने वाले तथा (**प्रजया धनेन आप्यायमानाः**) प्रजा और धन से परितृप्त आयु होओगे। इसके लिये (**शुद्धाः**) बाहिर से शुद्ध (**पूताः**) अन्दर से पवित्र और (**यज्ञियासः**) यज्ञिय जीवन वाले (**भवत**) हो जाओ।

विनय-ससार के हरेक प्राणी पर मृत्यु ने पांव रखा हुआ है। जिस दिन उसकी इच्छा होती है उस दिन वह उस पांव को दबाकर प्राणी को कुचल डालता है, समाप्त कर देता है। पर, हे नरतनधारी मनुष्यो ! तुम में वह शक्ति है, जिससे कि तुम मृत्यु के उस पैर को ढकेल कर अमर बन सकते हो। इस ससार में तुम मरे हुओं की तरह न रहकर, न सड़कर, अमर पुत्रों की तरह दृढ़ता से चलो, शुद्ध, पूत और यज्ञिय बन जाओ। ऐसे बनने से तुम में आत्म-शक्ति जग जायगी कि तुम उस मृत्यु के पैर को ढकेल फेंकोगे। ठीक आहार, व्यायाम, तप आदि द्वारा शरीर को शुद्ध रखो और अन्दर से सत्वशुद्धि, सौमनस्य आदि लाकर अन्तःकरण को पवित्र रखो, और फिर इस शरीर और मन से यज्ञिय कर्म ही करते जाओ, इससे तुम निस्सदेह अमर निकल आओगे। यह सच है कि यज्ञिय जीवन से मृत्यु मारी जाती है, तब मनुष्य की आयु सौ वर्ष तक चलने वाला यज्ञ हो जाता है, तब वह मनुष्य पूर्ण सौ वर्ष की दीर्घ विस्तृत आयु को यज्ञरूप में धारण करता है। हम मेरे हुए मनुष्य तो आयु को 'धारण' नहीं कर रहे हैं किन्तु आयु के एक बोझ को जैसे तैसे ढो रहे हैं। जब शरीर को आत्मा धारे हुवे होता है तो आत्मा शरीर को पूर्ण सौ वर्ष तक स्वस्थ चलने की, जीवन-यज्ञ को सौ वर्ष तक अखण्डित चलने की-आज्ञा देता है। और इस जीवन में प्रजा को सृजने द्वारा तथा धन के बढाने द्वारा अपनी विकास की इच्छा को परितृप्त करके यज्ञ को पूर्ण करता है! आत्मशक्ति का प्रकाश करने के लिये ही आत्मा शक्ति को धारण करता है। अतः शरीर पाकर इस जगत् मे कुछ उपयोगी वस्तु को प्रजनन करना, सृजन (Create) करना तथा जगत् के सच्चे ऐश्वर्य को (धन को) बढा जाना आवश्यक है। संसार में आयी सब महान् आत्मायें इस संसार में कुछ न कुछ जगत् हितकारी वस्तु को सृजन करके तथा जगत् में किसी उच्च से उच्च ऐश्वर्य को बढ़ाकर जाती है। हे मनुष्यो ! उठो, मृत्युमय जीवन छोड़ो, शुद्ध पूत और यज्ञिय बनो और मृत्यु के पैर को परे हटाकर अपने अमरत्व की घोषणा कर दो।

(वैदिक विनय ८ ज्येष्ठ)

शिक्षा और समाज............

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करने पर भी विशेष बल दिया जाये उनमें व्यावहारिक ज्ञान, शिष्टाचार, परोपकार की भावना, देशभक्ति महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा हस्तकला शिल्पकला रोजगार के नये-नये उपायों की जानकारी स्वास्थ्य सेवा, डाकसेवा की जानकारी आदि जो जीवन मे आवश्यक हैं के प्रशिक्षण पर भी पूरा जोर दिया जाये। कुछ मानदण्डों मे प्रवीण होने पर उन्हें प्रमाण पत्र दिया जाये जिसे रोजगार प्राप्त करने के लिए भी मान्यता हो। इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखते हुए जो कुछ भी इसके लिए उपलब्ध है उससे शीघ्र अनुशासन पैदा कर कार्य करने की आवश्यक है। दूसरे इसमें शिक्षकों को और सहूलियत देने के साथ-साथ उनमें जिम्मेदारी की बेहतर भावना पैदा करने की बात है। बेहतर छात्र सेवाओं के साथ उनका व्यवहार स्वीकृत मानदण्डों के अनुरूप हो। शिक्षा सस्थाओ के लिय बेहतर सुविधा के साथ उनका निष्पादन राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय मानको के अनुरूप सुनिश्चित हो। इस प्रकार यह योजना देश के भविष्य के लिये नये युग का सूत्रपात करेगी। हमारा यह दायित्व है कि हम इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये स्पष्ट दृष्टिकोण अपनाये। जिससे हम सब मिलकर कह सकें।

सर्वे भवन्तु शिक्षिताः सर्वे सन्तु आत्मनिर्भराः।

देशवासियों को यह संदेश दे सकें कि उठो जागो प्रभात उगा है।

१ सबको शिक्षित करना हमारा नारा है।

अर्थात्-देश का प्रत्येक नागरिक सभ्य शिक्षित हो, और सभी आत्मनिर्भर स्वावलम्बी बनें।

२ यह हमारा सिद्धान्त है।

३ जिससे दूसरों को इससे प्रेरणा मिले और शिक्षा के प्रति आकर्षण बढ़े। जनमानस को शिक्षित करना ही देश सेवा है। उत्तम दान है, मनु कहता है-

'सर्वेषामेव दानानाम् ब्रह्मदानं विशिष्यते'

सब दानों में विद्या दान ही श्रेष्ठ है।

ओ३म् शम्

स्व० ला० जयकिशनदास आर्य की पुण्यतिथि पर कुछ हार्दिक उद्गार

समय कितनी जल्दी उड़ान भरता है। ला० जयकिशनदास जी को हमारे से बिछुड़ हुए ८ जनवरी २००३ को एक वर्ष हो जाएग। हमारे मानसपटल से उनकी स्मृति जरा भी धुँधली न हो सकी है। उनके विचार, उनकी कार्यप्रणाली हमें निरन्तर प्रेरित करती रहती है। इसलिए उनके नाम से हमने आर्य पब्लिक स्कूल हाँसी (इंग्लिश मीडियम) का नाम 'जयकिशन दास आर्य पब्लिक स्कूल' कर दिया है ताकि उनका प्रमाशमय जीवन इस शिक्षालय के स्टाफ एवं बच्चों के जीवन को निरन्तर उच्च विचारों से ओतप्रोत करता रहे। इसी उपलक्ष में ८ जनवरी को एक पेंटिंग प्रतियोगिता तथा भाषण प्रतियोगिता भी रखी गई है और स्मृति-दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जिसमें शहर के बाहर के अनेक गणमान्य महानुभाव अपनी श्रद्धांजलि इस महामानव को अर्पित करेंगे।

आपका जन्म १५ अगस्त १९१३ में गांव लाडवा (हिसार) में हुआ। प्रारम्भिक जीवन गांव लाडवा में व्यतीत होने के कारण आप ग्रामीणता सादगी एवं सौम्यता से परिपूर्ण थे। १९४० के लगभग ग्रामीण पृष्ठभूमि से आपने शहर की ओर पदार्पण करते हुए हाँसी में अपना स्थाई निवास बनाया। पिछले ६० वर्षों से हाँसी और हिसार आपका विस्तरित कार्यक्षेत्र रहा है। आपका आर्यसमाज में प्रवेश आपके अपने शब्दों में आपके पूज्य मामा पंडित घासीराम जी आर्य के वैदिक विचारों से प्रभावित होकर ही हुआ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी जी एवं हरयाणा के स्व० श्री हरदेव सहाय जी, गोभक्त के विचारों एवं कार्यप्रणाली का आप पर गहरा प्रभाव रहा। आप आर्यसमाज के कार्यक्षेत्र में हिसार के प्रतिष्ठित एवं कर्मयोगी स्व० श्री लालमन जी आर्य, स्व० ला० गोविन्दराम जी आर्य (देवराला वाले) श्री छबीलदास जी आर्य (हाँसी कारखाने वाले) के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर शुद्धि कार्यों एवं विधवा-विवाहों का आयोजन करके समाज में एक प्रकार से नई क्रान्ति पैदा की और नारी जाति का सम्मान बढ़ाया। इसी प्रकार नारी शिक्षा के लिए स्थानीय आर्यसमाज एवं मानवती आर्य कन्या उच्च विद्यालय की स्थापना एवं भवन-निर्माण के लिए अपने विभिन्न सहयोगियों को साथ लेकर दूर-दूर स्थानों (बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली आदि) से अपार धनराशि एकत्र की। आपने अपने पूज्य पिता श्री एवं चाचाज की पावन स्मृति में विद्यालय में एक कमरे का निर्माण भी करवाया तथा भिच्छा लाल अतिथि भवन का निर्माण भी करवाया।

आप मे दानियों को खोजने तथा उनसे दान प्राप्त करने की क्षमता थी। आप अपने विचारों द्वारा विद्यालय की आवश्यकताओं को ऐसे शब्दों मे बाँध कर प्रस्तुत करते थे कि दानी स्वयं अपनी थैली का मुँह खोल देते थे। वर्तमान आर्यसमाज का भवन एवं विद्यालय का विशाल भव्य भवन इसका जीवंत प्रमाण है। विद्यालय और समाज का उत्थान उनकी सदैव सोच रहती थी। समस्त अध्यापक वर्ग, कर्मचारी वर्ग, छात्रवृंद आपसे अथाह स्नेह करते थे और उनके दिल में आपके लिए एक ऊँचा स्थान है। आप भी सभी से बेहद प्यार रखते थे और आवश्यकतानुसार सभी की खूब सहायता करते थे। आप १९७७ से लगातार मानवती आर्य कन्या उच्च विद्यालय के प्रधान पद पर जीवन पर्यन्त सुशोभित रहे। आप हाँसी के ही नहीं हिसार जिले के प्रतिष्ठित समाजसेवी थे। आपको अपनी आय का दशांश निकालने की प्रेरणा, बाबा गुरुमुखसिंह जी के भाषण से प्राप्त हुई जिसका आप सभी तक पालन कर रहे थे। लाला रामशरण दास वेद-प्रचार मण्डल की स्थापना ! स्व० श्री पारसनाथ जी आर्य, महाशय देवराज जी आर्य, श्री हंसराज आर्य, श्री इन्द्राज सिंह जी आर्य एवं आपके अथक परिश्रम का फल है। आपकी प्रधानता में मण्डल का वेद-प्रचार कार्य, भजन मण्डली, उपदेशको एवं वैदिक साहित्य वितरण द्वारा सुचारू रूप से चल रहा था। इसका कार्यक्षेत्र पुराना जिला हिसार (भिवानी, सिरसा) थे।

आपने 'शराबबन्दी आन्दोलन' में श्री अतरसिंह जी आर्य क्रान्तिकारी को समाज की ओर से भरपूर सहयोग दिया तथा शराब के ठेके बन्द करवाने में सफलता प्राप्त की। आप न केवल आर्यसमाज एवं मानवती आर्य कन्या उच्च विद्यालय से जुडे हुए थे, अपितु हाँसी नगर की सभी प्रमुख शिक्षण, धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं को भी आपका पूर्ण समर्थन प्राप्त रहा है। हरयाणा-गोशाला, हाँसी के आप कई वर्षों से उपप्रधान रहे। शिक्षण संस्थाओं के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा एवं सेवाओं को देखते हुए डी.ए.वी प्रबन्धकर्तृ सभा, देहली ने आपको इसका सदस्य मनोनीत किया था। अप्रैल १९८८ में महात्मा हंसराज, दिवस पर ताल कटोरा स्टेडियम, दिल्ली में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, देहली एवं डी.ए.वी प्रबन्धकर्तृ सभा की ओर से आपको सम्मानित किया गया था।

नेत्रदान में आपकी बहुत श्रद्धा थी। अपने जीवन में ही आपने अपने नेत्रदान कर दिए थे और उनके देहान्त के बाद उनकी दो आंखे दो व्यक्तियों के जीवन में प्रकाश कर गई। वे ऐसी महान् आत्मा थी। गरीबों और किसानों में वे भगवान् का रूप देखते थे। कहा करते थे कि मजदूर को उसका पसीना सूखने से पहले मजदूरी मिलनी चाहिए। आपका हृदय एक बच्चे की भाँति निर्मल था। आपकी सादगी और सौम्यता सभी पर अमिट छाप छोड़ देती थी। गऊओं से आपको बेहद लगाव था। समय-समय पर बढ़िया गऊएँ गुरुकुलों को दान देते थे। गायत्री मंत्र का सदैव जाप करते रहते थे। अपनी वसीयत में उन्होंने हमें तीन अमर फल प्रदान किए हैं- १ आर्यसमाज के पवित्र विचार, २. गायत्री मंत्र का जाप, ३. आमदनी में से दसवाँ हिस्सा धर्मार्थ निकालना।

आपका जीवन महान् था। ऐसी महान् आत्माएँ पृथ्वी पर कभी-कभी जन्म लेती हैं। ८ जनवरी २००२ को देहली में इन्होंने अपने जीवन की अन्तिम लीला पूर्ण की यद्यपि भौतिक शरीर तो नहीं रहा, परन्तु इनका नाम सदैव अमर रहेगा।

-विजया कुमारी, प्रधानाचार्या, मानवती आर्य कन्या उच्च विद्यालय, हाँ

क्या देश को आर्यसमाज की आवश्यकता है ?

१९वीं और २०वीं शताब्दी में इस देश में जितने भी समाज सुधार के आन्दोलन हुए, उनमें आर्यसमाज का नाम अग्रणी है। हिन्दी साहित्य के एक इतिहास लेखक के अनुसार 'पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा गुजरात आदि उत्तर भारत के प्रान्तों में आर्यसमाज का विशेष प्रभाव बना रहा है और अब तक उत्तर भारत के रहन सहन, आचार-विचार, धर्म संस्कृति व साहित्य पर आर्यसमाज का स्पष्ट प्रभाव लक्षित होता है। प्राचीन संस्कृति के पुनरुत्थान, वेदों के प्रति श्रद्धा, शिक्षण संस्थाओं की स्थापना द्वारा शिक्षा का देशव्यापी प्रचार व प्रसार नारी जाति के प्रति समादर की भावना, निम्न जातियों के प्रति अस्पृश्यता की भावना का निवारण, पुरातन निरर्थक की भावना का संचार आदि उत्तमोत्तम कार्यों के लिए भारतीय जनता आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द व आर्यसमाज के प्रति चिर कृतज्ञ है।' (हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ डॉ० शिवकुमार शर्मा, १५वां संस्करण १९९६ पृ ५५७, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६)

ब्राह्म समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन तथा थियोसाफीकल सोसायटी ने भी अपने काल में देश में समाजसुधार हेतु महत्त्वपूर्ण योगदान दिया किन्तु वे वेदों को नहीं मानते थे। इसके विपरीत आर्यसमाज वेद को मानता है। आर्यसमाज का तीसरा नियम कहता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है। 'सत्यार्थप्रकाश' के अन्त में दयानन्द लिखते हैं कि, "जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप के स्वत: प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं वैसे चारों वेद हैं।" 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में भी महर्षि दयानन्द ने वेदों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला है। हिन्दी साहित्य के एक प्रसिद्ध इतिहास लेखक ने लिखा है कि, "उन्होंने आर्यसमाज के लिए वेदो का आधार माना। उनके अनुसार वेद अपौरुषेय है और वैदिकधर्म ही सत्य और सार्वभौम है।" (द्र० हिन्दी साहित्य का इतिहास-डा० नगेन्द्र, २५वां संस्करण पृ० ४४०, प्रकाशक मयूर पेपर बैक्स, ए-९५ सेक्टर-५, नोएडा-२०१३०१)

इसी वेद एवं वैदिकधर्म के प्रचार हेतु आर्यसमाज आज तक सक्रिय रहा है और अब भी सक्रिय है किन्तु क्या देश से सामाजिक एवं धार्मिक कुप्रथायें, बुराइया मिट गई हैं? देश मे जगह-जगह स्कूल-कालेज खुल गए हैं। गांव-गांव में बिजली है। रेडियो, दूरदर्शन तथा दूरभाष सुविधाये उपलब्ध हैं परन्तु फिर भी समाज से अन्धविश्वास, जादू-टोना, झाड़-फूक, चमत्कार आदि दूर नहीं हुए है। भविष्यफल, राशिफल, ज्योतिष के नाम पर लोगों को ठगा जारहा है। यहां तक कि कुछ समाचार-पत्र भी भविष्यफल, राशिफल आदि के बारे में लगातार छापने लगे हैं। क्या इससे लोगो का कल्याण होगा?

तीर्थयात्राओं पर भी लोग जाते हैं। अकेले अमरनाथ की यात्रा पर प्रतिवर्ष दो-ढाई लाख श्रद्धालु जाते हैं। वर्ष २००० में अगस्त में आतंकवादियों ने ३०-३२ तीर्थयात्रियों को मार डाला। वर्ष २००२ मे भी अमरनाथ यात्रियों पर आतंकवादी हमले हुए। विभिन्न समाचार-पत्रों में इसकी रिपोर्ट छपी (१) नवभारत टाइम्स (नई दिल्ली ७/०८/०२) पृ० एक-हमले मे नौ यात्री मारे गए। पहलगाम में नींद में डूबे यात्रियो पर हमला (२) राष्ट्रीय सहारा (नई दिल्ली ७/०८/०२) पृ० एक-अमरनाथ यात्रियों पर फियादीन हमला, नौ मरे तीस घायल (३) हिन्दुस्तान (नई दिल्ली ७/०८/०२) सम्पादकीय-तीर्थयात्रियों पर कायरना हमला, पृ० सात-पहलगाम में उदासी और दहशत का माहौल (४) दैनिक ट्रिब्यून (चंडीगढ़ ७/०८/०२) पृ० एक-उग्रवादी हमले मे ९ अमरनाथ यात्री मरे, ४० घायल। सोए हुए श्रद्धालुओं पर कहर बरपा। (५)अमर उजाला (चंडीगढ ७/०८/०२) पृ० एक-नौ अमरनाथ यात्रियों की हत्या, ५० से अधिक घायल (६) दैनिक भास्कर (पानीपत ७/०८/०२)पृ० एक-अमरनाथ यात्रियों पर हमला, ९ मरे, ३२ घायल (७) पजाब केसरी (अम्बाला छावनी ७/०८/०२) पृ० तीन-अमरनाथ यात्रियों पर हमले में १० मरे ३२ घायल। अंग्रेजी के अखबारो में भी समाचार छपा। (1) Tribube (Chandigarh 7/08/02) P-10-Ultras massacre 9 yatris (2) The Hindu (7/08/02) P-1-Nine Amarnath yatris killed (3) The Hindustan Times (N Delhi 7/08/02) P-1 Terrorists kill nine pilgrims (4) The Times of India (N Delhi 7/08/02) P-1-Nine killed in attack on Amarnath pilgrims इससे देश मे क्या सन्देश गया कि देश के तीर्थयात्री असुरक्षित हैं।

आखिर ये तीर्थयात्री कई-कई दिन तक कष्ट सहन कर मौत के साये मे वहां जाते क्यों हैं? शिवलिंग के दर्शन के लिए, बर्फ से बने शिवलिंगों को देखने के लिए। इसी प्रकार अन्य स्थानों की तीर्थयात्रायें हैं। इसमें बद्रीनाथ, केदारनाथ आदि चार धामों की यात्रायें भी हैं। इसी प्रकार अन्य धार्मिक स्थानों की यात्रायें हैं, इनसे मुक्ति नहीं मिल सकती। कबीरदास ने ठीक ही कहा था-

मथुरा जावै द्वारिका, भावै जावे जगन्नाथ।
साध संगति हरि भगति बिन, कछु न आवै हाथ॥

अन्यत्र कबीर कहते हैं-**एक निरंजन अलह मेरा।**

ना हज जाऊं ना तीरथ पूजा, एक पिछाण्या तौ का दूजा।
कहै कबीर भरम सब भागा, एक निरंजन सूं मन लागा॥
इन तीर्थों में भगवान्! या मुक्ति नहीं मिलती।

कबीर स्पष्ट कहते हैं-

मो को कहां ढूंढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल, ना मैं मस्जिद, ना काबै कैलास में॥

सन्त रविदास ने भी कहा है कि इन तीर्थों से भगवान् नहीं मिलते-

काबे अरू कैलास महं जिह कू ढूंढण जांह।
रविदास पिआरा राम तउ, बइठहि मन मांह॥

इसी प्रकार कांवड़ यात्रायें भी जुलाई-अगस्त मास में पूरे देश मे होती हैं। जहां कांवड़ यात्री हरद्वार आदि स्थानों से जल लाकर शिव की प्रतिमा का अभिषेक करते हैं। 'राष्ट्रीय सहारा' (नई दिल्ली १३ अगस्त २००२) पृ० छ -मे विश्वप्रसिद्ध श्रावणी कांवड़ मेला २००२ की रिपोर्ट छपी। इसमें भारत के प्रसिद्ध तीर्थस्थलों में झारखंड के वैद्यनाथ धाम का वर्णन है। यहां पर श्रावण मास मे उत्तरवाहिनी गंगा (सुल्तानगज) से जल भरकर कंधे पर कांवड लिए १०५ किलोमीटर की पैदल यात्रा कर बाबा वैद्यनाथ मन्दिर में जल चढ़ाने के लिए लोग आते हैं। मेला एक महीने तक चलता है। इस वर्ष यह मेला २३ जुलाई २००२ से २२ अगस्त तक लगा। भारत में बहुत कम ऐसे स्थान हैं जहा १०५ किलोमीटर की लम्बाई मे तीर्थयात्रियों का मेला लगता है। यहां लाखो की संख्या में देश के कोने-कोने से कांवरिया/कांवरिया भक्त शामिल होते हैं। परन्तु यह भी वास्तविक तीर्थ नहीं है, केवल जल चढ़ाने से, बिना सत्संग के, स्वाध्याय के, सद्ग्रन्थों के बिना, शुभकर्मों के बिना मुक्ति नहीं हो सकती।

फिर असली तीर्थ क्या हैं? सत्यार्थप्रकाश के ११वे समुल्लास मे महर्षि दयानन्द लिखते हैं-वेदादि सत्य शास्त्रों का पढना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का सग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्य भाषण, सत्य का मानना, ब्रह्मचर्य, आचार्य, अतिथि, माता-पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना, उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ, ज्ञान-विान आदि शुभ गुणकर्म दु खो से तारनेवाले होने से तीर्थ हैं और जो जल स्थलमय हैं, वे तीर्थ कभी नहीं हो सकते क्योकि मनुष्य जिन करके दु खो से तरे उनका नाम तीर्थ है। जल स्थल तरानेवाले नहीं अपितु डुबाकर मारनेवाले हैं।

इन बातो से आर्यसमाज ही जनता को परिचित करवा/करा सकता है किन्तु इसके लिए विद्वानो, उपदेशको, लेखकों, प्रचारकों की आवश्यकता है जिसकी आर्यसमाज मे भारी कमी दिखाई देती है। अत· आर्यसमाजो, प्रादेशिक, प्रतिनिधि सभाओ तथा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा द्वारा इसकी व्यवस्था करनी चाहिए। आर्थिक सहायता द्वारा विद्वानों, उपदेशकों, लेखकों का सम्मान करना चाहिए। हा जो निस्स्वार्थ सेवा कर रहे हैं या करना चाहते हैं, वे अपना कार्य करते रहे। वे धन्यवाद के पात्र हैं। [आवास ४३२/८, आर्य निवास, अर्बन एस्टेट, करनाल-१३२००१ हरयाणा]

-प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य

दयानन्दमठ रोहतक का चालीसवां सत्संग समारोह

वैदिक सत्सग समिति दयानन्दमठ रोहतक द्वारा सचालित चालीसवा वैदिक सत्सग समारोह ५ जनवरी २००३ रविवार को बडी धूमधाम से मनाया जायेगा। इस सत्सग के सयोजक एव व्यवस्थापक सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओ, धार्मिक अन्धविश्वासो, छूआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिकधर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करने हेतु प्रारम्भ किया गया है। इस सत्सग की विशेषता यह है कि इस अवसरपर किसी एक विद्वान् द्वारा निश्चित विषय पर एक घटे का प्रवचन होता है। इस बार ५ जनवरी २००३ को विषय रखा है, 'योगी कौन?' इस अवसर मुख्यवक्ता के रूप में स्वामी धर्ममुनि महाराज, सचालक आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ पहुंच रहे हैं। वे इस विविध ढंग से प्रचलित योग पर अपने अनुभवो एव वैदिक मान्यताओ पर प्रकाश डालेंगे। योगसाधक अथवा योगी कहलवाने का असली पात्र कौन है? इस पर विस्तार से व्याख्या करेगे।

कार्यक्रम का वर्णन करते हुए श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि सत्सग की शुरुआत प्रात ९ बजे यज्ञ से प्रारम्भ होगी फिर यज्ञ प्रसाद तथा फिर भक्तिगीत व सगीत ११ बजे तक होगे। ठीक ११ से १२ बजे के बीच उस दिन के मुख्य विषय 'योगी कौन' पर स्वामीजी का व्याख्यान होगा। इसके बाद ऋषिलगर मे सभी मिलकर भोजन करेगे जिसका प्रबन्ध वैदिक सत्संग समिति द्वारा किया जायेगा। संयोजक ने सभी आर्यसज्जनो, बहनों एवं भाइयों से निवेदन किया कि वे दल-बल सहित अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ पधारे। यदि बहिने केसरियां रग का परिधान तथा आर्यबन्धु एवं आर्ययुवक केसरिया पगड़ी बांधकर समारोह में भाग ले तो अति उत्तम होगा।

निवेदक :

स्वामी इन्द्रवेश	**माननसिंह आर्य**	**सन्तराम**, दूरभाष २७७८०१
अध्यक्ष सत्संग समारोह	मन्त्री-दयानन्दमठ	सयोजक एव प्रबन्धक समारोह

भाजपा पार्षद प्रतिभा नई प्रधान निर्वाचित

नगर परिषद रोहतक की नवनिर्वाचित प्रधान प्रतिभा सुमन को गाजे-बाजे के साथ लेजाते भाजपा कार्यकर्त्ता।

रोहतक। बडे ही नाटकीय ढग से भाजपा पार्षद प्रतिभा सुमन को सर्वसम्मति से नगर परिषद् का प्रधान चुन लिया गया।

अतिरिक्त जिला उपायुक्त राकेश गुप्ता की देखरेख मे सम्पन्न हुए इस चुनाव में परिषद् के सभी ३१ पार्षदो व रोहतक से लोकसभा सदस्य कैप्टन इन्द्रसिह ने भाग लिया जबकि स्थानीय विधायक शादीलाल बत्तरा नदारद रहे। श्रीमती प्रतिभा सुमन के नाम का प्रस्ताव कार्यवाहक प्रधान एव वरिष्ठ कांग्रेसी नेता ओमप्रकाश बागडी ने रखा। उनके नाम का अनुमोदन भाजपा के बागी पार्षद धर्मवीर तुल्ली व सुरेन्द्र बत्तरा ने किया। किसी अन्य के नाम का प्रस्ताव न आने पर श्रीमती सुमन सर्वसम्मति से प्रधान चुन ली गई।

गौरतलब है कि भाजपा-इनेलो गठबधन के १७ पार्षदों की हुई बैठक मे यह तय कर लिया गया था कि प्रधान भाजपा से होगा। परन्तु भाजपा का कौन पार्षद प्रधान का उम्मीदवार होगा, इस बारे मे भाजपा ने अपने पत्ते नहीं खोले थे।

इससे भाजपा के कई पार्षद इस दौड़ मे शामिल थे और वे अपनी-अपनी गोटियां फिट करने में लगे थे। इसके चलते राजनीतिक क्षेत्रों में भाजपा के कभी किसी पार्षद का नाम प्रमुखता से उछल रहा था तो कभी किसी दूसरे पार्षद का। सारा दिन ही नहीं अपितु रातभर खींचातानी चलती रही। उधर दूसरी ओर पूर्व गृहराज्यमंत्री सुभाष बत्तरा के विरोधी गुट द्वारा भी देर रात तक जोडतोड़ की कोशिश की जाती रही ताकि आवश्यक बहुमत जुट जाए और प्रधान की कुर्सी पर कब्जा बरकरार रह जाए। परन्तु इसमें सफलता हाथ न लगने पर इस खेमे के गुट के नेता ओमप्रकाश बागडी ने खुद श्रीमती सुमन के नाम का प्रस्ताव रखा जबकि उन्हें भी प्रधान पद की दौड़ मे शामिल माना जारहा था। इनेलो द्वारा भाजपा की झोली में यह पद डालने के उपरान्त से भाजपा के पार्षद अजय जैन, जयकिशन शर्मा व प्रतिभा सुमन को दावेदार माना जारहा था।

हालांकि इस दौड में श्रीमती प्रतिभा सुमन का दावा कमजोर समझा जारहा था। इसके चलते अजय जैन के समर्थक बडी सख्या में परिषद परिसर के समीप पहुंच गए थे। परन्तु चुनाव से करीब २ घंटे पूर्व ही सुभाष बत्तरा ने अखबारों के कार्यालय में टेलीफोन करके श्रीमती सुमन के नाम का खुलासा कर दिया था। उन्होंने यहां तक बता दिया था कि उनके नाम का प्रस्ताव व समर्थन कौन करेगे।

प्रशासन ने चुनाव बैठक के दौरान एहतियाद के तौर पर परिषद् कार्यालय के आसपास भारी सुरक्षा प्रबन्ध किए हुए थे। जिला उपायुक्त खुद परिषद् कार्यालय में मौजूद रहे। इस चुनावी बैठक में पहली बार सांसद कैप्टन इन्द्रसिंह ने भाग लिया।

इस मौके पर जिला इनेलो अध्यक्ष एवं हरयाणा कृषि विपणन बोर्ड के चेयरमैन बलवन्त मायना, हरयाणा एग्रो इण्डस्ट्रीज के चेयरमैन इन्द्रसिंह ढुल, जिला परिषद् के चेयरमैन धर्मपाल मकड़ौली, २० सूत्री कार्यक्रम के उपाध्यक्ष प्रो० तेजासिंह, नगर सुधार मण्डल के चेयरमैन महेश चावला, भाजपा के प्रान्तीय सचिव व प्रवक्ता प्रदीप जैन, महिला मोर्चा की प्रान्तीय महासचिव आशा हुड्डा, जिलाध्यक्ष मनीष ग्रोवर, महासचिव रमेश बल्हारा, मण्डलाध्यक्ष रमेश सहगल, मण्डल सचिव गुलशन धींगड़ा व युवा मोर्चा के शहरी अध्यक्ष गुलशन शर्मा आदि भी परिषद् परिसर में मौजूद थे।

चुनाव होने के उपरान्त जिला उपायुक्त एव अन्य सभी नेता बैठक स्थल पर चले गए। प्रधान निर्वाचित होने के उपरान्त श्रीमती सुमन को कार्यभार संभलवाया। उसके बाद श्रीमती सुमन के बैठक से बाहर आने पर मालाओं से लाद दिया। भाजपा कार्यकर्त्ताओं ने मिठाई बांटी और गाजे-बाजे के साथ उन्हें उनके निवास तक लेकर गए। [रोहतक जागरण २५ दिसम्बर से साभार]

पुस्तक-समीक्षा

नोट-समीक्षा हेतु पुस्तक की दो प्रतियां भेजनी आवश्यक हैं।

पुस्तक का नाम- **स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्र-व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन।**

लेखक-**डॉ० भवानीलाल भारतीय।**

प्रकाशक-**दयानन्द अध्ययन संस्थान,** ८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर-३४२००८

साइज-२३×३६÷१६ पृष्ठ सख्या २६०, मूल्य २०० रुपये।

पुस्तक के पूर्वार्द्ध में स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित पत्रों का अध्ययन प्रस्तुत किया है जिसमें १६ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय मे पत्र-व्यवहार का सामान्य परिचय दिया है। २ शास्त्र प्रमाण का सिद्धान्त। ३. ऋषि दयानन्दकृत वेदभाष्य। ४. आर्यसमाज। ५ आर्यसमाज और थियोसोफिकल सोसायटी। ६ संस्कृत भाषा का महत्त्व और शिक्षण। ७. राष्ट्रभाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि। ८ गोरक्षा और गोवध निषेध। ९. राजधर्म और प्रशासनविषयक मार्गदर्शन। १० पौराणिक मन्तव्यों पर अनास्था। ११ सैमेटिक मजहबो के प्रति धारणा। १२ स्वामी दयानन्द के सहयोगी, अनुचर तथा शिष्य्। १३ वैदिक यन्त्रालय की स्थापना का प्रयोजन। १४ परोपकारिणी सभा में सुरक्षित स्वामी दयानन्द के कुछ कामकाजी पत्र। १५ पत्रों में प्रतिबिम्बित दयानन्द का व्यक्तित्व एवं चरित्र। १६ **प्रकीर्ण विषय,** जैसे जनगणना में आर्य लिखाने का निर्देश। पत्रव्यवहार में प्रयुक्त कुछ सूक्तियां। बृटिश राज्य के प्रति धारणा। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण मे खण्डनात्मक दो समुल्लास नहीं छपे। वैदिकधर्म के प्रचारार्थ उपदेशक। आर्यसमाज की निर्देशिका बनाने का विचार। सुसंस्कृत नाम रखें। शुद्धि का क्रियान्वयन कैसे हो? पूर्वमीमांसा दर्शन में हिंसा का विधान नहीं। समुद्रयात्रा को प्रोत्साहन। स्वामी दयानन्द का संस्कृत काव्ययुक्त पत्र। शृंगारप्रधान काव्यों एवं नाटकों से वितृष्णा इत्यादि विषयों पर स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्रों द्वारा प्रकाश डाला है।

इसी प्रकार पुस्तक के उत्तरार्द्ध में स्वामी दयानन्द को सम्बोधित पत्रों के अध्ययन का विश्लेषण लेखक ने सात अध्यायों में प्रस्तुत किया है जिनमें संन्यासी शिष्यों, भक्तजनों, राजा महाराजा तथा सामन्तों के पत्र और सामान्य लोगों के पत्र सम्मिलित हैं। विदेशी विद्वान् तथा भारतीय विभिन्न सम्प्रदायो के आचार्यो तथा धर्माधीशों के पत्र भी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक मे विद्वान् लेखक ने कुछ उन बातों सिद्धान्तों मन्तव्यो का भी विश्लेषण पत्र व्यवहार द्वारा प्रस्तुत किया है जिन पर स्वामी दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थो और जीवनचरित आदि से स्पष्टीकरण नहीं मिलता। मैंने पुस्तक को आदि से अन्त तक पढा है। पुस्तक बहुत उत्तम एवं ज्ञानवर्धक है। लेखक का परिश्रम श्लाघनीय है। लेखक शतायु हो, यही प्रभु से प्रार्थना है। **-वेदव्रत शास्त्री**

देश की सभी आर्यसमाजों से अपील

सर्वविदित है कि पिछले कई वर्षो से डेरा सच्चा सौदा सिरसा के लिए तथाकथित सन्त द्वारा अनेक पढी-लिखी लड़कियों का शारीरिक (यौन) शोषण जैसा भयंकर पापाचरण होता रहा है। जिसकी अब पोल खुल गयी है, और सर्वत्र चर्चा का विषय बना हुआ है।

निर्भीक पत्रकार स्व० श्री रामचन्द्र छत्रपति की शहादत इस घिनौने कार्य की पोल खोलने के परिणामस्वरूप हुई है। जो समूचे आर्यसमाज के लिए एक आवश्यक चुनौती है जिसे तुरन्त स्वीकार कर लेना चाहिए।

यदि इस समय यह बात दब गयी और धर्म के नाम पर लोगों को धोखा देनेवाले तथाकथित महाराज को उचित सजा नहीं मिली तो आनेवाले समय में परिणाम बहुत भयकर होंगे। जिससे सबसे अधिक हानि आर्यसमाज को ही होगी क्योंकि विश्वभर में मात्र आर्यसमाज ही सबसे पहला सच्चाई का सन्देशवाहक संगठन है जो लगभग १३२ वर्ष से अन्याय से विरुद्ध लड़ाई लड़ता रहा है। चाहे वह राष्ट्र की, गौ की व हिन्दीरक्षा की बात अथवा नारी सम्मान की बात हो। आर्यसमाज सदैव अग्रणी रहा है।

अत: सार्वदेशिक सभा दिल्ली, आर्यप्रतिनिधिसभा व समस्त प्रान्तों की आर्यप्रतिनिधि सभाओं एवं जिलास्तर तथा स्थानीय आर्यसमाजो एवं ऋषिभक्तों से अपील है कि इस गुरुडमवाद को जड़ से उखाड़ फेंकने में अपनी पूरी शक्ति लगायें। यह पाखण्डियों के सूर्य अस्त करने का स्वर्णिम अवसर है। अस्तु संगठित होकर आर्यसमाज को एक मुहिम छेड़नी चाहिए।

-आचार्य रामसुफल शास्त्री, वैदिक प्रवक्ता, शास्त्री भवन, लाल सडक, हांसी

वैदिक विवाह संस्कार

२३-१२-२००२ को जयसिंह सुपुत्र चन्द्रसिंह देशवाल गांव भदानी ने अपनी सुपुत्री सावित्री का शुभविवाह बबलू सुपुत्र नफेसिंह गांव गुढान वाले के साथ किया। *गुरुकुल झज्जर से आये सचिन शास्त्री, सुरेश शास्त्री को १०१ रुपये दक्षिणा, गुरुकुल* को दान १०१ रुपये, श्री गोशाला झज्जर को दान १०१ रुपये दिया।

-राममेहरसिंह, प्रधान आर्यसमाज भदानी, जिला झज्जर

वीरता की साक्षात्मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द

-वेदप्रकाश 'साधक' विद्यावाचस्पति, दयानन्दमठ, रोहतक

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज कर्मठता, पराक्रम, वीरता की साक्षात्मूर्ति थे। स्वाभिमानी और ईश्वरविश्वासी होने के अतिरिक्त निर्भयता उनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। मनुष्य जाति का भवन दो स्तम्भों पर खड़ा है-एक बुद्धि, दूसरी शक्ति अर्थात् ब्रह्मबल और क्षात्रबल। स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में दोनों विद्यमान थे। इसलिए सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में दोनों बलो का सम्पादन करने के लिए आनेवाली सन्तान में ब्रह्मचर्य द्वारा विद्याभ्यास कराने के लिए तप और त्याग को साकार करते हुए सर्वमेध यज्ञ किया।

आश्चर्य यह है कि इससे पूर्व वैदिक सभ्यता को जंगली और वैदिक साहित्य को मूर्खता का भण्डार समझते थे। अंग्रेजीभाषा से प्रेम था और सब व्यसनों में ग्रस्त थे। महर्षि दयानन्द के उपदेशामृत से जीवन का काटा बदल गया। सत्यार्थप्रकाश का अध्ययनं किया तो ज्ञानचक्षु खुल गए। लार्ड वैस्ट जब गुरुकुल मे पहुचे तो उनके कार्य को देखकर प्रभावित हुए। विद्यार्थियो का रहन-सहन, शिक्षा और स्वास्थ्य दर्शनीय था, इसलिए इच्छा प्रकट की कि गुरुकुल का सम्बन्ध सरकार से जोड दे तो एक लाख की वार्षिक सहायता मिल जाएगी। परन्तु स्वाभिमानी स्वामीजी ने इनकार कर दिया। राष्ट्रीयता स्वाधीनता पर पराधीनता की बेड़ों से देश कराह रहा था, जिसे देखकर सैन्यासी स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ा।

जलियावाले बाग के हत्याकाण्ड मे पजाब कांप उठा परन्तु वीरता के साथ अमृतसर में अधिवेशन बुलाया और स्वागताध्यक्ष बने। अपना भाषण पहली बार हिन्दी में दिया। रोलट एक्ट के विरोध करने के लिए स्वतन्त्रता सेनानियों का नेतृत्व करते हुए अंग्रेज सिपाहियो के सामने छाती नंगी करके निर्भयता से कहा, 'मैं खड़ा हू गोली मारो' संगीनें उनकी वीरता के आगे झुक गईं।

देश कल्याण ऊंच-नीच, छुआछूत, जाति-पाति का पूरा विरोध किया। इसके स्थान पर एकता, समता, शुद्धता का नारा देश को दिया। इसलिए वैचारिक क्रान्ति लाने के लिए सारा जीवन लगा दिया। जातिबन्धन तोड़ने के लिए अपने पुत्र-पुत्रियों का विवाह जातिबन्धन तोड़कर किया। पर्दाप्रथा और बालविवाह का प्रबल विरोध किया। उनकी यह धारणा थी कि सशक्त समाज ही धरातल पर जीवित रह सकता है। यह भारत देश परतन्त्रता के कारण खण्ड-खण्ड होरहा था भय और लोभवश भारतीय धर्मपरिवर्तन कर रहे थे। इसलिए शुद्धि आन्दोलन चलाया ताकि भूले-भटके लोग वापस वैदिकधर्म को अपनाले। परन्तु साम्प्रदायिक भावना के कारण २३ दिसम्बर १९२६ को महान् विभूति का सत्यसनातन वैदिकधर्म की बलिवेदी पर बलिदान होगया।

वैदिकधर्म को जगली कहनेवाला नास्तिक वैदिकधर्म पर कितना दीवाना होगया। इसको श्रेय स्वामी दयानन्द पर है। वह स्वयं लिखते हैं-हे गुरुवर! तुम्हारी दिव्यमूर्ति मेरे हृदयपटल पर ज्यो की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र से मेरी आकस्मिक रक्षा हुई। परमात्मा के बिना कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेश से निकली हुई अग्नि ने ससार मे प्रचलित कितने पापो को दग्ध कर दिया और मुझे गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन प्रदान किया।

स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती (उत्तरकाशी) के सान्निध्य में

साधना, स्वाध्याय एवं सेवा शिविर

(माघ शुक्ला १२ से फाल्गुन कृष्णा ७, २०५९ तदनुसार १४ से २३ फरवरी २००३)

आपके मन के किसी कोने में साधना करने की इच्छा बीज रूप में अंकुरित हो रही हो, अपने सर्वश्रेष्ठ जीवन को वेद एवं ऋषियों के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हों, विधेयात्मक एवं सृजनात्मक जीवन चाहते हो, अपने मन को पवित्र बनाने की इच्छा रखते हों, वैदिक साधना-पद्धति को जानना समझना चाहते हो, वैदिक सिद्धांतों को समझना चाहते हों या अपने को वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में समर्पित करने की अभिलाषा रखते हों तो यह शिविर आपको आपके चिंतन के अनुरूप उचित दिशानिर्देश एवं उत्तम अवसर प्रदान करेगा।

शिविरार्थियों को पूर्ण लाभ मिल सके एतदर्थ अनुशासन में चलना नितांत आवश्यक होगा। शिविर में दिनों के अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन एवं मौन के निर्धारित समय में मौन रहना अनिवार्य होगा। शिविर के पूरे काल में साधक को पत्र दूरभाष आदि किसी भी प्रकार से बाह्य सम्पर्क निषेध है। ऋषि उद्यान के अन्दर ही निवास करना होगा। समाचार-पत्र पढ़ने आकाशवाणी सुनने, दूरदर्शन देखने की अनुमति नहीं है। धूम्रपान, तम्बाकू या अन्य किसी भी प्रकार के मादक द्रव्य का सेवन निषिद्ध रहेगा। *शिविर की सभी कक्षाओं में व अन्तिम दिन तक रहना अनिवार्य है।*

जो साधक इन नियमों तथा शिविर की दिनचर्या को स्वीकार करें वे **मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज०)** से पत्र/दूरभाष/समक्ष सम्पर्क कर **शिविर से पूर्व अपने नाम का पंजीयन करालें।** शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। *पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की व्यवस्था पृथक्-पृथक् सामूहिक की* जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएं यथा मंजन, ब्रुश, साबुन, तेल, दवाएं, ध्यान में बैठने के लिए आसन (बिछौना), बिछाने-ओढ़ने की चादरें, कबल, रजाई, लिखने के लिए संचिका, लेखनी, टार्च आदि को साधक अपने साथ लाएं। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका हो तो साथ लाएं अन्यथा यहां भी क्रय की जा सकती है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएं साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रमण रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायुविकार या अन्य गम्भीर रोग हो तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर से पूर्व करवा ले। अजमेर पहुंचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवे। खाने-पीने की वस्तुएं साथ न लावें। **शिविर शुल्क ५०० रुपये** जमा करना होगा। शिविर मे भाग लेने वालो को **शिविर के प्रारम्भ दिनांक से १ दिन पूर्व सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुंच जाना आवश्यक है** क्योकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एव विभिन्न व्यवस्थाओं सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाए दी जाएंगी और शिविर का प्रारम्भ प्रथम दिन प्रात ३ ४५ से हो जायेगा। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। स्थानीय सज्जन सुविधानुसार विभिन्न कक्षाओ में आकर लाभ उठा सकते हैं। **वर्ष २००३ के अन्य आगामी शिविर-१६ से २५ मई तथा १० से १९ अक्टूबर तक होंगे।**

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : २४६०१६४

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के वरदान

गुरुकुल शिक्षा बिना देश का हो सकता कल्याण नहीं।
तन मन बुद्धि तथा आत्मा का सभव है उत्थान नहीं॥
दानवता पर मानवता की ऐसे विजय नहीं होगी।
मित्रस्याहं चक्षुषा बिना, धरणी अभय नहीं होगी
अमर न होगे जन जब तक करते वेदामृत पान नहीं।
गुरुकुल शिक्षा बिना देश का
शिष्य गुरु का मान करे न बिन गुरुकुल प्रणाली के
पूर्ण न होगे स्वप्न देखते रहेगे हम खुशहाली के
भाई-भाई से द्वेष करेगा जब तक वैदिक ज्ञान नहीं।
गुरुकुल शिक्षा बिना देश का .
घर-घर में हम यज्ञ करें, सिखलाती गुरुकुल प्रणाली
भग जाए भुखमरी देश से, न दुर्भिक्ष न बदहाली
शस्यश्यामला भारत भू का कर कोई अपमान नहीं
गुरुकुल शिक्षा बिना देश का .
नहीं फलेगा अर्थ धर्म से जो न कमाया जाएगा,
काम-काम से पूर्ण न होंगे, मोक्ष नहीं मिल पाएगा,
वेदशास्त्र की आर्ष-पाठ-प्रणाली का यदि ज्ञान नहीं।
गुरुकुल शिक्षा बिना देश का .. .
आयु, प्राण, प्रजा, पशु कीर्ति, द्रव्य, ब्रह्म का ज्ञान हमे
देगी गुरुकुल प्रणाली ही ये अमृत वरदान हमें
व्यर्थ ज्ञान नभ भू सागर का जब तक वैदिक ज्ञान नहीं।
गुरुकुल शिक्षा बिना देश का
भ्रष्टाचार बढ़ेगा दिन-दिन पाप पनपता जाएगा,
भौतिकता से पिटा हुआ अध्यात्म सिसकता जाएगा,
लक्ष्मी से बढ़ सरस्वती का जो होगा सम्मान नहीं।
गुरुकुल शिक्षा बिना देश का .
ब्रह्मचर्य विकास न होगा बिन गुरुकुल प्रणाली के,
विद्या ज्ञान विलास न होगा बिन गुरुकुल प्रणाली के,
ऋषियो की सस्कृति के रक्षण का होगा प्रावधान नहीं।
गुरुकुल शिक्षा बिना देश का. .
शारीरिक बौद्धिक आध्यात्मिक हो उत्थान न जीवन का,
नहीं समस्याएं सुलझेगी मार्ग प्रशस्त न हो जन का,
आदर्शों सिद्धान्तों की दृढ़ता का जब तक भान नहीं।
गुरुकुल शिक्षा बिना देश का . .
शुभ अनुशासन चिन्तन की क्षमता न बढ़ पाए समुचित,
क्या चर्चा विदेश की घर में भी सम्मान रहे सीमित,
प्रशासन व्यवस्था मे मिल पाए ऊंचा स्थान नहीं।
वैदिक शिक्षा बिना देश का . .
गुरुकुल शिक्षा का सुखकर सन्देश दिया श्रद्धानन्द ने,
निज सन्तति भेजो गुरुकुल आदेश दिया श्रद्धानन्द ने,
बिन आदेश निभाए सार्थक हो उनका बलिदान नहीं।
गुरुकुल शिक्षा बिना देश का हो सकता कल्याण नहीं॥

-**डॉ० कुमारी सुशीला आर्या**, चरखी दादरी

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी श्रद्धानन्द जी की उपादेयता

डा० धर्मपाल आचार्य, प्रांतीय अध्यक्ष-आर्यवीर दल (उ.प्र.),
प्राचार्य-गुरुकुल ततारपुर (गा०बाद), संचालक-गुरुकुल पूठ गढ़मुक्तेश्वर

आर्यसमाज के जाज्वल्यमान नक्षत्र, निर्भीकता एवं कर्मठता की प्रतिमूर्ति, शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्त्तक, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के उन्नायक स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज सच्चे अर्थो मे महर्षि दयानन्द जी महाराज के शिष्य बनकर उनके कार्यों को मूर्त्तरूप देने मे ही सारा जीवन समर्पित करनेवाले हैं जैसा एक शताब्दी पहले अनुभव होरहा था अथवा उन्होने समाज की रक्षा हेतु ज्ञान यज्ञ में अपने जीवन की आहुति लगाकर योगदान किया था ठीक उसी प्रकार आज के परिप्रेक्ष्य मे भी उनकी उतनी ही महती आवश्यकता अनुभव की जारही है। जितनी एक शताब्दी पूर्व थी। राजनैतिक रूप मे, धार्मिक रूप में, सामाजिक रूप में, शारीरिक एवं आत्मिक रूपेण भी हर दृष्टि से उनके दृष्टिकोण और मानसिक स्तर पर चिन्तन करने की आवश्यकता है। आर्यसमाज के प्रखर मनीषी नेता जो आज भी प्रान्तवाद-जातिवाद एव वर्गवाद की कीचड़ में फंसकर आर्यसमाज के गगनचुम्बी महल की सुरक्षा करने मे असमर्थ होरहे हैं उन्हे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर संकल्प लेना चाहिए कि जो नहीं होना चाहिए था वो होरहा है और जो होना चाहिए था उसकी ओर से हमारा ध्यान ही हट गया है। उसकी पूर्ति के लिए सभी को सकल्प लेकर सगठन का परिचय देना है। सारे ससार को '**संगच्छध्वं संवदध्वं**' का पाठ पढ़ानेवाला सगठन आज स्वयं मे ही बिखर गया है और भविष्य की परिकल्पनाओ में भी यदि ऐसा ही स्वरूप बना रहा तो आर्यसमाज के प्रति आस्थावान् लोगों के हृदय मे जो श्रद्धा और विश्वास है वह किसी अन्य संगठन के साथ मे जुड़ जायेगा और यह केवल भूतकाल के गीत गाने और देश को स्वतन्त्र करने के इतिहास तक ही पढने के लिए बच्चो को प्रेरणा का स्रोत के रूप मे सुना जायेगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने पंजाब प्रान्त में जन्म लेकर उत्तर प्रदेश को कार्यक्षेत्र बनाया और दिल्ली को केन्द्र बनाकर वहीं पर बलिदान होकर अपने जीवन की पूर्णाहुति दे डाली। ऐसे सन्यासी के प्रति तत्कालीन नेताओ ने जो अपनी श्रद्धाजलियां दी थी वे याद करने योग्य हैं राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी जी कहते हैं 'कि मुझे उनकी मौत को देखकर मन मे इच्छा होती है मेरी मौत भी ऐसी वीरतापूर्ण हो', प० जवाहरलाल नेहरु ने उनकी भव्यता और व्यक्तित्व के बारे में लिखा था कि उनका सिह जैसा सीना-मोटी आंखे विशाल भव्यता का आकर्षण स्वत ही मन को मोह लेता था। इसी से आप अनुमान लगा सकते हैं कि उनके प्रति श्रद्धा के कितने भाव थे प्रतिवर्ष हम उनका बलिदान दिवस मनाते हैं संकल्प लेते हैं लेकिन आर्यसमाज के नेता अपने संकल्प को अभी साकार रूप नहीं दे पाये हैं। आप उनकी आत्मीयता से आत्मीय भावनाओ को पहचानने का प्रयास करे। महर्षि स्वामी दयानन्द जी के निर्वाण के पश्चात् आर्यसमाज के नेताओं ने डी०ए०वी० कालेज के रूप में उनकी स्मृति के रूप में लाहौर में विद्यालय की स्थापना की जिसमें स्वामीजी पंडित हंसराज जी, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ही मुख्य रूप से थे। एक शताब्दी पूर्व अंग्रेजी शिक्षा इतनी प्रभावी नहीं थी लेकिन स्वामीजी ने डी०ए०वी० कालेज के होते हुए भी अपनी आत्मिक शान्ति का परिचय देकर ही इसमें उल्टी गंगा बहाकर दिखाई कि गुरुकुल शिक्षा के बिना हमारे बच्चों का सर्वांगीण विकास असम्भव है। अत. संकल्प लेकर उसमें जीवन की जवानी की आहुति प्रदान कर दी। आज भी यह प्रश्न उसी प्रकार हमारी ओर निहार रहा है। आज की शिक्षापद्धति ने हमारे बच्चो में भारतीय संस्कृति के प्रति घृणा पैदा करदी है और चरित्रनिर्माण के प्रति पूर्णरूपेण उदासीनता आ गयी है। अत: प्राचीन शिक्षा के लिए मुस्लिम मदरसों की तरह जगह-जगह गुरुकुल स्थापना के कार्यक्रम की महती आवश्यकता है। देवबन्द की तरह केन्द्र बनाकर जहा आचार्य एव उपदेशक तैयार होकर आर्यसमाजरूपी उद्यान की रक्षा के लिए संकल्पित विद्वान् तैयार हो सके इस कार्यक्रम को प्रमुखता प्रदान की जाये। उस समय न प्रतिनिधि सभा थी और न ही ऐसा वातावरण था। उन्होने लोगो को समझाने के लिए स्वयं वानप्रस्थ लेकर अपने बच्चों को साथ लेकर हरद्वार मे बैठना आवश्यक होगया था आज के नेताओ के सामने कथनी और करनी मे बडा अन्तर दिखाई देरहा है इसके लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से कभी-कभी पत्राचार होता है लेकिन पता नहीं क्यूं उसमें गति नहीं हो पाती क्यो इसके लिए समर्पित व्यक्तित्व नहीं मिलता अथवा किसी की रुचि दिखाई नहीं देती न केवल लोगों की भावनायें भडकाने के लिए समय-समय पर चर्चा करने मात्र से ही संगठन बन जाते हैं और पत्रावलियो में ही योजनायें बनाकर इतिहास बन जाता है। इतिहास जिन्दा बलिदानों से ही होता है उसके लिए तो बलि देनी ही होगी कौन आता है श्रद्धानन्द बनकर देखना है। शुद्धि आन्दोलन की रूपरेखा उन्होंने प्रारम्भ की आज उधर भी आर्यसमाज ध्यान नहीं है जातिवाद को बढ़ावा देकर सरकार वोट के माध्यम से चुनाव लड़ाती हैं। आप उसी आधार पर लोगो में प्रचार करके उन्हें पुनर्मिलन के रूप में अपने घर वापस बुलावे। क्योंकि कठमुल्लापन से वे भी आहत हैं। प्रचार से वातावरण बनाया जाये दिल्ली की जामा मस्जिद से भाषण देने का अभिप्राय उनकी लोकप्रियता, निर्भीकता एवं कर्मठता तथा समर्पण भाव था। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने भी गिरजाघर में जाकर वेदों का सन्देश सुनाया था हमें भी इस दिशा मे सोचना होगा। क्या आज की परिस्थितियां उस समय की अपेक्षा अधिक चिन्तनीय हो रही हैं आज चारों तरफ आक्रमण होरहे हैं। राजनीति मे मनुवाद का नाम लेकर आर्यसमाज की भावनाओं पर कुठाराघात होरहा है। उन्हें समझाया जाये कि मनुवादी व्यवस्था से ही आप ऊपर उठकर मुख्यमन्त्री बनी हैं। अन्यथा और कोई वाद ऊपर उठने की आज्ञा नहीं देता ऐसा प्रकोष्ठ आर्यसमाज में होता था जो प्रत्येक आक्रमण का उत्तर देकर अपनी मान्यताओं की स्थापना करता था। चाहे सम्प्रदायवादियों का उत्तर हो और चाहे राजनैतिक स्तर हो। आज आर्यसमाज अपनी पहचान समाप्त करके समझौतावादी नीति की तरह नई पहचान बनाने में लगा है। स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर प्रत्येक आर्यसमाज के सैनिक को चिन्तन करने की आवश्यकता है और अपने को उस तुला पर तोलकर जो जहां जिस प्रकार (स्तर) का नेता है। विद्वान् है उपदेशक ब्रह्मचारी है। गृहस्थ है-वानप्रस्थ अथवा संन्यासी है राजनीति में या किसी भी कार्यक्षेत्र में सबसे पहले अपनी मान्यताओं की पहचान कराने याद दिलाने का संकल्प लेना है वर्ण-व्यवस्था आश्रम के प्रत्येक पहलू पर चिन्तन करके उसे क्रियान्वित करने की योजना तैयार की जाये उसके लिए हम सभी आर्यों को नेताओं को अपने अहंकार को समाप्त करके संगठन को प्रमुखता प्रदान की जाये तभी हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस से प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं और उसका मनाना तभी सार्थक होगा क्योंकि उनकी आवश्यकता एक शताब्दी के बाद भी अनुभव होरही है। हम उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का संकल्प लें और उनके सच्चे अनुयायी होने का परिचय देकर जीवन की सार्थकता सिद्ध कर सके तो हमारा और आर्यसमाज का भी सौभाग्य होगा।

आर्यसमाज के १० नियमों पर भजन

(पं० रामरख आर्य भजनोपदेशक गूजरानी, भिवानी)

टेक-अरे दस नियम ऋषि के धार ले तेरी नइया पार उतर ज्या।
जैसे नियम बनाये ऋषि ने, ऐसे नहीं बनाये किसी ने
हजरत मुहम्मद ईसामसीह ने, अरे पढके सोच-विचार ले
तेरी नइया पार उतर ज्या।

१ सत विद्या जो दुनियांभर की
जगल बस्ती ग्राम नगर की
आदि मूल वो सब ईश्वर की
उस परमपिता को प्यार ले
तेरी नइया . .

२ सृष्टि का कर्त्ता धर्त्ता है
ना कभी जन्म नहीं मरता है
ईश्वर न्याय दया करता है
भज अजर करतार ले
तेरी नइया .

३ प्रभु ज्ञान का वेद खजाना
वेद का पढना और पढ़ना
परम धर्म ऋषिवर ने माना
अरे मुक्ति का अधिकार ले
तेरी नइया ...

४ सच्चाई के पथ पै लागो
कर्म वचन से झुठ को त्यागो
सुबह समझना जब भी जागो
संयम से मन को मारले
तेरी नइया. . ..

५. काम चाहे कोई छोटा बड़ा है
सत्य तराजू का पलड़ा है
तोल हो पूरा धर्म धड़ा है
कर कर्म वेद अनुसार ले
तेरी नइया . .

६. परमार्थ में समय लगाओ
मुख्य उद्देश्य यही बनाओ
तीनों उन्नति करके दिखाओ
जीवन को आप संवार ले
तेरी नइया . . . .

७ सबसे प्रीति धर्मपूर्वक
यथायोग्य सत्कर्मपूर्वक
भेदभाव नहीं शर्मपूर्वक
अज्ञान का चश्मा उतार ले
तेरी नइया. . .

८ मूर्खता का नाश करो तुम
विद्या का प्रकाश करो तुम
वेदों पै विश्वास करो तुम
विज्ञान ज्ञान भण्डार ले
तेरी नइया ..

९. सबकी तरक्की अपनी तरक्की
मन मे बात जमा लो पक्की
ऋषि दयानन्द ने लिख रखी
दुनिया को मान परिवार ले
तेरी नइया

१०. अपने काम में सब स्वतन्त्र
सामाजिक में हों परतन्त्र
ऋषि का है ये दसवां मन्त्र
रामरख का सुन प्रचार ले
तेरी नइया पार उतर जा।

कथावाचक महानुभावों से अपील

श्रीराम, श्रीकृष्ण या सत्यनारायण आदि की कथा सुनानेवाले महानुभावों से प्रार्थना है कि श्रोताओ को यह बताने की कृपा किया करें कि मनुष्य को क्या खाना चाहिए। आज मीट, मछली, अण्डों का बोलबाला है जो बाजार में खुलेआम बिक रहे हैं और बुद्धिहीन लोग खारहे हैं। इनको खाकर टी०बी० कैंसर जैसे भयंकर रोगी में फंस रहे हैं। इसके साथ-साथ धूम्रपान, मद्यपान करके अपने पांव पर स्वयं कुल्हाड़ी मार रहे हैं। इन सबके सेवन करने से बल, बुद्धि और धन का नाश होता है। यदि सुप्रसिद्ध साधु-सन्त चाहें तो अपने कार्यक्रमों में शाकाहारी बनने का उपदेश करके बुरी आदतों से मनुष्य को बचने की प्रेरणा दे सकते हैं। इस समय दूषित वातावरण को देखते हुये यह परम आवश्यक कर्त्तव्य है। जब तक लोगों का खान-पान नहीं सुधरेगा तब तक शुद्ध विचारों का हनन होता रहेगा और मानवता (इन्सानियत) चीखती चिल्लाती रहेगी। यदि आप सुख-शान्ति चाहते हो तो पहले अपना खान-पान सुधारो।

-देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

आर्य-संसार

श्री सुखवीर शास्त्री सभा के पुस्तकाध्यक्ष मनोनीत

आर्यसमाज हनुमान कालोनी रोहतक के नवयुवक कार्यकर्ता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सबसे कम आयु के अन्तरंग सदय श्री सुखवीरसिंह शास्त्री को सभा की अंतरंग दिनांक ७-१२-२००२ को पुस्तकाध्यक्ष मनोनीत किया गया है।

आशा है ये सभा के पुस्तकालय तथा प्रकाशन को उन्नत करने में योगदान करेंगे।

यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

श्रीकृष्ण मानव कल्याण समिति द्वारा निर्धन छात्रों को जर्सियां वितरण एवं भगवान दास बजाज का सम्मान

दिनांक ११-१२-२००२ ई० को आर्यसमाज मन्दिर कोर्ट रोड के प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान एवं स्कूल प्रबन्धक डॉ० आर एस. सांगवान ने सिरसा नगर की समाजसेवी संस्था श्री कृष्ण मानव कल्याण समिति को अपने परिवार की ओर से ११००० रुपये की राशि भेंट की गई। इसी राशि से समिति ने ११६ निर्धन विद्यार्थियों को शीतऋतु से बचने के लिए जर्सियां वितरित की गई। इस अवसर पर समिति के संरक्षक श्रीभगवान दास बजाज का सम्मानित भी किया गया।

डॉ० आर.एस. सांगवान प्रबन्धक आर्य सी.सै. स्कूल, सिरसा श्री भगवानदास बजाज को सम्मानित करते हुए।

डॉ० आर एस सांगवान ने श्रीकृष्ण मानव कल्याण समिति के सामाजिक कार्यो विशेषकर निर्धन परिवारों की कन्याओ के विवाह आयोजन करना, चिकित्सा शिविरो का आयोजन करना, निर्धन छात्रों को पुस्तकें, कापियां वितरण करना, जर्सियां वितरण करना आदि की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। डॉ० सांगवान ने अपने सम्बोधन में श्री भगवानदास बजाज को निष्काम कर्मयोगी कहा। सेवानिवृत्ति के बाद श्री बजाज ने सामाजिक क्षेत्र मे पर्दापण करके यश एवं कीर्ति को अर्जित किया। उन्होने अपने पुरुषार्थ से नगर के धनी परिवारों से धन एकत्रित करना एवं एकत्रित धन को परोपकारी समाजसेवी कार्यों में लगाना ही अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया। उनके अथक परिश्रम से आज यह सस्था पूरे सिरसा जिला में प्रसिद्ध है। इस अवसर पर श्री भगवान दास बजाज ने भी छात्रों को सम्बोधित किया।

स्कूल प्रिंसिपल श्री कृष्णलाल वोहरा ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि दरिद्र नारायण सेवा ही ईश्वर सेवा है। उन्होंने समिति के प्रधान श्री राजेन्द्र बजाज, उपप्रधान, सेवानिवृत्त खण्ड शिक्षा अधिकारी श्री सतीजा एवं अन्य सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद किया। मंच सचालन श्री राजकुमार वर्मा ने किया।

-**कृष्णलाल वोहरा**, प्रिंसिपल आ सी.सै स्कूल, सिरसा

आर्यसमाज गंगायचा अहीर बीकानेर का चुनाव सम्पन्न

प्रधान-जय प्रकाश आर्य, उपप्रधान-अभयसिंह आर्य, मन्त्री-मास्टर दयाराम आर्य, उपमन्त्री-महेन्द्र सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष-विजय कुमार आर्य, निरीक्षक-धर्मवीर आर्य, प्रवक्ता पुस्तकाध्यक्ष-रामकवार आर्य वकील, प्रचारमन्त्री-विजयपाल आर्य, संरक्षक-रामकरण आर्य।

नामकरण संस्कार

दिनांक १५ दिसम्बर २००२ को मास्टर दयाराम के भाजने श्री दिनेश कुमार सुपुत्र श्री रणजीतसिंह के नवजात शिशु निवासी साढ़राणा जिला गुड़गांव का नामकरण संस्कार वेदप्रचार मण्डल के उपाध्यक्ष श्री दयाराम आर्य अध्यापक द्वारा करवाया गया। वैदिकमंत्रों को सुनकर उपस्थित जन बड़े आनन्दित हुए। शिशु का नाम अभिषेक कुमार रखा गया। बच्चे के माता-पिता यजमान दम्पति ने आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा रोहतक को ५१ रुपये दक्षिणा स्वरूप भेंट किये। सभी ने बच्चे व परिवार के सुखद समृद्ध, दीर्घायु व उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

-**दयाराम आर्य अध्यापक,** उपप्रधान, वेदप्रचार मण्डल रिवाडी (हरयाणा)

महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन

आर्यजनों को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा मे शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन २८ फरवरी एवं १-२ मार्च २००३ को समारोहपूर्वक किया जा रहा है।

मेरी समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं आर्यसमाज से सम्बन्धित महानुभावों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में उक्त समारोह में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढाये। आप सभी के आवास एव भोजन की व्यवस्था टंकारा में टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा को विश्वदर्शनीय बनाने के लिए इस वर्ष टंकारा ट्रस्ट की ओर से राजकोट-मौरवी राज्यमार्ग पर भव्य महर्षि दयानन्द द्वार का निर्माण लगभग १६ लाख रुपये की लागत से किया जा रहा है। मेरी समस्त आर्यजनों एव आर्यसमाज तथा उनसे सम्बन्धित संस्थाओं से प्रार्थना है कि इस पुण्य कार्य हेतु अपनी ओर से तथा अपनी संस्थाओं की ओर से अधिक से अधिक दानराशि 'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा' के नाम केवल खाते में उक्त पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा ८०जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है। सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद।

-**रामनाथ सहगल,** मन्त्री-श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

आर्यसमाज बस्ती हरफूल सिंह दिल्ली का चुनाव सम्पन्न

दिनाक ८-१२-२००२ दिन रविवार को आर्यसमाज, बस्ती हरफूल सिंह, देहली में श्री प्रेम शंकर पाण्डेय जी की अध्यक्षता में प्रधान आर्यसमाज, बस्ती हरफूल सिह के चुनाव की प्रक्रिया सभी सदस्यों की मौजूदगी में सम्पन्न हुई जिसमें श्री मदन मोहन शर्मा पुत्र स्व श्री मुन्नालाल शर्मा, निवासी ६०, बस्ती हरफूल सिंह, दिल्ली को प्रधान निर्विरोध चुना गया।

-तिलकराज, मन्त्री

सत्यार्थप्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि १० जनवरी २००३

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता के अन्तर्गत निबन्ध प्राप्त होने की अन्तिम तिथि बढाकर १० जनवरी, २००३ कर दी गई है। प्रतियोगी निबन्ध प्रेषण मे शीघ्रता करें।

विषय : सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय (सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास के आलोक मे)

प्रथम पुरस्कार - ३१०० रुपये, द्वितीय पुरस्कार - २१०० रुपये

तृतीय पुरस्कार - १५०० रुपये। पांच सांत्वना पुरस्कार भी।

दूरभाष : २५२२८२२, २४१७६९४, २८६८६४१

निवेदक **अशोक आर्य**
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर

हरयाणा की समस्त आर्यसमाजों को आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक से सम्बन्धित समस्त आर्यसमाजो को सूचित किया जाता है कि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २ फरवरी २००३ रविवार को सभा कार्यालय रोहतक मे होना निश्चित हुआ है। अत: सभी आर्यसमाजो के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्यसमाज का वर्ष २००१-२००२ का प्राप्तव्य वेदप्रचार दशाश तथा सर्वहितकारी शुल्क दिनांक २० जनवरी २००३ तक सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करे। इस शुल्क के साथ सभी आर्यसमाजें वर्ष २००१-२००२ में अपने आर्य सभासदो की सूची भी भेजे जिसमे आर्य सभासद का नाम, पिता का नाम, आयु, व्यवसाय तथा मासिक या वार्षिक चन्दे का विवरण भी लिखें। यदि आपने पूर्व राशि भेज रखी है तो प्राप्तकर्ता का नाम, राशि तथा रसीद क्रमाक दिनाक सहित सभा को लिखकर भेज देवें। प्रचार की आवश्यकता हो तो पत्र लिखकर सूचित करें जिससे उपदेशक/भजनमण्डली को आपके आर्यसमाज में प्रचारार्थ भेजा जावे। सभी आर्य सभासदो से वार्षिक शुल्क लेकर नियमानुसार आगामी वर्ष २००३ के लिए चुनाव करके सभा को लिखित रूप में भेज देवें। -**यशपाल आचार्य**, सभामन्त्री

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	गुरुकुल मधुबन जिला करनाल (योगप्रशिक्षण शिविर व स्थापनोत्सव)	२५ से ३१ दिस० २००२ व १ जनवरी २००३
२	आर्यसमाज वीर योग आश्रम मिर्जापुर जिला फरीदाबाद	११ जन से १४ जन ०३
३	गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद	७ से ९ मार्च, ०३
४	आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	२१ से २३ मार्च, ०३

—**रामधारी शास्त्री,** सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

वेद में दान की महिमा

-स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल, कालवा

'दान' देना शुभ कर्मों की शृंखला में अपना एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। गृहस्थ आश्रम को तीन आश्रमों अर्थात् ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रमों का आधार कहा गया है, क्योंकि इन तीन आश्रमों की आवश्यकताओं की गृहस्थियों के दान द्वारा ही पूर्ति होती है। वेद में तो यहां तक कहा है-

न तदोको अस्ति।। (ऋ० १०-११७-४)

अर्थात् अदाता गृहस्थ का घर, घर नहीं है। सभी प्रकार के सुख की चाहना करने वाले को दान अवश्य करना चाहिये।

य आध्राय च कमानाय पित्वोऽन्नवान्त्सन्तपितायोप जग्मुषे।
स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो चित्स मर्डितारं न विन्दते॥ (ऋ० १०-११७-२)

भावार्थ-जो धन और अन्न का स्वामी दुर्बल अन्न को चाहनेवाले और दरिद्रता से पीड़ित मनुष्य को तथा गृह पर आकर आवश्यकता की पूर्ति के लिये याचना करने वाले को कुछ न देने का दृढ निश्चय कर लेता है वह अपने को सुखी करने वाले को प्राप्त नहीं होता। विरोधियों को मित्र बनाने की इच्छा रखने वाले को भी दान देने की आवश्यकता है।

अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम्। (ऋ० १०-११७-३)

उसके लिए=दानदाता के लिये दान क्रिया रूपी यज्ञ मे पर्याप्त फल होता है अथवा लोगों की सभा में पर्याप्त सम्मान मिलता है और वर्गों में भी मित्र बना लेता है। मित्रता का कर्त्तव्य निवाहने हेतु दान आवश्यक-

न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः।। (ऋ० १०-११७-४)

वह सखा नहीं जो समय पर काम आने वाले सखा के लिए अन्न आदि वसुओं को नहीं देता। स्वयं को पाप मुक्त रखने के इच्छुक को दानी होना आवश्यक-

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलदी॥ (ऋ० १०-११७-4)

आगे पीछे न देखने वाला वह धन का स्वामी अन्न आदि पदार्थों को व्यर्थ ही प्राप्त करता है। मैं परमेश्वर कहता हूँ कि धन उसकी मौत है जो न विद्वान् का पोषण करती है, न मुसीबत में साथी जनों का ही। वह अकेला भोग करने वाला पाप खाता है। लोकैष्णा अर्थात् ससार में यश प्राप्ति के इच्छुक को दान देना आवश्यक-

कृषन्नित्फाल आशितं कृणोति यन्नध्वानमपवृङ्क्ते चरित्रैः।
वदन्ब्रह्मावदतो वनीयान्पृणन्नापिरपृणन्तमभि ष्यात्॥ (ऋ० १०-११७-७)

खेत को गहराई से खोदता हुआ हल का फाल कृषक को अन्न का भोक्ता बनाता है, रास्ते पर चलता हुआ यात्री अपनी चाल से गन्तव्य स्थान पर पहुँचता है। उपदेश ब्राह्मण अन उपदेश ब्राह्मण से श्रेष्ठ होता है। दाता अदाता को अपने दान यज्ञ से अतिक्रान्त कर बड़ा कर देता है।

परमात्मा सर्वश्रेष्ठ दान-दाता

सृष्टि के समस्त धनों का स्वामी परमात्मा है। उसने अपना समस्त धन जीवों को दान दे रखा है। वह यज्ञ रूप हो दिन-रात, हर घड़ी, हर पल निरन्तर यज्ञ में संलग्न है, जो मनुष्य उसके इस यज्ञ में आहुति जीवों के हितार्थ दान करता है ऐसा मनुष्य उस परमात्मा के विशाल यज्ञ को आगे बढ़ाता है। उसके यज्ञ को विस्तृत करता है। ऐसा दानी मनुष्य उसका सच्चा और प्रिय पुत्र या पुत्री है। क्योंकि वेद में कहा भी है-

अनुव्रतः पितुः पुत्रो॥ (अथर्व० ३-३०-२)

पुत्र अपने पिता के द्वारा प्रारम्भ किया हुआ उत्तम कर्म को उत्तम प्रकार चलावे ऐसे सुपुत्र के लिये वह पिता- **वि राय और्णोर्दुरः।।** (ऋ० १-६८-५) धन के द्वार खोल देता है। क्योंकि उसका समस्त ऐश्वर्य- **राधः प्रशस्तये महिना रथवते॥** (ऋ० १-१२२-११) उसकी समस्त महत्ता धन के साथ प्रशस्त शरीरवान् अर्थात् उत्तम करने वाले मनुष्य के लिये है। ऐसे दानी के लिये परमात्मा-

इन्द्रो यज्वने गृणते च शिक्षत उपेद ददाति न स्वं मुषायति।
भूयो भूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम्॥ (ऋ० ४-२१-२)

बड़े ऐश्वर्यों वाला परमात्मा यज्ञ=दान करनेवाले को उपदेश करने वाले को शिक्षा देता है और आदर करके धन देता है, उससे कुछ भी नहीं छिपाता। धन किसी का नहीं। धन, सम्पत्ति ऐश्वर्य आदि चञ्चल स्वभाव के हैं ये सदा किसी एक के पास स्थाई रूप से नहीं रहते। वेद में कहा भी है-

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः॥ (ऋ० १०-११७-५)

धन से बढ़ हुये मनुष्य को चाहिये कि वह याचना करनेवाले को धन देवे और व्यवहार तथा परमार्थ के दीर्घतम मार्ग को देखे। अरे! ये तो धन रथ के पहिये के समान फिरते हैं और एक दूसरे के पास जाते हैं। किसका धन नष्ट नहीं होता ? जो कि-

यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स रायः ऋतपा ऋतेजाः।। (ऋ० ७-२०-4)

जो मनुष्य यज्ञ के द्वारा अर्थात् दान के द्वारा परमात्मा की पूजा करते हैं। वह ऋत रक्षक धनों में बसाता है अर्थात् उसका धन कभी नष्ट नहीं होता। धन का उत्तम उपयोग, दान, मध्यम उपयोग-भोग और निकृष्ट उपयोग-नाश है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
विक्रमसंवत् २०५९
दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३० अंक ५ २१ दिसम्बर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अङ्क

२३ दिसम्बर १९२६ को हुए स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान पर विशेष-

'लो, सामने खड़ा हूं, हिम्मत हो तो गोली मारो'

-सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक

पंजाब की वीरप्रसविनी धरती ने अनेक महान् देशभक्तों को जन्म देकर अपने आप को भारत के इतिहास में अमर किया था, जिनमें गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविन्दसिंह, सतगुरु रामसिह, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, भाई मतिदास व भाई सतीदास, मदनलाल धीगड़ा, सरदार अजित्सिंह, वीर भगतसिंह, सुखदेव, स्वामी श्रद्धानन्द तथा वीर उधमसिंह आदि अनेक वीर महान् देशभक्त पैदा किये, जिनका भारत के इतिहास में सदैव नाम अमर रहेगा।

आज तो एक ऐसे महान् स्वतन्त्रता सेनानी, महान् देशभक्त, महर्षि दयानन्द के अनुपम अनुयायी महर्षि से ही प्रेरणाप्राप्त निर्भीक संन्यासी के २३ दिसम्बर १९२६ को हुए महान् बलिदान पर उनकी स्मृति में आपके सामने उनका देशभक्ति भरा संक्षिप्त सा यशोगान करना चाहता हूं।

वे हैं निर्भीक महान् देशभक्त संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द। स्वामी जी पंजाब के जालन्धर जिले के 'तलवन' ग्राम के निवासी थी। इनके पिताजी लाला नानकचन्द जी उत्तरप्रदेश के बरेली शहर मे इन्स्पैक्टर पुलिस थे। सौभाग्य से नानकचन्द जी महर्षि दयानन्द के व्याख्यानों के प्रबन्धक थे। उनकी वहां कई पुलिसवालों के साथ ड्यूटी थी। नानकचन्द जी महर्षि दयानन्द के व्याख्यानों से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कुपथगामी, बिगड़े हुए, नास्तिक विचारों के अपने पुत्र मुंशीराम को भी महर्षि के व्याख्यानों के साथ लेगए। मुन्शीराम तो महर्षि के प्रथम दर्शनों को पाकर ही अत्यन्त प्रभावित हुए। आज महर्षि का व्याख्यान 'ईश्वर विषय' पर था। व्याख्यान के बाद मुन्शीराम ने ईश्वर के विषय में अनेक प्रश्न पूछे, महर्षि के द्वारा प्रश्नों के उत्तर सुनकर मुन्शीराम बडा प्रभावित हुआ।

मुन्शीराम ने महर्षि से प्रभावित होकर सारे कुकर्मों का त्याग करने का प्रण किया। जिनमें शराब पीना व वेश्या के कोठे पर जाना भी शामिल था, सबका एकदम से बड़ी सख्ती के साथ परित्याग कर दिया। महर्षि के प्रथम दर्शन से ही वे अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्हें महर्षि के महान् व्यक्तित्व से प्रभावित तो होना ही था, क्योंकि स्वयं ही महर्षि एक महान् देशभक्त सुधारक थे। महर्षि की शरण में जो भी आया वह तो सुगन्धित सुवर्ण बनकर ही लौटा। वह तो इतिहास में प्रसिद्ध होगया। महर्षि की परम प्रेरणा से प्रभावित होकर ही फ्रैंच लेखक रोमा रौलां ने रामकृष्ण परमहस का जीवनचरित्र लिखते हुए उसके पृष्ठ १५९ में जीवनचरित्र के बीच मे ही महर्षि दयानन्द की चर्चा किये बिना न रहा गया, वे लिखते हैं-

'दयानन्द ने भारत के निष्प्राण शरीर में अपना अदम्य उत्साह, अपना दृढ़निश्चयात्मक संकल्प और अपना सिंह जैसा रक्त भरकर, उसे सजीव किया। उनके शब्द वीरोचित शक्ति के साथ गूंज उठे।'

तो, युवक मुन्शीराम भी इन महर्षि के प्रथम दर्शन पर ही महर्षि का ही अनुयायी बनकर रह गया। एकदम ही सुधर गया और आर्यसमाज में प्रविष्ट होगया। दयानन्द के प्रथम दर्शन से इस वकील पेशा मुन्शीराम पर महर्षि का ऐसा जादू चल गया कि यह तो दयानन्द के गीत व प्रभुभक्ति के गीत गाता जालन्धर की गलियों में फेरी लगाता फिरता और प्रभातफेरी लगाकर आर्यसमाज का प्रचार करने लगा।

उसने महर्षि का अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पढ़ा, सब संशय मिटते चले गए। वह आर्यसमाज कार्यकर्त्ता बनकर आर्यसमाज का वरिष्ठ नेता बनकर पंजाब का नेतृत्व करने लगा। उसे आर्यसमाज मे साथी-सहयोगी भी ऐसे मिले, जो सारे देश मे प्रसिद्ध थे। वे थे-पंजाबकेसरी लाजपतराय, पं० लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, म० हंसराज तथा अन्य अनेक उत्साही आर्यजन मिले। वह पंजाब प्रतिनिधि सभा का प्रधान भी बना, वह इससे भी त्यागपत्र देकर आगे बढा। ३० अक्तूबर १८८३ में महर्षि के बलिदान की स्मृति मे उनके स्मारक को स्थायी रूप देने के लिये जो महर्षि के नाम पर डी ए वी. की स्थापना कीगई थी, उससे कोई भी कार्यसफल न होता देखकर मुन्शीराम जी ने महर्षि की सत्यार्थप्रकाश में लिखित वैदिकपद्धति के अनुसार एक सुदृढ़ शिक्षण सस्था गुरुकुल के रूप मे स्थापित करने का निश्चय किया। इसके लिये उन्होने ३००० हजार रुपये एकत्र करने का निश्चय करके अपना व्रत पूरा किया।

१९०२ में गगा के किनारे हरद्वार मे गुरुकुल की स्थापना की। महान् त्याग से अपनी जालन्धर की कोठी भी बेचकर सारी रकम गुरुकुल में देदी। अपना सर्वस्व स्वाहा करके अपने सुन्दर से पुत्रों हरिश्चन्द्र व इन्द्र को साथ लेकर बीहड़ घनघोर जंगल में, जहां हिंस्र जन्तुओं का आवास था वहां पर भारत की अथवा विश्व की सबसे बड़ी संस्था खोली गई। जिसमें वेद वेदाङ्गों, इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान आदि की शिक्षा हिन्दी माध्यम से दी जाने लगी।

१९३९ में हैदराबाद के नबाव उस्मान अली ने हिन्दुओं पर अनेक धार्मिक प्रतिबन्ध लगाए थे, स्वामी नारायण जी व स्वामी स्वतन्त्रानन्द के नेतृत्व में गुरुकुल के पाच ब्रह्मचारियो ने सत्याग्रह किया था, फिर तो सारे देश से आर्यजनता उमड़ पड़ी, अनेक बलिदान देकर निजाम हैदराबाद के घुटने टिकवा दिये। आर्यों की यह सर्वप्रथम अन्याय के विरुद्ध विजय थी।

फिर तो स्वामी श्रद्धानन्द ने अनेक गुरुकुलों की स्थापना के महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश में लिखित शिक्षासम्बन्धी सपनों को पूरा करने के लिये अनेक गुरुकुलों की आधारशिला अपने द्वारा रक्खी, जिनमे गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल भैंसवाल, गुरुकुल मटिण्डू, गुरुकुल झज्जर आदि हरयाणा में गुरुकुलों की स्थापना कीगई। इसके बाद अनेक आर्यनेताओं ने अनेक प्रान्तों में गुरुकुल शिक्षापद्धति के गुरुकुल स्थापित किये। कन्याओं के गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल खानपुर, कन्या गुरुकुल खरल जीन्द, कन्या गुरुकुल लोवाकलां, कन्या गुरुकुल मोरमाजरा तथा अन्य कई कन्या गुरुकुलो की अनेक आर्यनेतओं ने हरयाणा प्रान्त मे गुरुकुलों की स्थापना की। सारे भारत में कन्याओ को शिक्षित करने के लिए सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द ने ही महान् प्रयत्न किये थे। आर्यसमाज के प्रयत्नों का ही यह फल है कि आज सारे भारत में कन्याओ को शिक्षित किया गया। आज वे शिक्षित होने से प्रत्येक क्षेत्र मे पुरुषों से भी आगे बढ़ रही है। महर्षि के बाद यह महान् कार्य किया स्वामी श्रद्धानन्द ने।

म० गांधीजी द्वारा सचालित असहयोग आन्दोलन के कारण ३० मार्च १९१९ को राजधानी दिल्ली मे स्वामी श्रद्धानन्द ने एक महान् जुलूस का नेतृत्व

किया, जब यह जुलूस चांदनी चौक में पहुचा तो अंग्रेजी फौज के सिपाहियों ने रोकने का प्रयत्न करते हुए स्वामीजी को चेतावनी देते हुए गोरखे सिपाहियों ने उन्हें गोली से उडाने का भय दिखाया, स्वामीजी ने लाखों आन्दोलनकारियों के सामने ही गोरखे सिपाहियों व अंग्रेज अधिकारियों के सामने ही आगे बढ़कर कहा-"लो, सामने खड़ा हूं, हिम्मत है तो गोली मारो" इस वीरता भरे चेलैंज को सुनकर गोरखे सिपाही पीछे हट गए।

विश्व के इतिहास में यह वीरतापूर्वक वाक्य स्वामी श्रद्धानन्द जैसे निर्भीक वीर संन्यासी के इतिहास में अमर होगया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने इस निर्भीकतापूर्ण वीर कार्य को देखकर चादनीचौक के निकट जामा मस्जिद तथा फतेहपुरी मस्जिद के इमामें तथा अनेक मुस्लिम नेताओं ने उसी दिन उसी समय उन्हें जामा मस्जिद व फतेहपुरी मस्जिद में भाषण देने के लिए तुरन्त निमन्त्रित किया, कई नौजवान उठे और स्वामी श्रद्धानन्द को तांगे में बैठाकर जामा मस्जिद लेआए। लाखो मुस्लिमों को देशभक्तिपूर्ण आपसी भाईचारे का आह्वान करते हुए जामा मस्जिद के सर्वोच्च मिम्बर (मंच) पर बैठकर एक घंटे तक भाषण दिया। वेदमन्त्रों का उच्चारण किया। फिर फतेहपुरी मस्जिद में भी वही सन्देश दिया। दिल्ली के हिन्दू मुसलमानों में उस समय आपसी भाईचारा देखते ही बनता था। यदि यह ऐतिहासिक हिन्दू मुस्लिम भाईचारे का सगठन बना रहता तो आज पाकिस्तान न बनता।

१९०७ में पटियाला रियासत के ८५ आर्यसमाजियों पर देशद्रोह का मुकदमा मि० बारबर्टन पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट द्वारा चलाया गया। स्वामीजी ने अपना वर्षो पुराना वकालत का सर्टिफिकेट निकालकर अनेक वकीलो की सहायता से केस लड़ा। मुकदमे में पुलिस की पराजय हुई। राजद्रोह के केस से ८५ आर्यसमाजी रिहा हुए।

इसी प्रकार अमृतसर पंजाब के अकालियों के विरुद्ध भी 'गुरु के बाग' नाम से अंग्रजी सरकार के विरुद्ध राजद्रोह का केस चलाया गया। स्वामीजी ने अकालियों की हमदर्दी में अपने आप को गिरफ्तारी के लिए पेश किया। स्वामीजी को छ: महीने की कैद सुनाई गई, किन्तु पुलिस इस केस में हार गई, स्वामीजी छोड़ दिए गए।

इसी प्रकार १३ अप्रैल १९१९ को जलियावाला बाग में एक जलसे पर जनरल डायर अंग्रेज अधिकारी ने फौजियों को साथ लेकर तीन राउंड गोलियों की वर्षा जनता पर कीगई, कुल मिलाकर १६५० गोलिया चलाई गईं। तत्कालीन रिपोर्ट के आधार छ: सौ आदमी मारे गए। हजारों गोलियों से घायल हुए। ऐसे कठिन समय में १९१९ में अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। स्वामीजी को स्वागत[illegible] बनाया गया। स्वामीजी ने अंग्रेजी भाषणों की परम्परा को तोड़कर अपना स्वागत भाषण हिन्दी में दिया। जिसे सारी जनता ने सराहा।

स्वामीजी ने खिलाफत आन्दोलन के कारण कांग्रेस से त्यागपत्र देदिया था। वे गाधीजी की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति का समर्थन नहीं करते थे।

अतएव १९२३ में स्वामीजी ने हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की थी, जिसकी शाखाएं दिल्ली, अलीगढ, आगरा, मथुरा, भरतपुर आदि नगरों में करके शुद्धि का कार्य आरम्भ किया जाने लगा। इसके माध्यम से सर्वप्रथम २० हजार मलकाना मुस्लिम राजपूतों को शुद्ध किया। इन्हें वैदिकधर्म (हिन्दूधर्म) में प्रविष्ट किया गया। सारे देश मे शुद्धि की हलचल मच गई। मुसलमान नेताओं ने इसका विरोध करना शुरु कर किया। जिनमे प्रमुख थे-गांधीजी के सहयोगी मुहम्मद अली, शौकतइअली तथा दिल्ली के अब्दुल्ला चूड़ीवाले। स्वय गांधीजी भी इस शुद्धि कार्य से सहमत न थे। वे अपनी प्रार्थना सभाओं में भी इसका विरोध करने लगे। गांधीजी के द्वारा ऐसा वातावरण तैयार कर दिया गया कि प्रत्येक मुसलमान इस शुद्धि के कारण विरोध करने लगे। गांधीजी के द्वारा ऐसा वातावरण तैयार कर दिया गया कि प्रत्येक मुसलमान इस शुद्धि के कारण विरोध में खडा होगया। स्वामीजी का मेवात हरयाणा (पंजाब) मे भी मुस्लिम शुद्धि का कार्यक्रम था। स्वामीजी की हत्या के कार्यक्रम गुप्तरूप से बनने लगे। अन्तिम कारण बना-कराची की मुस्लिम महिला असगरी बेगम को उसकी इच्छा से शुद्ध करके उसका नाम 'शान्तिदेवी' रक्खा गया। इससे सारे ही मुस्लिम भड़क उठे। अब स्वामीजी की हत्या के लिये एक पठित नीच जिल्दसाज 'अब्दुलरशीद' को तैयार किया गया। उसे काफी धन दिया गया। वह अफगानिस्तान जाकर एक पिस्तौल लाया। इससे पहले उसने अपनी पत्नी को भी तलाक देदिया था।

वह मतान्ध मुस्लिम २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामीजी के निवास स्थान 'श्रद्धानन्द भवन' दिल्ली में पहुंचा। उसने स्वामीजी से मिलने के लिये कहा, किन्तु सेवक धर्मसिंह ने उसे कहा कि-स्वामीजी बीमार हैं, फिर मिलना। इस बीच उसने पानी मांगा, सेवक जीने से उतर पानी लेने गया तो अब्दुल रशीद ने स्वामी जी को तीन गोली छाती में मारी, स्वामीजी अपनी बलि देगए। किन्तु उस हत्यारे को दूसरे कमरे में स्थित धर्मपाल विद्यालंकार ने धर दबोचा। एक घंटे तक उसे नीचे दबाए रक्खा, जब आर्यसमाज के नेता आगए तो उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया। सारी दिल्ली में शोक छागया। स्वामीजी तो देशधर्म जाति के लिए अपना बलिदान देगए। अब्दुल रशीद हत्यारे को बचाने के लिए कांग्रेसी नेता मौलाना मुहम्मद अली, शौकतअली, अब्दुल्ला चूड़ीवाले तथा अनेक मुल्लाओं ने बड़े प्रयत्न किये। गांधीजी ने कहा था-अब्दुल रशीर मेरा भाई है, उसने यह काम अच्छा नहीं किया। स्वामीजी के बारे में गांधीजी ने कहा-शानदार महात्मा की शानदार मृत्यु।

उन्हीं तारीखों में गोहाटी आसाम में कांग्रेस का अधिवेशन होरहा था, स्वामीजी के बलिदान का समाचार सुनकर कांग्रेस कमेटी ने एक प्रस्ताव पारित किया (शोक प्रस्ताव नहीं)। उनकी पंक्तियां पढ़ लीजिये-

अर्थात्-'यह कांग्रेस श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के भीरुता और बेईमानीपूर्ण हत्या पर अपनी रोषपूर्ण घृणा व्यक्त करती हुई अंकित करती है कि आप जैसे देवतास्वरूप वीर देशभक्त की हत्या से सारे राष्ट्र को अपूरणीय क्षति पहुंची है, जिन्होंने अपना जीवन देश एवं धर्म की सेवा में अर्पण कर रखा था और जिन्होंने पतित पददलित एवं निर्धन वर्गों की सेवा को अपना सर्वोच्च लक्ष्य बना रक्खा था।'

आज आर्यसमाज का कहना है कि-

"आज उनके बलिदान की चर्चा भी
नहीं, जलते थे जिसके खून से
चिरागे-वतन,
आज जगमगाते हैं मकबरे उनके, जो
चुराते थे शहीदों के कफन॥"

वैदिक-स्वाध्याय

सत्य पर चलें !

अप्रतीतो जयति सं धनानि, प्रतिजन्यानि उत या सजन्या।
अवस्यवे यो वरिवः कृणोति, ब्रह्मणे राजा तमवन्ति देवाः॥

ऋ० ५.५०.९॥

शब्दार्थ-(**अ+प्रति+इतः**) पीछे कदम न हटानेवाला ही (**धनानि**) ऐश्वर्यों को (**सं जयति**) जीतता है, वे ऐश्वर्य चाहे (**प्रति-जन्यानि**) वैयक्तिक होयें अथवा (**या सजन्या**) वे सामूहिक होयें। और (**देवाः**) देव (**तं**) उस सत्ताधारी राजा की (**अवन्ति**) रक्षा करते हैं (**यः राजा**) जो कि राजा (**अवस्यवे**) रक्षा चाहनेवाले (**ब्राह्मणे**) सच्चे ब्राह्मणों की (**वरिवः कृणोति**) पूजा किया करता है, उनके आगे झुकता है।

विनय-पीछे कदम न हटानेवाला मनुष्य ही विजय को प्राप्त करता है। ऐसा ही मनुष्य विजयी होकर ऐश्वर्यों को पाता है। प्रतिजन से सम्बन्ध रखनेवाला वैयक्तिक ऐश्वर्य तथा जन-समूह से सम्बन्ध रखनेवाले सामाजिक व राष्ट्रीय ऐश्वर्य उन्हीं जनों या जनसमूहों को प्राप्त होते हैं जिनमें कि चिरकाल तक लगातार उद्योग करते जाने की शक्ति होती है, जिनमें लगन, धैर्य होता है, जिनमे अड़े रहने डटे, रहने का गुण होता है, जो कि कभी कदम पीछे हटाना नहीं जानते। जिनमें यह गुण नहीं है ऐसे व्यक्ति या राष्ट्र के लिये संसार में कोई ऐश्वर्य नहीं है। अतः हे व्यक्तियो! तुम धैर्य को सीखो, हे राष्ट्र! तुम मिलकर अन्त तक डटे रहना सीखो।

पर इसका दूसरा पार्श्व भी है। डटे रहना, अन्याय के विरुद्ध और न्याय के लिये ही चाहिये। परन्तु प्रायः दुनिया के सब सत्ताधारी मनुष्य स्वार्थवश हो अन्याय के लिये भी डटे रहते हैं। ऐसे डटे रहनेवालों का तो-वे चाहे कितने ही बड़े शक्तिशाली हों-विनाश ही होता है। जगत् के सचालक देव लोग तो उसी सत्ताधारी राजा की रक्षा करते हैं जो कि न्याय के लिये झुकनेवाला होता है, जो कि सत्य उपदेश देनेवाले की बात को नम्रता से सुनता है, अड़ता नहीं है, अतएव जो कि ऐसे संरक्षण चाहनेवाले को सच्चे ब्राह्मणों की सदा पूजा किया करता है। सत्ताधारी लोग यदि अपना कल्याण चाहते हैं तो उन्हें चाहिये कि वे दुनियाबी कोई सत्ता न रखनेवाले, सबका भला और रक्षण चाहनेवाले, नम्र, ज्ञानी पुरुष उन्हें आकर जो कुछ सुझावे उसे वे सत्कारपूर्वक सुनें और उनकी शुभ सलाह को वे तुरन्त पूरा करें।

जरूरत इस बात की है कि निर्बल और पद-दलित लोग सत्य पर अड़ना सीखें और सत्ताधारी लोग नमना सीखें। और उससे भी अधिक जरूरत यह है कि प्रत्येक मनुष्य सदा देखे कि वह कहीं बलवान्, अन्यायी के सामने झुक तो नहीं जाता है, कदम पीछे तो नहीं हटा लेता और असत्ताधारी सच्चे पुरुष के सामने अड़ा तो नहीं रहता।

(वैदिक विनय ७ ज्येष्ठ)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

क्र०	स्थान	तिथि
१	आर्यसमाज नरवाना (जीन्द)	२३ दिस० २००२
२	गुरुकुल मधुबन जिला करनाल (योगप्रशिक्षण शिविर व स्थापनोत्सव)	२५ से ३१ दिस० २००२ व १ जनवरी २००३
३	आर्यसमाज भीमनगर गुडगाव (स्वर्णजयन्ती समारोह)	२७-२८-२९ दिस० ०२
४	आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ जिला झज्जर (ध्यान योग शिविर, गायत्री-यज्ञानुष्ठान योग सम्मेलन)	२२ से २९ दिस० ०२
५	आर्यसमाज वीर योग आश्रम मिर्जापुर जिला फरीदाबाद	११ जन से १४ जन ०३
६	गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद	७ से ९ मार्च, ०३
७	आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	२१ से २३ मार्च, ०३

--रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

२३ दिसम्बर विशेष अनुकरणीय श्रद्धानन्द

-आचार्य यशपाल सभामन्त्री-

आर्यसमाज के लिए २३ दिसम्बर का दिन एक चुनौतीभरा दिन है। इसी दिन आर्यसमाज की मान्यताओं को ध्वस्त करने के लिए महर्षि दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यसमाज के ध्वज महान् समाजसुधारक वीर क्रान्तिकारी शुद्धि आन्दोलन के अग्रदूत गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रसारक महान् योद्धा स्वामी श्रद्धानन्द को एक मतान्ध मुसलमान युवक अब्दुल रशीद ने पिस्तौल की गोली से हत्या कर हमसे छीन लिया था। यह घटना २३ दिसम्बर वर्ष १९२६ की है। आर्यजाति के लिये उनका यह बलिदान आनेवाली अनेक शताब्दियों तक याद किया जायेगा। हम सब भी उनके जीवन से प्रेरणा लेकर ह्रासोन्मुख आर्य हिन्दू जाति को बचाने के लिए प्राणार्पण से जुट जायें। विदेशियों, विधर्मियों द्वारा उत्पन्न फूट, भेदभाव, जातिवाद, सम्प्रदायवाद को समाप्त कर ईसाई मिशनरियों मुसलमानो तथा बौद्धों द्वारा कराये जारहे धर्म-परिवर्तन को रोकें। यह भारतवर्ष ऋषिमुनियों, महापुरुषों की जन्मस्थली रहा है जिन्होने अपनी जीवन ज्योति से संसार को सन्मार्ग दिखाया है। उसी परम्परा में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द हैं जो इस देश के गौरव हैं, उनके कार्यों तथा जीवन की विशेषताओ के प्रति सारा समाज नत-मस्तक है। वास्तव में इनका जीवन अध.पतन के गहरे गड्ढे से निकलकर उच्च आदर्शों को स्थापित करनेवाले महान् समाजसुधारकों की श्रेणी में पहुच गया। बाल्यावस्था और युवावस्था में अपने जीवन से भटके मुन्शीराम को कौन जानता था कि किसी दिन यह आर्यजगत् का पथ-प्रदर्शक बनेगा। जिस समय इन्होंने वकील लाला मुन्शीराम के नाम से आर्यसमाज लाहौर की सदस्यता ग्रहण की उस समय लाला साईंदास ने कहा था कि 'आज एक नई शक्ति का प्रवेश आर्यसमाज मे हुआ है, यह तो भविष्य ही बतायेगा कि यह आर्यसमाज को तारेगा या डुबोयेगा।' किन्तु आर्यसमाज की सदस्यता के बाद अपने विचार प्रकट करते हुये मुन्शीराम ने कहा था 'हम सबके लिये कर्त्तव्य और मन्तव्य एक होने चाहिएं, जो वैदिकधर्म के सिद्धान्त के अनुकूल अपना जीवन नहीं ढाल लेगा उसे आर्यसमाजी बनने का साहस नहीं करना चाहिए, भाड़े के टट्टुओं से धर्म प्रचार नहीं हो सकता।' किन्तु १९३६ श्रावण १४ का दिन लाला मुन्शीराम के जीवन की ज्योति बनकर आया। इसी दिन अन्धविश्वासो से ग्रस्त सुप्त धार्मिक आत्मा को जागने का अवसर मिला, अवसर था महर्षि देवदयानन्द का बरेली मे आना, पिता द्वारा बार-बार प्रेरित करने पर मुन्शीराम भी अनमने मन से देवदयानन्द का प्रवचन सुनने पहुंच गये, मन मे सोचते हुए जारहे थे कि संस्कृत पढ़ा लिखा साधु क्या उपदेश देगा। जिस समय मुन्शीराम प्रवचन स्थल बेगमबाग की कोठी पर पहुचते हैं तो तेजस्वी साधु को देखते ही शरीर में स्पन्दन के साथ ही स्फूर्ति आई और श्रद्धावश नत-मस्तक होगये, फिर श्रोताओं के मध्य में उन्होने स्कॉट पादरी और यूरोपियन लोगो को बैठे देखा तो साधु के चमत्कार के आगे श्रद्धावान होगये और लगातार १५ दिनों तक महर्षि दयानन्द के प्रवचन सुनते रहे। शका समाधान करते रहे, महर्षि के अकाट्य तर्कों के आगे मुन्शीराम को झुकना पड़ा और कायाकल्प होगया उन्होने धीरे-धीरे सभी दुर्गुणों को त्याग दिया। यही मुन्शीराम १२ अप्रैल १९१७ को स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में उदीयमान हुये। इन्होंने संन्यास किसी गुरु से नहीं लिया अपितु श्रद्धा से प्रेरित होकर यह कदम बढ़ाया वे कहते थे श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्य देवी है। श्रद्धाभाव से ही प्रेरित मैं संन्यास की दीक्षा लेरहा हूं यज्ञकुण्ड की अग्नि को साक्षी मानकर अगला सम्पूर्ण जीवन श्रद्धावान् बनकर व्यतीत कर सकूं इसलिये श्रद्धानन्द नाम रखता हूं। आगे चलकर यही श्रद्धानन्द आर्यजाति के लिये पथप्रदर्शक बना। सबसे पहले जालन्धर मे कन्या महाविद्यालय की स्थापना की इसके बाद गुरुकुल स्थापना का उद्देश्य पूरा करने के लिए घर से यह निश्चय करके निकले कि जब तक ३० हजार रुपये एकत्रित न करलूं घर नहीं आऊंगा, और ८ अप्रैल १९०० को अपना संकल्प पूरा करके घर लौटे, वाह श्रद्धानन्द तेरा त्याग भी अनुपम था, अपना सर्वस्व ही आर्यसमाज को समर्पित कर दिया अपनी "सद्धर्म प्रचारक प्रेस" तथा जालन्धर स्थित कोठी भी गुरुकुल को समर्पित करदी और अपने दोनों पुत्रों इन्द्र और हरिश्चन्द्र को भी आर्यसमाज को समर्पित कर गुरुकुल में सबसे पहले प्रवेश करा दिया, जिससे कोई यह न कहे कि हाथी, शेर, भालुओं के जंगल में स्थित गुरुकुल कांगड़ी में दूसरों के पुत्रो को प्रवेश कर रहे हैं। उन्होंने जीवन में प्रत्येक सामाजिक कार्य, देशहित कार्य को प्राणों की परवाह न करके समर्पित होकर किया है, भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन को दबाने के लिये अंग्रेजों ने रोलट एक्ट पास किया था, उसके विरुद्ध दिल्ली में विशाल प्रदर्शन जनआन्दोलन का रूप ले गया, जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द कर रहे थे, जिस समय यह जुलूस चांदनी चौक स्थित घण्टाघर पहुंचा तो, "जलियां वाले बाग" की तरह मशीनगनो और संगीनो से जुलूस को रोक दिया और आगे बढ़ते ही गोली मारने की धमकी दी। तभी भीड़ को चीरते हुए विशालकाय संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी छाती खोलकर गरजते हुये कहा, असहाय भीड़ पर गोली चलाने के बजाय संन्यासी का सीना खुला है, हिम्मत हो तो चला दो, यह दृश्य देख गोरे स्तब्ध होकर खड़े रहे और जुलूस आगे बढ़ता गया चांदनी चौक पार कर मुस्लिम भाई जामा मस्जिद लेगये वहां स्वामीजी ने वेदमन्त्र के साथ अपना भाषण आरम्भ किया इसके बाद फतेहपुरी मस्जिद मे भी स्वामीजी का भाषण हुआ, "हिन्दू मुस्लिम एकता" का यह अनुपम अवसर था जिस समय महात्मा गांधी को नजरबन्द किया गया, उसके बाद पूरे असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द ने किया। उनके नेतृत्व में कहीं पर कोई अवाछनीय घटना नहीं हुई। महात्मा गांधी स्वामी श्रद्धानन्द को दिल्ली का बादशाह कहा करते थे, स्वामी श्रद्धानन्द ने १९१९ में सत्याग्रह समिति से त्यागपत्र देदिया, और महात्मा गांधी की कार्यशैली का विरोध प्रकट करते हुये उन्होंने लिखा कि रोलट एक्ट मानव की स्वतन्त्रता और न्याय के सिद्धान्तों पर कुठाराघात है अत: मैं इसका विरोध जारी रखूगा तथा देश में एकता स्थापित करने, पचायतो द्वारा झगड़े मिटाने, स्वदेशी तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार करने सरकारी विश्वविद्यालयों में स्वतन्त्र राष्ट्रीय शिक्षा को विकसित करने में काम करूगा। इसके साथ ही स्वामीजी कांग्रेस के कार्यक्रमों मे भी सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। अमृतसर में जलियांवाला काण्ड की घटना सभी के दिलोदिमाग में ताजा थी, जहा सैकडो मा-बहिनो और युवाओं को जनरल डायर ने गोलियों से भून दिया था, अनेक माताओं की गोद सूनी होगई थी अनेक बच्चे अनाथ और असहाय होगये थे, ऐसे समय में अमृतसर मे कांग्रेस अधिवेशन की बात कोई सोच भी नहीं सकता था, किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द ने ८ जून १९१९ को इलाहाबाद में हुई काग्रेस कार्यकारिणी की बैठक मे अमृतसर में अधिवेशन करने का प्रस्ताव पास कराया और स्वय उसके स्वगताध्यक्ष बनकर सफल बनाया, उन दिनो प्राय कांग्रेस अधिवेशनो मे अग्रेजी में भाषण होते थे, स्वामीजी ने अपना हिन्दी में दिया और कहा लोगो। राष्ट्र को यदि स्वतन्त्र देखना चाहते हो तो पहले स्वय सदाचार की मूर्ति बनकर अपनी सन्तान पर भी सदाचार की बुनियाद रखो, ऐसे नवयुवक ही राष्ट्र की आवश्यकताओ को पूरा करेगे तभी विदेशी विचारो विदेशी सभ्यता सस्कृति गुलामी से छुटकारा पा सकोगे।

अछूतोद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द

अमृतसर में कांग्रेस मच से सबसे पहले स्वामी श्रद्धानन्द ने हरिजनों के सम्बन्ध मे आवाज उठाई थी और कहा कि जिन सात करोड अछूतो को ईसाई ब्रिटिश सरकार अपने जहाज का लगर बनाना चाहती है वे हमारे भाई-बहिन हैं, वे अछूत या अस्पृश्य नहीं हैं। उनके पुत्र-पुत्रिया हमारी पाठशालाओ मे पढ़ेंगी। उनके नरनारियो का हमारी सभाओ मे स्वागत होगा। स्वतन्त्रता युद्ध मे वे हमारे कन्धे से कन्धा लगाकर हमारे राष्ट्रीय कार्य में पूरा सहयोग देंगे। महात्मा गाधी स्वामीजी के भाषण से प्रभावित होकर "यग इण्डिया" नामक समाचारपत्र में लिखते हैं, स्वागत समिति के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी का भाषण, उच्चता, पवित्रता, गम्भीरता और सच्चाई का नमूना था, हरिजनो के प्रति स्वामीजी का प्यार अनुकरणीय था। वक्ता के व्यक्तित्व की छाया उनमे आदि से अन्त तक दिखाई देरही थी, स्वामीजी से ही प्रेरणा लेकर महात्मा गाधी ने अछूतोद्धार के कार्य को अपनाया। कांग्रेसी दलित उद्धार के लिये आखें बन्द कर रहे थे। इसलिये स्वामीजी कांग्रेस से अलग होगये, स्वामीजी की इस बात को लेकर भी आपत्ति थी कि हिन्दू महासभा के अधिवेशनों में दलित भाइयों को भाषण नहीं करने दिया जाता। इस तरह स्वामीजी पूरा जीवन सामाजिक कार्यो के लिये सघर्षरत रहे। गुरुकुल के छात्रों, अध्यापकों ने स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी, जेलें काटी, वीर भगतसिंह के परिवार को आर्यसमाजी दयानन्द का अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द ने बनाया, धर्मान्तिरण को रोकने के लिए शुद्धिआन्दोलन चलाया, स्वदेशी, गोसेवा, नारी जागरण, दलितउद्धार, हिन्दीभाषा, मदिरा बहिष्कार, गुरुकुल शिक्षाप्रणाली, राष्ट्ररक्षा स्वामीजी के रुचि के कार्य थे। महात्मा गाधी को गाधी की उपाधि भी स्वामीजी ने ही दी थी। उनके जीवन से सभी आर्यजन प्रेरणा लें और उनके विचारो को, उपदेशों को अपने जीवन में धारण करें यही उस महान् बलिदानी के प्रति हमारी श्रद्धाजलि होगी, हम सच्चे अर्थो मे आर्य बनकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के स्वप्न को साकार बनाने का प्रयत्न करे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का आर्यो को सन्देश

आर्यो मेरी बात पर ध्यान देना। समाधि मेरी कहीं तुम न बनाना॥
न चद्दर न फूलमाला तुम चढाना। न पुष्कर गया मे अस्थिया लेके जाना॥
न गंगा में तुम मेरी अस्थियां बहाना। न यह व्यर्थ के झगड़े तुम पाल लेना॥
मेरी अस्थियां किसी खेत में डाल देना। कि जिससे मेरी अस्थिया खाद बनकर॥
काम आयें कभी कृषक दीन जन के। आर्यो मेरे नाम से कोई पाखण्ड न चलाना॥
प्रभु वेद शिक्षा पर ही तुम ध्यान देना। विश्व को तुम आर्य फिर बनाके बताना॥
यही एक "केवल" भावना है मेरी। इसे तुम साकार करके बताना॥
स्वयं आर्य बनो, परिवार को बनाना। व्यसन दाग काले कभी मत लगाना॥
आर्यो मेरी बात पर ध्यान देना। समाधि मेरी कहीं तुम न बनाना॥

-स्वामी केवलानन्द सरस्वती, श्रद्धानन्द नगरी, हरद्वार

स्वामी श्रद्धानन्द और दलितों का उद्धार

स्वामी श्रद्धानन्द एक महान् विभूति, जिन्होंने वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा मे ही जीवन का आनन्द उठाया। धर्म के इस प्रहरी ने अपने सुकृत्यों से सिद्ध कर दिया कि आर्यसमाज साम्प्रदायिकता की संकीर्ण सोच से कोसों दूर है। इस पर साम्प्रदायिकता का लेबल लगाने वाले अज्ञानी और कायर हैं। यहाँ दलितोद्धार सम्बन्धी प्रसग द्वारा हम अपनी बात को सिद्ध करेंगे।

दलित वर्ग से हमारा अभिप्राय ऐसे वर्ग से है, जिसका समाज के एक ऐसे वर्ग द्वारा शोषण हुआ हो जो अपने आपको जन्म के आधार पर श्रेष्ठ मानता है। जन्म के आधार पर समाज को वर्ग-भेद की यह बुराई विभिन्न सम्प्रदायो ने दी है, न कि वैदिक धर्म ने जहाँ वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर है। कर्म-पथ पर चलते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने इस सत्य का प्रतिपादन निम्न प्रकार से किया-

१. मुसलमानों के साथ श्रद्धानन्द :-

देव दयानन्द के इस वीर सिपाही ने सिद्ध किया कि आर्यसमाज अच्छाई के मार्ग का अवरोधक नहीं है। देशभक्ति के प्रसङ्ग में उन्होने मुस्लिम भाइयों के साथ मिलकर कार्य किया। पहली बार स्वामी श्रद्धानन्द को एक गैर मुसलमान के रूप मे, मुसलमानों की सार्वजनिक सभा मे बोलने का अवसर मिला। इस प्रकार अच्छाई के रास्ते पर एक आर्य अपने आपको अल्पसंख्यक मानने वाले वर्ग के साथ था।

२. अछूतोद्धार : कांग्रेस और श्रद्धानन्द :-

धर्म के स्वरूप से अनभिज्ञ वर्तमान राजनैतिक नेता 'अछूतोद्धार' विषय में जनता के मध्य में अज्ञान फैलाते हैं, जो भारी अव्यवस्था का कारण बनता है। जिन्होने मनुस्मृति को छूआ व देखा तक नहीं, जो सस्कृत के अक्षरज्ञान से भी सर्वथा वञ्चित हैं, वे भी बड़े हास्यास्पद ढङ्ग से मनु महाराज को कोसने लगते हैं। इधर अपने को हिन्दू कहलाने वाले भी ओछी राजनीति करते हैं। वैदिक धर्म का स्पष्ट मन्तव्य है कि श्रेष्ठ कर्म करो और अपने को शूद्र या अछूत कहलाना या सोचना बन्द कर दो। अगर यही बात राजनेता कहें, तो भ्रष्टाचारियों को वोट कहाँ से मिले ? किस भाँति आर्यसमाज दलित वर्ग, शोषित वर्ग, अछूत वर्ग का हितैषी है यह भी हुतात्मा श्रद्धानन्द जी ने सिद्ध कर दिया।

सन् १९२० मे काग्रेस नागपुर अधिवेशन मे अछूतोद्धार का प्रस्ताव पास किया गया। स्वामी जी ने इस कार्यक्रम पर पाच लाख रु० व्यय करने का सुझाव दिया। लेकिन मजे की बात यह है कि काग्रेस ने पहले यह राशि दो लाख तथा बाद में तो क्रूर मजाक करते हुए घटाकर मात्र पांच सौ रुपये कर दी। स्वामी जी को यह अन्याय बर्दाश्त नहीं हुआ और उन्होंने स्वतन्त्र रूप से अछूतोद्धार का कार्य करने का निश्चय करके काग्रेस की उपसमिति से त्याग पत्र दे दिया।

३. कार्यक्रम का क्रियान्वित रूप :-

वैदिक परम्परा को संरक्षित करनेवाले, महर्षि दयानन्द के परवर्ती स्वामी श्रद्धानन्द ने वैदिक मान्यताओं की स्थापना के लिये जन्मगत वर्गभेद मिटाने का अद्वितीय प्रयास किया। उनके कार्यकाल में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने 'पंजाब दयानन्द दलितोद्धार मण्डल' स्थापित किया। दलित जातियों के लिये कई पाठशालाएँ खोली गई। विद्यार्थियो को ऊँची शिक्षा के लिये छात्रवृत्तियाँ दी गई। दलितों के साथ होने वाले हर विरोध का सामना किया गया। यह कार्य अपनी पराकाष्ठा पर तब पहुँचा जब जून १९२६ में असगरी बेगम नाम की मुस्लिम देवी अपने दो बच्चों और एक भतीजे के साथ देहली की आर्यसमाज में आकर शुद्ध हो गई।

४. मुसलमानों के साथ उनका विरोध और अमर बलिदान :-

किसी भी आर्य ने आज तक किसी को भी साम्प्रदायिकता रूपी विष का पान नहीं कराया, क्योकि इनके पास यह है ही नहीं। लेकिन जब कोई अन्य आर्य जाति को इस विष का पान कराये (जो उनकी संस्कृति है) तो इसका प्रतिकार हर सक्षम व्यक्ति करेगा। १९२३ में कोकानाड़ काँग्रेस के अधिवेशन में मौलाना मुहम्मद अली ने अपने प्रधान पद के भाषण मे यह प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया कि अछूतों को हिन्दुओं और मुसलमानों में बराबर-बराबर बाट दिया जाये। कांग्रेस के नेताओं ने ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय पर चुप्पी साध ली। किन्तु आर्यसमाज देश, जाति, राष्ट्रहित मे चुप न बैठा। भला आर्यावर्त में आर्यो के ही अङ्ग को मुख्यधारा से कैसे अलग होने दिया जाए ?

४ दिसम्बर १९२४ को हरिजनों को पतित होने से बचाने के लिये और विधर्मी हुए हरिजनों को अपने धर्म में लौटाने के लिये भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा बनाई गई। स्वामी श्रद्धानन्द जी इस सभा के प्रधान तथा महात्मा हंसराज जी इसके उपप्रधान चुने गए।

इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कलियुग के एकमात्र ऋषि, देव दयानन्द के सच्चे अनुयायी के रूप मे दलितोद्धार के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य किया। जनता में जागरूकता देखकर साम्प्रदायिक ताकतों को गहरा झटका लगा। २३ दिसम्बर १९२६ को एक अधर्मी मुसलमान अब्दुल रसीद ने उनकी हत्या कर दी। लेकिन वह पापी भूल गया कि महापुरुष कभी मरते नहीं, वे अपने कर्त्तव्य से अमर रहते हैं।

५. उपसंहार (आर्यसमाज-वर्ग भेद मिटाने का एकमात्र उपाय) :-

आर्यसमाज ही वर्ग-भेद द्वारा फैली अव्यवस्था को समाप्त करने का एकमात्र उपाय है। दलितों के लिये इससे अच्छी और क्या बात होगी कि वैदिक धर्म कर्म के आधार पर जाति मानता है, न की जन्म के आधार पर। अत दलित भाइयों व अल्पसंख्यकों को अव्यवस्था फलाने वालों से सर्वथा बचना चाहिए और श्रेष्ठ कर्म करके आर्य बनना चाहिये।

-अभयसिंह कुण्डू, एम.ए.द्वय (हिन्दी, अंग्रेजी)
प्रिंसिपल, आदर्श गुरुकुल वरि० मा० विद्यालय, सिंहपुरा, सुन्दरपुर (रोहतक)

वैदिक हरयाणा के साथ आदर्श विद्याचार्य स्वामी श्रद्धानन्द का पवित्र सम्बन्ध

सर्वहितैषी सर्वगुणों से भरपूर, अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का महान् पवित्र जन्म पंचनद के जालन्धर मण्डल के तलवन ग्राम में १८५६ ई० में हुआ था। इनके पिता श्री नानकचन्द जी पुलिस अधिकारी थे परन्तु अंग्रेजी विद्यालयों में पढ़ते-पढ़ते अंग्रेजी अनाचार के कुसंग से शराब, हुक्का, गन्दे चलचित्र देखने और नास्तिकता के दुर्भाग्य से दुर्व्यसनों के वशीभूत थे। १८७९ ई० में महर्षि दयानन्द बरेली में आए उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी के पिता नानकचन्द पुलिस कोतवाल का प्रबन्ध था। अपने पिताजी की प्रेरणा से २३ वर्षीय नवयुवक मुंशीराम जी (बाल्यकाल का नाम) ने महर्षि जी के पहले ही उपदेश श्रवण से उन पर गहरा प्रभाव पड़ा और स्वामीजी की युक्तियुक्त बातों से उनकी उज्ज्वल दिव्य मूर्त्ति देखकर युवा मुंशीराम ने ईश्वर का सच्चा आस्तिक भक्त और पूर्ण सदाचारी बनने का निश्चय कर लिया।

वे राज कानून पढ़ने के लिए लाहौर आगए तब उन्हें महर्षि जी के सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ पढ़ने का अवसर मिला और आर्यसमाज बच्छो वाली लाहौर के सदस्य बन गए। तब उन्होने मास आदि सारे दुर्व्यसन छोड़ दिए। वकालत पास करके वे जालन्धर आए और वकालत आरम्भ करदी। यहां उन्होने १८८९ ई० मे 'सद्धर्म प्रचारक' पत्र आर्यभाषा हिन्दी में निकाला। १८८१ ई० में विवाह के पश्चात् उनकी चार सन्तानें हुईं। उनकी पुत्री वेदकुमारी मिशन स्कूल में पढती थी, वह तब १० वर्ष की थी। मुन्शीराम जी को अपनी सुपुत्री के मुख से ईसामसीह के गाने सुनकर बहुत क्षोभ उत्पन्न हुआ। तब उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी के देहान्त पर दबाव पड़ने पर भी उन्होंने पुनर्विवाह नही किया और वे १८९२ ई० से ४ वर्ष तक लगातार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान चुने गए। नवम्बर १८९८ ई० में पंजाब सभा से एक गुरुकुल खोलने का प्रस्ताव स्वीकार कराया क्योंकि इनके गुरुवर ने आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का ही प्रचार किया था जिसका महात्मा मुंशीराम ने मन पर गहरा प्रभाव था इसलिए इन्होंने गुरुकुल के लिए ३० हजार रुपया इकट्ठा करने की दृढ़ प्रतिज्ञा की। वे इस कार्य की पूर्ति मे मनसा-वाचा-कर्मणा आर्यसमाज तथा गुरुकुल के लिए समर्पित भाव से तल्लीनता रहे। अत· अप्रैल १९०० तक ४० हजार रुपया इकट्ठा कर लिया। उनके इस अनुपम पुरुषार्थ को देख आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सहर्ष उनका अभिनन्दन करके उनका नाम महात्मा मुशीराम प्रसिद्ध कर दिया। २४ मार्च १९०२ ई० में बिजनौर के श्रद्धालु भक्त मुंशी अमनसिह जी द्वारा दान में दिए गए कांगडी ग्राम मे इन्होने एक आदर्श गुरुकुल की स्थापना करदी। आपने गुरुकुल के लिए सर्वप्रथम अपने प्रिय सुपुत्रों हरिश्चन्द्र तथा इन्द्र दोनों को गुरुकुल में प्रविष्ट किया और अपने पूज्य गुरु महर्षि दयानन्द के अनुसरण मे सर्वस्व दान के लिए पहले अपना पुस्तकालय और 'सद्धर्म प्रचारक' का प्रेस यहां तक कि जालन्धर की अपनी बहुमूल्य कोठी भी गुरुकुल के दसवे वार्षिक उत्सव पर दान करदी। अब तो आपने सर्वमेध यज्ञ की ही पूर्ण आहुति देदी। आपने १५ वर्ष तक गुरुकुल का आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता रहकर अप्रैल १९१७ ई० में कनखल मे स्वत· सन्यास आश्रम मे प्रवेश करके स्वामी श्रद्धानन्द नाम धारण किया। आप अब पुत्रैषणा, लोकैषणा, वित्तैषणा तीनों से निर्द्वन्द्व होकर पूर्णतया लोकसेवा मे जुट गए। इस गुरुकुल मे सस्कृत और आर्यभाषा भारतीय हिन्दी अनिवार्य थी अग्रेजी की एक भी पुस्तक नहीं थी। परीक्षाएं भी अपने गुरुकुल की ही थी अत: अंग्रेजी सरकार इन्हे तथा गुरुकुल को बागी समझने लगी। दूसरी रियासतें जोधपुर तथा पटियाला में भी आर्यसमाजियो को कष्ट दिए जाने लगे जिनमें स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्यसमाज के पक्ष में बहुत सहायता की।

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा हरयाणा में गुरुकुलों की स्थापना-१९२४ ई० मे गगा नदी में बड़ी भयकर जल बाढ आई थी। कांगड़ी ग्राम के पास गुरुकुल के कई कमरे भी बह गए तबसे कारणवश स्वामी श्रद्धानन्द जी गंगा नदी के तट के पश्चिम मे इस गुरुकुल को लेआए जो १२०० बीघे भूमि मे है। यह गंगनहर काटली साहेब अंग्रेज ने खुदवाई थी।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र-हरयाण में वर्तमान कुरुक्षेत्र थानेश्वर के आर्य धर्मात्मा धनी पुरुषों ने गुरुकुल स्थापना के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी को बुला लिया। १९१५ ई० मे आपने ही इस गुरुकुल की आधारशिला का शिलान्यास किया तब तक आपका नाम महात्मा मुंशीराम ही था। तब से आज तक यह गुरुकुल चहुंमुखी अच्छी उन्नति करता आरहा है। अब इसमें १२ वर्ष के पाठ्यक्रम में अनुमान साढ़े छ: सौ विद्या ग्रहण कर रहे हैं। इनके भोजन की व्यवस्था है। गुरुकुल की पचासों गऊएं हैं जो १५ सेर से १ मन तक प्रति गऊ दूध देती हैं। छात्रों की घुड़सवारी के लिए ऊंचे स्वस्थ १५-२० घोड़े है यहां के छात्र परीक्षाओं में अच्छे परिणामों सहित प्रशंसनीय पुरस्कार प्राप्त करते रहते हैं। अब तो ३-४ वर्षों से इस गुरुकुल के प्रबन्ध में 'स्वामी श्रद्धानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय' भी सुचारु रूप से चलाया जारहा है जहां मैं लेखक भी स्वास्थ्य लाभ के लिए ४ से १५ जुलाई २००२ तक रहकर आया हूं। इसमें वैद्य तथा सेवक सभी मधुरभाषी हैं।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ हरयाणा-यह गुरुकुल बदरपुर दिल्ली सीमा से ढाई मील दक्षिण में मथुरा मार्ग पर पश्चिम दिशा में पहाड़ पर ५-६ एकड़ भूमि में पत्थरों की प्राचीर के अनुमान २५-३० कमरों में चल रहा है। गुरुकुल के दक्षिण में एक इमली के विशाल वृक्ष के नीचे ही स्वामी श्रद्धानन्द ने एक भारी पत्थर चट्टान पर बैठकर इसी गुरुकुल के स्थापना स्थान की योजना बनाई थी और यहीं पर में अपने हाथों स्थापना की थी। जिसे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा चला रही है। पास में ही भूमि से निकलता मीठे जल का झरना है अब जिसे गोल जलकूप का रूप देदिया गया है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का प्रतिनिधि तथा अन्तरंग होने के नाते १९६५ ई० से ही इस गुरुकुल के उत्सवों में जा चुका हू। इस गुरुकुल की सम्पत्ति रूप बहुमूल्य ११०० बीघे भूमि है।

गुरुकुल मटिण्डू खरखोदा-यह गुरुकुल रोहतक मण्डल हरयाणा में है जिसे आर्यसमाज के कर्मठ वीर नेता चौ० पीरूसिह जी ने अपने घर की २५ बीघे भूमि मे नहर संख्या १४ पर स्थापित किया था और श्रद्धा सम्मान स्वामी श्रद्धानन्द को बुलाकर उन्हीं के हाथों इसका शिलान्यास कराया था।

एक प्रेरक घटना-एक बार स्वामी श्रद्धानन्द जी १९२२ ई० मे इस गुरुकुल मटिण्डू को देखने आरहे थे जब वे सोनीपत से आगे एक तागे में बैठकर आरहे थे तब सोनीपत के उच्च विद्यालय में पढनेवाले १५-१७ वर्ष के छात्र भी स्वामीजी के तागे के साथ-साथ दौड़ते रहे। स्वामीजी ने कहा कि भाइयो! देखो हरयाणा के ये वीर युवक अपने भोजन के साथ गाढ़ा छाछ नित्य पीते हैं जो बलवर्धक तथा पाचक होता है इसी से ये चुस्त हैं। उनमे से एक किशोर उछलकर स्वामीजी के पास तांगे मे बैठ गया। दूसरे छात्र बोले कि स्वामीजी इसे नीचे उतार दो। तब स्वामीजी बोले कि भाई जब यह अपने उत्साह उमंग से ऊपर चढ ही गया है तो मैं भी इसे नहीं उतारता। ऊपर चढना ही चाहिए। तुम भी उन्नति करो नीचे मत जाओ।

गुरुकुल झज्जर-झज्जर नगर के प० विशम्भरदास जी ने सत्यार्थप्रकाश को पढकर गुरुकुल खोलने की दृढ़ श्रद्धा उत्पन्न हुई। उन्होंने ने झज्जर के दक्षिण में अपने ही खेत की कई एकड़ भूमि गुरुकुल के लिए दान मे देदी। पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द को बुलाकर १९१५ ई० में उन्हीं के हाथों इस गुरुकुल का भी शिलान्यास करा दिया। अब इसमे दो गऊशालाओ में अनुमान २५० गऊए हैं। अनुमान ४०० बीघे कृषि भूमि है अनुमान ४५० छात्र पढ़ रहे हैं। इस गुरुकुल के छात्र स्वदेश विदेश में चारों ओर वेदप्रचार कर रहे हैं। यह गुरुकुल भी भारत मे तथा सारे भूगोल मे प्रसिद्ध है क्योंकि इसके सचालक स्वामी ओमानन्द सरस्वती (९३ वर्षीय) पहले से ही बहुत पुरुषार्थी, वीरवक्ता, कुशल वैद्य भी रहे हैं। यहा का सग्रहालय अनुपम है। इस समय गुरुकुल का सचालन आपके उत्तराधिकारी आचार्य विजयपाल जी योगार्थी कर रहे हैं। इसका मैं लेखक भी १९६० ई० से सहयोग करता रहता हू। यह स्वामी श्रद्धानन्द का ही यश था इस हरयाण मे गुरुकुलो की स्थापना करते ही चले गए जैसे गुरुकुल भैसवाल, आर्यनगर हिसार, गुरुकुल गदपुरी फरीदाबाद, मंझावली, डिकाडला, कन्या गुरुकुल नरेला, खानपुर, धीरणवास, पचगामा, लोवाकला, दाधिया इस प्रकार ये महर्षि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द के ही सत्पुरुषार्थ की समुन्नति हुई है।

आप एक सहृदयी आदर्श आचार्य, मातृभाषा, भारतीय हिन्दी के प्रचारक उत्कृष्ट आर्य राष्ट्रीय राजनेता शुद्धिधर्म के सचालक, निडर सत्यवादी वक्ता थे। आपने ही कराची की असगरी बेगम को शुद्ध करके शान्तिदेवी आर्या नाम रखा था। एक निर्दयी इन्सान मतान्ध अब्दुल रशीद नया बाजार दिल्ली ने आपके निवास स्थान पर आपको तीन गोली मारकर निर्मम हत्या २३ दिसम्बर १९२६ ई० को करदी। सारा आर्यजगत् बिलखता रह गया। आपकी शवयात्रा मे उपद्रवकारी मुसलमानो को हरयाणा के बलवीरसिह व रणधीर वीर पहलवानो ने मार-मार भग दिया। दिल्ली मे ही वैदिकविधि से दाह सस्कार करा दिया गया। आर्यजगत् की ओर से आपको शतश नमन है।

लेखक : निहालसिंह आर्य परमार्थी, आर्यधाम, जसौरखेडी (झज्जर) हरयाणा

दयानन्दमठ का उनतालीसवां सत्संग सम्पन्न

दयानन्दमठ रोहतक। वैदिक सत्सग समिति द्वारा सचालित 'वैदिक सत्सग समारोह' की उनतालीसवी कडी रविवार प्रथम दिसम्बर २००२ को धूमधाम से सम्पन्न होगया। इस सत्सग के सयोजक एव व्यवस्थापक सन्तराम आर्य ने बताया कि कार्यक्रम प्रात. ९ बजे ब्रह्मयज्ञ एव देवयज्ञ से प्रारम्भ हुआ तथा १० बजे सम्पन्न हुआ। यज्ञ प्रसाद बाटा गया। इसके बाद भक्तिगीत प्रारम्भ हुआ। हनुमान कालोनी से छात्र विवेककुमार तथा छात्रा दीपिका आर्या शिवनगर गोहानारोड रोहतक ने अपने-अपने गीत सुनाये। मास्टर देवीसिह आर्य व महेन्द्रसिह तथा महाशय जगवीरसिह साघी ने जब इस प्रकार गाया कि 'बुरो की भलाई करना, सबसे अच्छा काम है। छुडादो बुराई उसकी, जिससे वो बदनाम है।' इसी प्रकार बहिन दयावती आर्या प्राध्यापिका ने महाभारत का उदाहरण दिया और गीत गाया कि-'रे जगा दो उनको, जो सो गये आर्यवीर, ऋषि दयानन्द पैदा करो, कोई चाणक्य सा वीर।' बेटियो की वेशभूषा पर टिप्पणी करते हुए बहिन दयावती जी ने दूसरा गीत कुछ इस प्रकार गाया-'तेरी मान मर्यादा पर, उंगली किसी की ना उठे, संभलकर चल तेरे उजले-उजले दामन पर धब्बा किसी चीज का ना लगे।' यज्ञ की महिमा पर स्वामी निगमानन्द (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) ने अपने विचार रखे। चौ० हरध्यानसिंह पूर्व डिप्टी डायरेक्टर पब्लिक रिलेशन ने शराब कितनी खराब। इस प्रकार सगीत का कार्यक्रम चला। संयोजक ने बताया कि अन्त में आजके मुख्यवक्ता युवा सन्यासी स्वामी सूर्यवेश 'योगी' ने अपना प्रवचन प्रारम्भ किया। उनका विषय था 'धारणा-ध्यान व समाधि'। स्वामीजी ने कहा कि स्थिरसुखम् आसनम्। उन्होने ऋषि याज्ञवल्क्य व पातञ्जलि ने उदाहरण दिये। लोग बुढ़ापे में रामनाम जपने की बात करते हैं जब ऊर्जा ही नहीं रहती। अन्त मे मुक्तिकाल के बारे मे चर्चा करते हुए बताया कि छत्तीस हजार बार सृष्टि का बनना और बिगडना, इतने समय तक जीवात्मा मुक्ति मे रहता है। समारोह का समापन करते हुए सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने शान्तिपाठ करवाया तथा आगामी चालीसवे सत्संग के लिए (जोकि ५ जनवरी २००३ को होगा) आमन्त्रित किया। सभी ने ऋषिलगर मे बैठकर भोजन किया जिसकी देखरेख ब्र० कृष्णदेव जी नैष्ठिक व आर्यसमाज साघी के पदाधिकारियों ने की।

-**निवेदक : रामवीर आर्य**, कार्यालयमन्त्री, सार्व आ यु प ह , दयानन्दमठ रोहतक

शहीदी दिवस पर........ ....एक झलक

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

लेखक : डॉ० अशोक आर्य, आर्य कुटीर, मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरयाणा)

महान् पुरुष अपने समय का कालचक्र कहे जा सकते हैं। अपने देश-प्रेम, समाज-सेवा व सर्वहितकारी कार्यों के द्वारा वह समय-धूलि पर अपने जो पदचिह्न छोड़ जाते हैं, उन्हे शताब्दियों पर्यन्त लोग देखकर उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करते रहते हैं। फाल्गुन बदी १५ सम्वत् १९१३ विक्रमी सन् १८५६ ई० मे पजाब के तलवन जिला जालन्धर के लाला नानकचन्द के यहा बालक 'बृहस्पति', जिसे मुन्शीराम और सन्यास लेने के बाद स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से जाना जाने लगा, भी ऐसे महापुरुषों की श्रेणी में आते हैं।

कुशाग्रबुद्धि मुन्शीराम के पिता सरकारी कर्मचारी होने के कारण समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर बदलते रहे। इस कारण इनकी शिक्षा ठीक से न चल सकी किन्तु जो अध्यापक उनके भाइयो को पढाता था, उसी की पढ़ाई सम्बन्धी चर्चा को सुनते-सुनते पारंगत होगए। ऐसे कुशाग्र बुद्धि मुन्शीराम ने वकालत पास कर अनेक अविस्मरीय केसों में विजय प्राप्त की।

मुन्शीराम आरम्भ से ही धर्मप्रेमी थे किन्तु कुछ ढोंगो व गन्दे आचरणो को देखकर धर्म से तब तक विमुख रहे, जब तक 'अनोखा जादूगर' कहे जानेवाले स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यान नहीं सुने। स्वामी दयानन्द के तो वह पूरी तरह समर्पित होगए तथा उनकी पूर्ण दिनचर्या में उनका साथ देने लगे। महर्षि दयानन्द से इतने सम्बन्धो को देख अग्रेज हाकिम तिलमिलाए किन्तु मुन्शीराम ने चिन्ता नहीं की। बरेली मे जो महर्षि दयानन्द के व्याख्यान मे 'ओ३म्' चर्चा सुनी, इससे इनके विचारो मे क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। धीरे-धीरे यह ब्रह्म-समाज, सर्वहितकारी सभा इत्यादि के भी सम्पर्क में आए किन्तु जो शान्ति इन्हें मा आर्यसमाज की शरण में मिली, वह अन्यत्र कहीं भी न मिल सकी।

अब इन्होने सत्यार्थप्रकाश सहित ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्ययन कर दृढ सिद्धान्तों को अपनाकर अपने आपको आर्यसमाज के कठोर सांचे मे ढाल लिया। स्वय आर्यसमाज के सदस्य बने तथा हृदय मे धैर्य को स्थापित किया।

आर्य सिद्धान्तों पर अटल-मुन्शीराम जी वैदिक सिद्धान्तो पर इतने पक्के होगए कि पिताजी के विशेष आग्रह पर भी निर्जला एकादशी का व्रत नहीं रखा किन्तु पिताजी की सेवा व आर्थिक सहायता मे सदैव तत्पर रहे। बाद में पिताजी भी वैदिक सिद्धातो को समझने लगे। उनकी मृत्यु पर उनका दाह-संस्कार भी वैदिकरीति से किया। मुन्शीराम जी की बढ़ती लोकप्रियता से पौराणिक पण्डितों में खलबली सी मच गई। उन्होने शास्त्रार्थ के लिए ललकारा, गुण्डा-गर्दी का प्रयास किया किन्तु नित्य कठोर व्यायाम-प्राणायाम करनेवाले मुन्शीराम के सामने आने की उनको कभी हिम्मत न हुई। जाति-बहिष्कार का भय भी दिखाया किन्तु सत्य प्रकट होने पर कोई सामने न आया। लाला देवराज जी का उन्हें सदैव सहयोग मिला। उनका कथन था कि 'कोई भी ढोगी व्यक्ति कभी भी सुधारोन्मुख व्यक्ति का बाल भी बाका नहीं कर सकता।' इनके प्रभाव से ईसाइयों का प्रभाव भी फीका पडने लगा।

आटा-रद्दी-फण्ड-सर्वहितकारी कार्यों में आर्थिक कठिनाई आने लगी तो इन्होंने एक आटा-रद्दी फण्ड स्थापित किया। इसके अन्तर्गत लोगो से अपील की गई कि प्रत्येक व्यक्ति अपने घर एक घड़े मे एक मुट्ठी आटा प्रतिदिन डाले तथा रद्दी अखबार एकत्र करे। बाद मे वह इसे दान करे। इससे उन्हे भारी सहयोग मिला। इस सहयोग से उन्होंने अछूतोद्धार व अन्य जन-हितकारी कार्य किये। अब अपना पूरा समय आर्यसमाज की सेवा में लगाने लगे।

कांग्रेस में-आप पायनियर व ट्रिब्यून के नियमित पाठक थे। इस कारण आपमे राष्ट्रीय-भावनाओ को भी बल मिला। अत. आप भी काग्रेस मार्ग पर चले। आपने प्रत्येक जिले मे काग्रेस-कमेटी स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की। जालन्धर व होश्यारपुर से आपको भारी सहयोग मिला। इस अवसर पर सर सैय्यद अहमद खा का विरोध भी आपके कदम रोक न सका।

गृहसुधार तथा स्त्रीशिक्षा-समाजसुधार हेतु आपने सर्वप्रथम अपना घर सुधारना आवश्यक समझा। अत· आपने सर्वप्रथम अपनी पत्नी को शिक्षित किया। उसका घूघट हटवाया, सैर करते समय उसे साथ लेजाने लगे। इस प्रकार स्त्री को समान अधिकार दिये। अपनी बेटियो को स्कूल भेजा। एक ईसाई स्कूल से लौटी बेटी गारही थी-

एक बार ईसा ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल,
ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।

यह सुनकर मुन्शीराम जी के हृदय में चोट लगी तथा तत्काल लाला देवराज जी के सहयोग के एक अपील की जिससे प्राप्त धन से विक्रमी १९४७ को जालन्धर में कन्या विद्यालय की स्थापना की। यही कन्या महाविद्यालय आज स्त्रीशिक्षा की अग्रणी सस्था है। इसी से आपका जन्म नाम बृहस्पति (गुरु) भी सार्थक हुआ।

सद्धर्म प्रचारक पत्र-अब आपने एक समाचार-पत्र की आवश्यकता अनुभव की। अत: साथियों के सहयोग से 'सद्धर्म-प्रचारक' पत्र आरम्भ किया। उर्दू मे प्रकाशित इस पत्र की भाषा हिन्दी सरीखी बनादी। आरम्भ में मुसलमानों ने इस भाषा का विरोध किया किन्तु धीरे-धीरे अन्यो ने भी इसी भाषा का अनुसरण किया। इसमें सस्कृत के शब्द अधिक होते थे। इसे आर्यसमाजी उर्दू कहा जाने लगा। बाद मे यह पत्रिका हिन्दी में प्रकाशित होने लगी। इससे आर्यसमाज के प्रचार को भारी गति मिली। इसी से ही राहू-केतु का खण्डन करनेवाले पहलवान चिरंजीलाल सरीखे सहयोगी मिले।

आचार-विचार के दृढ़-मुन्शीराम जी मन्दिरों के अनुचित प्रयोग के सदाविरोधी रहे। उन्होंने कभी सर्वप्रियता, नाम व पद की इच्छा नहीं की। सभी ऐषणाओं से सदैव दूर रहे। यदि कार्यक्षेत्र में कभी संस्था के पदाधिकारी आए तो उनकी भी प्रवाह नहीं की। इसी कारण उनकी धर्मवीर पं० लेखराम तथा पं० गुरुदत्त विद्यार्थी से अत्यधिक घनिष्ठता थी। स्वाध्याय व धर्मप्रचार के मानो आप स्रोत थे। इसी कारण आप आर्यप्रतिनिधिसभा के प्रधान बने तो पूरे पजाब में शास्त्रार्थों की खूब धूम रही। आप नवयुवकों के लिए उत्साह व साहस का स्रोत थे। जब आपकी पत्नी का देहान्त हुआ तो आपने चारों बच्चो की देख-रेख का जिम्मा अपने भाई के कन्धों पर डाल आप स्वय वेदप्रचार व अन्य सार्वजनिक कार्यों में पूरा समय देने लगे।

वैदिक सभ्यता से विशेष अनुराग-मुन्शीराम जी ने मांसभक्षण का खूब विरोध किया। सत्य सिद्धान्तों पर चलते समय कभी कष्टों की या विरोध की चिन्ता नहीं की। डी.ए.वी. आन्दोलन मे कमियो को देख, विशेषरूप से संस्कृत शिक्षण की कमी के कारण प० लेखराम, स्वामी पूर्णानन्द आदि के सहयोग से वैदिक शिक्षणालय खोलने का निर्णय लिया, जिस हेतु चार वर्ष तक निरन्तर कार्य किया। आप इसमे आश्रम-पद्धति, गुरु-शिष्य पारिवारिक संयमी जीवन चाहते थे। अथक मेहनत से गुरुकुल हेतु ३० सहस्र का स्थापना कोश स्थापित किया तथा नगर से काफी दूर जंगली क्षेत्र में हरद्वार के पास कांगड़ी स्थान पर गुरुकुल की स्थापना की, जो आज विश्वविद्यालय बन गया है। इस निमित्त सरकार से कोई सहायता न ली।

कठिन परीक्षाएं-गुरुकुल मे ब्रह्मचारियों को घुडसवारी व धनुर्विद्या की शिक्षा देने के प्रावधान से सरकार की क्रूर दृष्टि व सन्देह बढ़ गया। लाला लाजपतराय के निर्वासन पर तथा सरकारी नौकरी के समय भी निर्भीक व्यवहार के कारण आप पर सरकारी सन्देह बढ़ता ही गया, तो भी आपने कभी चिन्ता नहीं की।

पटियाला में आर्यों पर विद्रोह के आरोप में सभी आर्यसमाजियों को गिरफ्तार किया जाने लगा। आपने आगे आकर उनके लिए मुकद्दमा लड़ा तथा उन्हें सम्मानपूर्वक बरी करवाया।

इस प्रकार पन्द्रह वर्ष पर्यन्त निरन्तर समाजसेवा के पश्चात् आपने सन्यास-दीक्षा ली। अब आपको स्वामी श्रद्धानन्द नाम से जाना जाने लगा। आपने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति दान की तथा घर छोड़ देहली को केन्द्र बनाया। जो देहली देश की राजधानी होते हुए भी पिछड़ी हुई थी उसे समय की धारा के साथ जोड़ दिया।

कांग्रेस में सक्रिय सेवा-आपने गांधीजी के अफ्रीका सत्याग्रह के अवसर पर वहां आर्थिक सहयोग हेतु धन भेजा। पंजाब में मार्शल लॉ लगा, चाहे रोलेट एक्ट, विरोधी आन्दोलन या दिल्ली में कोई कांग्रेस का आन्दोलन हुआ, सर्वत्र आप नेता स्वरूप सबसे आगे रहे। देहली मे जब अंग्रेजी सेना ने निहत्थे लोगों पर गोली चलाने की तैयारी की तो आपने संगीनों के आगे अपना सीना तानकर कहा कि 'निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती में संगीन घोंप दो।'

हिन्दू-मुस्लिम एकता-आपने जामामस्जिद के पवित्र मंच से वेदमन्त्रों द्वारा एकता का सन्देश दिया। मुसलमान आपके दीवाने व रक्षक बन गए। असहयोग आन्दोलन में खूब कार्य किया। जलियांवाला काण्ड के बाद जब ४०००० लोग जेलों में थे, मार्शल लॉ लगा हुआ था, जब कांग्रेस का महाधिवेशन अमृतसर में करने का निर्णय हुआ, ऐसे भयानक अवसर पर आपने पंजाब में आकर लोगो का साहस बढाया। स्वय स्वागत समिति के प्रधान बने। यह पहला अवसर था जब किसी संन्यासी ने यह पद सम्भाला।

अछूतोद्धार-अछूतोद्धार के आप मानो मसीहा थे। काग्रेस के नागपुर अधिवेशन मे एतदर्थ एक प्रस्ताव भी पेश किया। यह कार्य छोड़ने हेतु ईसाइयों द्वारा दिया प्रलोभन भी आड़े न आया।

शुद्धि-हिन्दू संगठन-आगरा क्षेत्रीय ५ लाख मलकाना राजपूत मुसलमान बने। यह आगरा, भरतपुर, मथुरा क्षेत्र के थे। आर्यसमाज ने इन्हें शुद्ध करने का निर्णय लिया। शुद्धि के सभी अधिकार स्वामीजी को दिए गए। आपके प्रयास से हिन्दू पण्डितो में भी सहानुभूति की भावना पैदा हुई। अन्त में सब पर गगाजल छिड़ककर उन्हें शुद्ध किया गया। आपने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की। मालाबार मे हिन्दुओं पर होरहे अत्याचारों के विरुद्ध भी आप अड़ गये। मोपला विद्रोह में भी आपने महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

आपने हिन्दू संगठन का नाद बजाया, हिन्दू रक्षार्थ महावीर दलों का आन्दोलन व अनेक सभाओं की स्थापना की। इन सभी कारणों से मुसलमान आपकी जान के प्यासे ही बन गये। आप सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा के प्रधान बने। पन्द्रह वर्ष तक गुरुकुल कांगड़ी के अधिष्ठाता रहे। मथुरा में महर्षि स्वामी दयानन्द शताब्दी, हिन्दू शुद्धिसभा तथा दलितोद्धार सभा के आप कार्यशील प्रधान रहे।

अत्यधिक परिश्रम के परिणामस्वरूप जीवन के अन्तिम सात वर्ष अस्वस्थ रहते हुए भी लम्बी-लम्बी प्रचार यात्राएं करने से पुराने रोग भी पुन: जाग उठे। ऐसी ही अवस्था में जब आप (श्रद्धानन्द बाजार, देहली में) रोग शय्या पर थे तो २३ दिसम्बर १९२६ पौष संवत् १९८३ विक्रमी को एक धर्मान्ध मुसलमान ने गोली मार आपको शहीद कर दिया।

इस प्रकार आजीवन आर्यसमाज के लिए तन, मन, धन बलिदान करनेवाले स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना बलिदान देकर आर्यों में एक नया साहस व प्रेरणा दी, वेदप्रचार का मार्गप्रशस्त किया।

आर्य-संसार

गुरुकुल का योगिक क्रियाओं में प्रतिभाशाली ब्रह्मचारी

हमारे विद्यालय आदर्श गुरुकुल व०मा० विद्यालय सिंहपुरा-सुन्दरपुर (रोहतक) में नवीं कक्षा में पढ़नेवाले ब्रह्मचारी वीरभान ने डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पलवल (फरीदाबाद) में आयोजित तीन दिवसीय (६, ७ और ८ दिसम्बर २००२) अखिल भारतीय योग प्रतियोगिता में १५ से १८ वर्ष तक के लड़कों के वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। इस ब्रह्मचारी के इस विध निर्माण में हमारे विद्यालय के शारीरिक शिक्षा के प्रशिक्षक श्री गजनूप जी व रोहतक जिले के वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री मेहरसिंह जी देशवाल का विशेष योगदान रहा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विद्यार्थी अपनी लगन, अभ्यास व सदाचार के बल पर इस क्षेत्र में अपने गुरुजनों व विद्यालय का नाम ऊंचा करेगा।

- भयसिंह कुण्डू, प्रिंसिपल आदर्श गुरुकुल व०मा०वि० सिंहपुरा-सुन्दरपुर (रोहतक)

शहीदों को नमन

कल्याणी कुण्डू, एम ए, बी एड, प्राचार्या, कन्या गुरुकुल बचगाव गामडी, कुरुक्षेत्र

इतिहास नाम ले उन शहीदों का, जिनको तूने भुला दिया।
कांटों की सेज पर सोकर जिन्होंने, फूलों की सेज हमें सुला दिया।।
भारत के हित हेतु ही, सच्ची उनकी वह कुर्बानी थी।
देश व जाति की प्रतिष्ठा लौटाने की, बात उन्होंने ठानी थी।।
राणाप्रताप ने देश रक्षा हेतु, कितना भारी कष्ट उठाया था।
उसे छोड़कर तूने आततायी, अकबर को क्यों महान् बताया।।
चरित्र बल से मिटाया शिवाजी ने, देश में भय छाया।
उसको भी हाय भुलाकर तूने, आक्रान्ताओ का बखान गाया।।
स्मरण कर तूं देवदयानन्द को, आजादी का ले सन्देश आया।
पर संघर्ष की गाथा के पन्नो पर, सर्वोच्च स्थान कहा पाया।।
लाजपतराय की यशोगाथा में, तूने क्यो लालच बरता।
सीने पूर सह प्रहार जिन्होंने, हिला दी थी अग्रेजी सत्ता!।
निर्भय चन्द्रशेखर आजाद का, वर्णन करने से क्यो घबराया।
कांप उठते थे अंग्रेज हमेशा, पडने से भी जिनका साया।।
ऊधम, भगतसिंह, राणी झांसी, तुमने सहज क्यों भुला दिये।
सुभाष सावरकर ने भी अग्रेजी सत्ता को, खून के आंसू रुला दिये।।
क्यों भुलाया आर्य बिस्मिल को, कञ्चन सम थी जिसकी काया।
फासी पर चढने से पहले जिसने, की सन्ध्या और यज्ञ रचाया।।
गुरुदत्त और श्रद्धानन्द के भी, तूं भूल गया बलिदान को।
निर्भय होकर यशोगाथा यदि तूं, इन विलक्षण वीरो की गाता।
तो देश यह आर्यावर्त भी अपना, प्राचीन सम्मान पा जाता।।

अशिक्षित होते हुए भी शिक्षा का दीप जला गए महाशय बुधराम आर्य

गांव बापौली (पानीपत) हल्के के आर्यसमाज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता महाशय श्री बुधराम जी आर्य का विगत दिनों हृदयगति रुक जाने से निधन होगया वे लगभग ७२ वर्ष के थे। श्री आर्य अपने परिवार में और अपने गांव में आर्यसमाज की एक छाप सी छोड़ गए। महाशय जी लगभग ३० साल से आर्यसमाज से जुड़े हुए थे। ईश्वर में उनका दृढ़विश्वास था। वे स्वभाव से निडर व ओजस्वीवक्ता भी थे। उन्होने अपने पाचों सुपुत्रो को गुरुकुलों व विश्वविद्यालयों में अध्ययन करवाया। उनके दो लड़के इस समय शिक्षक के पद पर विराजमान हैं बाकी तीनो लड़कों को एम ए तक पहुंचाया। एक लड़का विधि का विद्यार्थी है। महाशय जी अपने सारे परिवार को शिक्षित करने का सारा दायित्व आर्यसमाज की देन मानते हैं। महाशय जी बाह्य आडम्बारों व दिखावे में विश्वास नहीं रखते थे। श्री आर्य ने कई सालों तक पं० चिरंजीलाल की भजनमण्डली से अपने गांव मे तथा आसपास के चार-पांच गांवों में वेदप्रचार करवाया। अभी कुछ सप्ताह पहले श्री आर्य ने पं० रामकुमार आर्य की भजनमण्डली द्वारा वेदप्रचार करवाया। आर्यसमाज के उत्सवों का बेसब्री से इन्तजार रहता था। उनका विचार था कि विद्वानों के सत्संग में ही सुख मिलता है। वे हमेशा कहते थे कि जिस काम में संशय और लज्जा हो उस काम को नहीं करना चाहिए। गुरुकुल की शिक्षा पद्धति को वे सर्वोपरि मानते थे उन्होंने अपने गांव के कई लड़के गुरुकुल डिकाडला तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में भिजवाए। उन्हें बच्चों से बहुत लगाव था। वे सभी को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते थे। गांववालों को उनकी अचानक मृत्यु पर आज भी विश्वास नहीं होता। श्री आर्य का स्वभाव ठण्डा था वे कभी क्रोध नहीं करते थे उन्हें पशुओं में गायों से बहुत लगाव था आज भी उनके घर में पांच गाय हैं। शिक्षा को अमूल्य धन मानते थे ईश्वर उनकी आत्मा को शक्ति प्रदान करे।

-हरपाल आर्य, प्रधान, ग्राम सुधार युवा समिति, गोयलाकलां, पानीपत

श्रद्धानन्द बन जाओ

भारत मां के वीर सपूतो श्रद्धानन्द बन जाओ।
अंग्रेजी का नाश करो और वेद की ज्योति जलाओ॥
मानवता की रक्षा हेतु 'ओ३म्' ध्वजा फहराओ।
अनाचार को नष्ट करो और सदाचार फैलाओ॥
पाश्चात्य सभ्यता को भारत से कोसों दूर भगाओ।
भारत के हर नर-नारी को सच्चा आर्य बनाओ॥
श्रद्धानन्द की शिक्षाओ के शिक्षा केन्द्र खुलाओ।
पापी ढोंगी फैशनपरस्तों को बहुत दूर हटाओ॥
गगा की दूषित धारा को पुन· पवित्र कराओ।
दुष्ट दुरंगी चालबाज से भारत मुक्त कराओ॥
ऋषि-मुनियों की पावन धरती के रक्षक बन जाओ।
श्रद्धानन्द की तरह चाहे तुम फांसी पर चढ़ जाओ॥
श्रद्धानन्द और दयानन्द को 'बंसल' गुरु बनाओ।
दयानन्द सा विषधर बनो या श्रद्धानन्द बन जाओ॥

रामनिवास बंसल, चरखी दादरी (भिवानी)

भव्य श्रद्धांजलि समारोह

दिनांक-२२ दिसम्बर, २००२ रविवार, समय-दिन के २ बजे से ५:३० बजे तक, स्थान-म० हंसराज पब्लिक स्कूल, आर्यनगर, रोहतक में किया जारहा है। इस अवसर पर आप सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : आर्य केन्द्रीय सभा, रोहतक

आर्यसमाज बड़ाबाजार पानीपत का १०६वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बडाबाजार पानीपत के वार्षिकोत्सव पर आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के मन्त्री आचार्य श्री यशपाल को ओ३म् का ध्वज भेट करते हुए समाज के प्रचारमन्त्री श्री ऋषिलाल हरिजन

आर्यममाज बडाबाजार पानीपत के १०६वे वार्षिकोत्सव के प्रथम दिवस एक विशाल शोभायात्रा तथा जुलूस उत्सव स्थल आर्य कन्या विद्यालय, वीर भवन से आर्यसमाज हृदयरत्न श्री ऋषिलाल के नेतृत्व मे प्रारम्भ होकर नगर के विभिन्न प्रमुख बाजारो बडाबाजार, हलवाई हट्टा, मलारगज, इन्सार चौक, हनुमान मन्दिर, अमरभवन चौक, सेठी चौक, कलन्दर चौक मे होती हुई वीर भवन मे समाप्त हुई। इस शोभायात्रा में हजारों की सख्या में विद्यार्थियो, युवाओ तथा विभिन्न आर्यसमाजो के कार्यकर्त्ता तथा सभासद शामिल हुए जो राष्ट्रीय एकता, सर्वधर्म समभाव तथा शान्ति तथा सद्भाव के समर्थन मे नारे लगा रहे थे। यात्रा का आकर्षण यह भी था कि आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्र दलितोद्धार मे आर्यसमाज की भूमिका तथा समाज को उनके सबसे बड़े सरक्षक होने के नारे लगा रहे थे 'दलित की रक्षा कौन करेगा-हम करेगे' ऐसे उनके उद्घोष अन्य सभी जुलूसो से अलग थे। शोभायात्रा में दो घोडों पर आर्यसमाज के उपप्रधान श्री देवेन्द्रसिह व प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री विजयसिह, ओ३म् के ध्वज लिये बैठे थे जबकि एक रथ मे आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के मंत्री आचार्य श्री यशपाल, आर्यसमाज बडा बाजार के प्रधान श्री देवराज डावर तथा खैल बाजार के प्रधान श्री रामकिशन विराजमान थे। इन सभी का प्रमुख स्थानों पर सभी धर्मो तथा वर्गो की जनता ने फूलमालाओ से स्वागत किया।

इस अवमर पर आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता श्री लाभसिह, आर्यप्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री बलराज ऐलावादी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री श्री चमनलाल आर्य, आर्य शिक्षण संस्थाओ के प्रधान श्री महेन्द्रसिह, प्रबन्धक श्री राममोहन राय, आर्य कन्या स्कूल के प्रधान श्री जोगेन्द्र राठी, प्रबन्धक श्री सुखबीरसिह आर्य बालभारती के उपप्रबन्धक श्री प्रकाशसिह, आर्यसमाज हुडा के श्री पूर्णचन्द पथिक, आर्य महिला समाज की श्रीमती धर्मदेवी भाटिया, श्रीमती कमलेश लीखा प्रमुख थे।

आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत के १०६वे वार्षिकोत्सव पर एक विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् तथा पूर्व सासद स्वामी इन्द्रवेश ने कहा कि आर्यसमाज महिला, गौ व दलित का सबसे बडा रक्षक है। स्वय महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जन्मना ब्राह्मण होते हुए भी जन्म आधारित वर्णव्यवस्था का विरोध किया तथा मनुष्य की जाति को गुण, कर्म व स्वभाव से माना। उन्होने अतीत के इतिहास की चर्चा करते हुए कहा कि दलितोद्धार व शुद्धि का काम करके उन्हे सम्मान का स्थान दिलवाया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिला, गौ व दलित की रक्षा करने के लिये ही आर्यसमाज की स्थापना की थी तथा आज वह उनका सजग प्रहरी है। उन्होने दुलीना काण्ड में मारे गए मासूम हरिजनों की हत्याओ को एक घिनौना कृत्य बताते हुए कहा कि यह घटनायें विघटनकारी तत्त्वों के षड्यन्त्रो का परिणाम है जिसे हरयाणा के प्रत्येक नर-नारी को एकजुट होकर बेनकाब करना चाहिये। उन्होंने ऐसे लोगो को आडे हाथों लेते हुए कहा कि जो लोग पाखण्ड, मूर्तिपूजा तथा आडम्बर का साथ लेकर हिन्दू-एकता की बात करते हैं वास्तव मे वे लोग इस नाम पर राजनीति करते हैं। धर्म का अर्थ प्रकाश है और यदि इस नाम पर अन्धकार, वैमनस्य तथा विभाजन का प्रचार किया जारहा है तो वह कृत्य सर्वथा अधार्मिक है। उन्होने लोगों का आह्वान किया कि वे आतकवाद, साम्प्रदायिकता तथा जातिवाद के विरुद्ध एकजुट होकर आर्यसमाज का सहयोग करे।

आर्यसमाज ने अपने वार्षिकोत्सव मे वैदिकविद्वानो के अभिनन्दन की शृखला मे स्वामी इन्द्रवेश का नागरिक अभिनन्दन भी किया। उनके अभिनन्दन मे पत्र पढते हुए आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत के मन्त्री श्री प्रदीपकुमार ने स्वामी इन्द्रवेश को एक श्रेष्ठ संन्यासी, आर्यसमाज के अग्रणी नेता के रूप मे सम्बोधित किया। जबकि आर्यसमाज के प्रधान श्री देवराज डावर, उपप्रधान श्री देवेन्द्रसिह प्रचारमन्त्री श्री ऋषिलाल, सहायक सचिव श्री रमेश सैनी, कोषाध्यक्ष श्री राजकुमार प्रजापत ने उन्हे शाल, श्रीफल, वस्त्रो एव नकद राशि से सम्मानित किया। जबकि आर्यसमाज खैल बाजार के प्रधान श्री रामकिशन, आर्यसमाज हुडा के उपप्रधान श्री राजकुमार त्यागी, महिला कांग्रेस की जिलाध्यक्षा श्रीमती शशि सैनी, आर्य शिक्षण संस्थाओ के प्रधान श्री महेन्द्रसिह, प्रबन्धक श्री राममोहन राय, आर्य कन्या स्कूल के प्रधान श्री जोगेन्द्र राठी व प्रधानाचार्या श्रीमती कमलेश अग्घी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री चमनलाल आर्य, माता सीतारानी सेवा संस्था की महासचिव श्रीमती कृष्णा कान्ता, वयोवृद्ध आर्यनेता श्री राम रघुवीर वर्मा सहित नगर के विभिन्न ३७ सगठनो द्वारा फूलमालाओं द्वारा स्वागत किया गया।

आर्यसमाज बडाबाजार पानीपत के वार्षिकोत्सव पर स्वामी इन्द्रवेश के अभिनन्दन समारोह का दृश्य

अभिनन्दन समारोह के सम्मानित अतिथि दैनिक भास्कर के महाप्रबन्धक श्री जगदीश शर्मा ने कहा कि यद्यपि सन्यासी मान-अपमान से परे होता है परन्तु फिर भी यह सभी के लिये प्रेरणा है कि यदि मनुष्य अच्छे कार्य करे तो समाज उसको स्वीकार करता है। स्वामी इन्द्रवेश के गुणो की चर्चा करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि उनमे वे सभी प्रवृतिया व गुण हैं जो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थ 'सस्कारविधि' मे प्रतिपादित किये हैं।

समारोह की अध्यक्षता आर्य शिक्षण सस्थाओ के प्रधान श्री महेन्द्रसिह ने की। इस अवसर पर आर्य भजनोपदेशक प० चिरजीलाल, श्रीमती बीनू पथिक व श्री पूर्णचन्द पथिक, श्रीमती सुमित्रा दूहन, श्री राजपाल दूहन व उनके पुत्र श्री आशीष, आर्य कन्या विद्यालय की श्रीमती नरेश कुमारी मेहदीरत्ता, आर्य प्राइमरी स्कूल, घेर अराईयां के मुख्याध्यापक श्री मनीराम कसल को भी उनकी प्रशसनीय सेवाओ के लिए प्रशस्ति-पत्र दिये गये।

हरयाणा की समस्त आर्यसमाजों को आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक से सम्बन्धित समस्त आर्यसमाजो को सूचित किया जाता है कि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २ फरवरी २००३ रविवार को सभा कार्यालय रोहतक में होना निश्चित हुआ है। अत. सभी आर्यसमाजों के अधिकारियो से निवेदन है कि वे अपने आर्यसमाज का वर्ष २००१-२००२ का प्राप्तव्य वेदप्रचार दशाश तथा सर्वहितकारी शुल्क दिनाक २० जनवरी २००३ तक सभा कार्यालय मे भेजने का कष्ट करे। इस शुल्क के साथ सभी आर्यसमाजे वर्ष २००१-२००२ मे अपने आर्य सभासदों की सूची भी भेजे जिसमें आर्य सभासद का नाम, पिता का नाम, आयु, व्यवसाय तथा मासिक या वार्षिक चन्दे का विवरण भी लिखें। यदि आपने पूर्व राशि भेज रखी है तो प्राप्तकर्ता का नाम, राशि तथा रसीद क्रमांक दिनांक सहित सभा को लिखकर भेज देवें। प्रचार की आवश्यकता हो तो पत्र लिखकर सूचित करे जिससे उपदेशक/भजनमण्डली को आपके आर्यसमाज मे प्रचारार्थ भेजा जावे। सभी आर्य सभासदो से वार्षिक शुल्क लेकर नियमानुसार आगामी वर्ष २००३ के लिए चुनाव करके सभा को लिखित रूप में भेज देवें। -यशपाल आचार्य, सभामंत्री

बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष . ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।